

माता क्षीरभवानी पूजाविधिः



श्रीभूतेश्वर श्रीमहाराज्ञी

जम्मू-कश्मीर राज्यसचिवालय हिन्दूधार्मिकसंस्था

श्रीनगर • जम्मू



माता क्षीरभवानी पूजाविधिः

सम्पादक

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक

जम्मू-कश्मीर राज्यसचिवालय

हिन्दूधार्मिकसंस्था

श्रीनगर • जम्मू

प्रथम संस्करण : 1000

ज्येष्ठ अष्टमी 15 जून, 2005

मूल्य : पचास रुपये

प्रकाशक :
जम्मू-कश्मीर राज्यसचिवालय
हिन्दूधार्मिकसंस्था
श्रीनगर • जम्मू

मुद्रक :
मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स
१ अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - ११० ००२

ॐ नमः परमसंविद् चिद्वपुषे

विषयसूची

माता-क्षीरभवानी



श्रीनीलमतपुराण, भृङ्गेशसंहिता, राजतरंगिणी आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुसार कश्मीर-मण्डल छः मन्वन्तरों तक चारों ओर पानी से भरा हुआ एक बड़ा झील था जो सतीसर के नाम से प्रसिद्ध था। कुछ इनी-गिनी चोटियां ही दिखती थीं। कई पहाड़ी चोटियों के पत्थरों में लोहों के कड़े इस समय भी मिलते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पानी ही पानी होने से किसी समय नौकायें इन लोहे के कड़ों के साथ बांधी जाती थी। आदिपुराण में भी नौबन्धन तीर्थ का उल्लेख मिलता है। अस्तु, सातवें मन्वंतर के आरम्भ में कश्यप ऋषि ने इस देश को बसाने की इच्छा से कठोर तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न किया। ब्रह्मा ने इन्द्र को आज्ञा दी कि वह वराहमूल (वर्तमान बारामुल्ला) के निकट पहाड़ को वज्र से तोड़कर पानी निकास का प्रबन्ध करे। इसी आज्ञा के परिणामस्वरूप यह देश सर्वथा जलहीन हुआ और इसका नाम कश्यपमरु पड़ गया। इसी नाम से आज के, कशीर या कश्मीर बन गये।

महर्षि कश्यप ने कठोर तपस्या फिर की और भगवान शंकर को प्रसन्न करके कश्मीर-मण्डल में वितस्ता नदी को प्रवाहित कराया। इसी से यह देश लहलहाने लगा। पर यहां के मूल निवासी पिशाच लोग उस समय की जनता को बहुत कष्ट देते थे। फिर एक तरीका अपनाया गया जिसके आधार पर गर्मियों में ये लोग काशगार की ओर दुश्मनों से लड़ने के लिए जाते थे और सर्दियों में भारत के दूसरे प्रान्तों में भाग जाते थे। धीरे-धीरे पिशाचों का पतन होने लगा और यहां के लोगों ने शीत पर भी काबू पा लिया और भयरहित वे स्थायीरूप से

रहने लगे। इसकी महानता से प्रभावित होकर भारत के दूसरे स्थानों से भी बहुत से लोग आने लगे और यहां के तीर्थस्थानों की महिमा का गुणगान करने लगे। इन पर्वतमालाओं में जहाँ-जहाँ कुतूहलपूर्ण झलक मिली वहाँ उन्हें ईश्वरत्व का साक्षात् आभास हुआ। अतः हमारे देश में जितनी भी नदियाँ तथा ऊँची पर्वतमालायें हैं वे स्वयं तीर्थों की कोटि में गिनी जाती हैं। अतएव भारत के उत्तर में विद्यमान भारतदेश का मुकुट कश्मीर देश अपनी विशेषताओं के कारण अनन्यतम है।

कश्मीर देश वास्तव में तीर्थों का घर है। सारे भारतवर्ष में जनसाधारण के आनन्द और कौतूहल को बढ़ाने वाले यहां के तीर्थ-स्थान अनुपम हैं।

इतिहासकार कल्हण भी यह लिखने को विवश हुए हैं कि कश्मीर का भूभाग तिलभर भी तीर्थों से रहित नहीं है-

"तिलांशोऽपि न यत्रास्ति पृथिव्याः तीर्थैर्बहिष्कृतः"
(रा.त. कल्हण 1.38)

कश्मीर के भिन्न-भिन्न इतिहासों में बहुत सारे ऐसे तीर्थों का उल्लेख मिलता है, जो या तो विस्मृति के गर्त में पड़े हुए हैं या जिनका ढांचा ही आजकल बदल गया है। फिर भी कई ऐसे महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान हैं, जिनका गौरव बराबर आज भी पूर्ववत् ही हैं। इन तीर्थस्थानों में हरमुकटगंगा, कौंसरनाग, अमरनाथ, विष्णुपाद, मार्तण्ड, क्षीरभवानी, शारदाकुण्ड श्रीचक्रेश्वर, श्रीज्वालादेवी तीर्थस्थान आदि उल्लेखनीय हैं।

राजतरंगिणीकार प्राज्यभट्ट ने अपनी राजतरंगिणी में लिखा है कि–

"नीलादीनि शतानि सप्त फणिनां तीर्थौकसां कोटयो विख्याताश्चसुतीर्थ उत्तमतराः कश्मीर भूमण्डले"

अर्थात् नील आदि 700 नाग, शक्तिपीठ तथा करोड़ों ही तीर्थ कश्मीर में विद्यमान हैं। इतिहासकार प्राज्यभट्ट के इस कथन से यह प्रमाणित होता है कि कश्मीरमण्डल नील वासुकि आदि नागों का तीर्थस्थान होने के साथ शाक्तपीठों के लिए भी बहुमान्य है तथा यहां अन्य करोड़ों तीर्थस्थान हैं।

इन शाक्तपीठों में श्रीचक्रेश्वर (हारी पर्वत) श्री शारदाकुण्ड (शारदा-पाकिस्तान) तथा श्री क्षीरभवानी का तीर्थस्थान मूर्धन्य हैं। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि श्री भृङ्गेश ऋषि कश्मीर देश के महान् इतिहासकार तथा भूगोलवेत्ता महापुरुष हुए हैं। इन्होंने "श्री भृङ्गेश संहिता" नामक पुस्तक की रचना की है जिससे हमारे देश की प्राचीन ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दिशा में चार चांद लगे हैं। कश्मीर की प्राचीन भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दशा का अध्ययन करने में "श्री भृङ्गेश संहिता" जैसी पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान है। श्री भृङ्गेश ऋषि के काल निर्णय के विषय में निश्चित रूप में कुछ कहा नहीं जाता पर कई इतिहासकारों का विचार है कि ये कश्यप ऋषि के पश्चात् पैदा हुए हैं। इस सम्बन्ध में श्री भृङ्गेश संहिता में यह वृत्तांत आया है कि जब कश्यप ऋषि ने इस भू मण्डल को पानी से निकाल कर रहने के योग्य बनाया तो इसे तक्षक नाग तथा नील नाग के हवाले करके स्वयं अन्तर्ध्यान हुए। फिर कुछ समय के पश्चात् श्री भृङ्गेश ऋषि हिमालय की चोटियों पर घूमते-घूमते कश्मीरमण्डल पर आ उतरे और यहां के सुन्दर तीर्थों से प्रभावित होकर दूसरे लोगों को भी इनके माहात्म्य तथा रहस्यों से अवगत कराया।

वास्तव में देखा जाए तो कश्मीर के तीर्थों का भौगोलिक परिचय देने वाले श्री भृङ्गेश ऋषि ही एक अनुभवी लेखक हैं। इस प्रकार श्री भृङ्गेश संहिता में कश्मीर के प्रसिद्ध तीर्थस्थानों के माहात्म्य का सुविस्तृत वर्णन मिलता है। दुर्भाग्यवश इस पुस्तक की रही सही प्रतियां

भी आतंकवाद के प्रकोप की ज्वाला में (जो कुछेक पुराने कश्मीरी पंडित घरानों में विद्यमान थीं) स्वाहा हुई। रही सही प्रति जो स्वर्गीय श्री महाराजा रणवीर सिंह जी के अथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप उपलब्ध है, उसका विवरण डा० स्टाइन (Dr. Stein) ने "Catalogue of Sanskrit MSs" में दिया है।

कश्मीर मण्डल के इन सुरम्य अनेक मुख्य तीर्थस्थानों में "क्षीरभवानी" नामक तीर्थस्थान एक शक्तिशाली शाक्तपीठ है। क्षीरभवानी महाराज्ञी भगवती का दूसरा नाम है। श्रीनगर के पश्चिम में 25 कि०मी० की दूरी पर यह तीर्थ "स्थूल मूल" गांव में स्थित है। इसी का तूलमूल्य के नाम से भी भृङ्गेश संहिता में उल्लेख मिलता है। इस नाम की सार्थकता के विषय में कहा जाता है कि–

लघुभूतानि अन्यानि तीर्थानि यान्ति तूलवत्।
मूल्येन तुल्यतां यत्र तूलमूलेति गीयते।।

अर्थात् अन्य सारे तीर्थों का महत्त्व जिस तीर्थ के सामने तूल-रूई के समान नगण्य है, अतएव इस शाक्तपीठ को तूल-मूल के नाम से पुकारा जाता है।

महावैष्णव तीर्थ होने से क्षीर आदि मिष्ठान्न पदार्थों तथा दुग्धनिर्मित द्रव्यों का नैवेद्य अर्पण करने से इस देवी का नाम "क्षीरभवानी" भी है। प्रायः हम 'श्री महाराज्ञा' भगवती के नाम से इस देवी को पुकारते हैं, पर ऐसा शास्त्र सम्मत नहीं है। वास्तव में संस्कृत व्याकरण के आधार पर महाराज्ञा न कहकर सदा 'महाराज्ञी' कहना चाहिए क्योंकि महान्+राजन् से महाराजा बनता है जो कि पुरुष वाचक है (Masculine) है। देवी शक्ति वाचक शब्द है अतः सदा 'महाराज्ञी' ही कहना चाहिए। महाराज्ञा नहीं। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है कि-

'राजत इति महती च इयं' इति महाराज्ञी अर्थात् यह अत्यन्त

प्रकाशशीला है और सब देवियों में सर्वोत्तम है। प्रकाशशीला कहने का तात्पर्य यह है कि इस महाशक्ति के स्मरणमात्र से ही जो प्रकाश चारों ओर से छा जाता है उससे हमारे तीनों मल अर्थात् आनवमल, मायीयमल और कार्ममल नष्ट होते हैं और हम जीवन्मुक्त हो जाते हैं। जीवन्मुक्ति का वरदान देने से ही यह 'महा' अर्थात् सर्वोत्तमा है। डा० श्री मोनियर विलयम ने राज्ञी शब्द का अर्थ अपने कोष में "विश्व आत्मा-आधार" दिया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि महाराज्ञी विश्वमय और विश्वोतीर्ण है तथा विश्वमय होने से समस्त चराचर जगत् की पालना करती है। पुराणों में दश महाविद्याओं का उल्लेख मिलता है जिनमें 'धूमावती' एक महाविद्या है। तन्त्रों में उमा देवी को 'धूमावती' के नाम से भी पुकारा गया है। स्मरण रहे कि ऋग्वेद में इसे सुतारा भी कहते हैं। जिसका अर्थ है कि यह सुख पूर्वक तारने योग्य है। अभाव और संकट को दूर कर सुख प्रदान करने वाली है। इससे यह बात दृढ़ होती है कि महाराज्ञी धूमावती और सुतारा अभिन्न हैं। शिवरात्रिपूजा में कालरात्रि,ताररात्रि, शिवरात्रि तथा राज्ञिरात्रि का उल्लेख मिलता है। राज्ञिरात्रि से तात्पर्य है कि श्री महाराज्ञी हमारे शरीर तथा इन्द्रियों पर अधिकार अथवा राज्य प्राप्त कर के ही उदित होती हैं। यह प्रकाश विमर्शमय है। प्रकाश से यह स्वात्मावभास कराती है तथा विमर्श-शक्ति से उसका अनुभव कराती है। भृंगेश संहिता में लिखा है कि घोर तपस्या के पश्चात् महर्षि पुलस्त्य के बेटे रावण ने अपनी नगरी श्रीलंका में महादेव से वर पाकर शक्ति की उपासना में तन-मन-धन लगाया और भक्तिपूर्वक मां की साधना की। महामाया के सन्तुष्ट होने पर रावण ने उनसे प्रार्थना की कि वह अपना निवास श्रीलंका में ही रखे ताकि रावण उसकी स्तुति सदा करता रहेगा। देवी ने रावण की यह प्रार्थना स्वीकार की। लंकाद्वीप के उत्तरीय दिशा के मध्यभाग में असंख्य नागों से भरे हुए एक जलकुण्ड में वह मां श्यामा तामसी

रूप में विराजमान हुई। राक्षसी रीति के अनुसार रावण सभी राक्षसों के साथ तामसिक पदार्थों द्वारा उसकी पूजा करने लगे। रावण को गर्व हुआ और उसने महामाया की प्रतिष्ठा गुप्त पहाड़ों की कंदराओं में की। परन्तु जगदम्बा श्यामा, राक्षसों के बुरे व्यवहार से क्रोधित होकर अप्रसन्न हुई और उसने वह स्थान छोड़ने के लिए विचार किया। फिर त्रेतायुग में जब श्रीराम ने लंका पर धावा बोला तो रावण का भावी नाश जानकर भगवती श्यामा ने बलशाली हनुमान को आज्ञा दी कि वह उसे कंधों पर बिठाकर सतीसर (कश्मीर) की ओर ले चले क्योंकि श्रीलंका में उनके रहने पर वर के अनुसार रावण का लंका समेत नाश नहीं होगा और रामराज्य स्थापित नहीं होगा। माता के आदेशानुसार श्री हनुमान जी ने सारे नागों के समेत जगदम्बा श्यामा को कंधों पर विराजमान करके सतीसर की ओर प्रस्थान किया। वहां उनका सर्वप्रथम विष्णुपाद तीर्थंकर पर पदार्पण हुआ, जहां सुन्दर वनस्थली में कुछ समय के लिए श्यामा देवी ने विश्राम किया। वहां से मध्यग्राम (मंजगाम) फिर खनभरणी (देवसर) फिर लुकटीपुर (अनन्तनाग) राईथन (राज्ञीस्तन) वादीपुर, चण्डीपुर, शारदातीर्थ आदि प्रधान स्थानों का भ्रमण करके, अन्त में पवित्र शादीपुर (संगम) के पास प्रयागराज तीर्थ के इर्द-गिर्द सुन्दर वृक्षों तथा वल्लरियों से आवृत दलदल वाली रूई जैसी नर्म भूमि वाले स्थान को, जिसका नाम तुलमूल था, अपना आधार बनाया। इस स्थान के चारों ओर पानी है जिसमें मानसबल तथा आंचार झील भी सीमित हैं। एवं अपने भक्तों के कल्याण के लिए श्यामा भगवती अपनी तामसिक प्रवृत्ति को छोड़कर सात्विक रूप में आविर्भूत हुई तथा अमृतमय जलकुण्ड में अनन्त नागों के समेत प्रतिष्ठित हुई। ऐसा वर्णन है कि वास्तव में श्री रामराज्य की स्थापना के लिए ही देवी ने श्री महाराज्ञी का रूप धारण किया।

यह उल्लेखनीय तीर्थ कई वर्षों तक गुप्त रहा। बाद में कश्मीर के

एक सिद्ध योगी की प्रेरणा से इसका आविर्भाव हुआ। कहते हैं कि बोहरी कदल श्रीनगरवासी एक परमदेवीभक्त उपासक, साधक और जितेन्द्रियी श्री पं० कृष्णजू पर जगदम्बा अत्यन्त प्रसन्न हुई और एक दिन भगवती ने उन्हें सपने में दर्शन देकर आदेश दिया कि वह गांधरबल (श्रीनगर से 20 कि०मी० दूर) से नैया में जाकर उस जलमग्न तीर्थस्थान की खोज करें जहां माता पदासीन है। उनका मार्गदर्शन उनके आगे आगे तैरता हुआ एक नाग करेगा और तैरते-तैरते जहां वह नाग रुककर अपना फण ऊपर उठाकर रुकेगा वहीं श्री महाराज्ञी का पवित्र तीर्थस्थान होगा। वहीं पर उनकी पूजा करनी चाहिए। पंडितकृष्ण जू ने जो कश्मीर के महान् सन्त ऋषिपीर के समकालीन होने से मुगलों के शासनकाल में विद्यमान थे, दूसरे दिन यह स्वप्रघटना अन्य साथियों को सुनाई। सारे साथी अत्यन्त प्रसन्न हुए और इस तीर्थस्थान की खोज करने उसी समय निकले। स्वप्न में यथानिर्दिष्ट, गान्धरबल के पास नौका में बैठकर ज्योंही ये चलने लगे तो जल पर तैरते हुए एक नाग के दर्शन हुए। सभी भक्तगण इस नागराज का अनुसरण करते करते तुलमुला गांव के बीच में एक विशेष स्थान पर पहुंचे तो वहां उसी समय नागराज अपना फण ऊपर उठाये खड़े हो गये। श्री कृष्णजू ने भी उस जलमग्न दलदल भूमि में उसी समय एक लम्बा डण्डा गाड़ लिया। नागराज ने यहाँ जल के ऊपर एक षट्कोण आकार की परिक्रमा की। जहां-जहां से नागराज चक्कर काटने लगा वहीं पर लम्बे डण्डों को गाड़कर वर्तमान अमृतकुण्ड की सीमा निर्धारित हुई। फिर नागराज पुनः उसी स्थान पर जाकर खड़ा हो गया जहां सबसे पहले खड़ा हुआ था और वहीं पर अदृश्य हो गया। फिर लगातार भक्तजन नौकाओं में मिट्टी, पत्थर आदि लादकर सीमित स्थान पर उसे घेरने लगे। एवं मिट्टी तथा कंकर डालने से कुण्ड के किनारों पर एक छोटा द्वीप जैसा बनाया, जिसके मध्य में छः किनारों

वाला वर्तमान अमृतकुण्ड निर्धारित हुआ। इस अमृत कुण्ड की यह महान विशेषता है कि इसके जल का रंग समय-समय पर बदलता रहता है। प्रायः सात प्रकार के वर्णों में एक वर्ण स्थिर रहता है। साथ ही यहां चक्रों द्वारा भी स्वरूप जान पड़ता है जो चक्र स्वयं वृत्ताकार बनते हैं। जब देश में कभी उपद्रव विनाश या उत्पात या विपत्ति की संभावना होती है तो अमृतकुण्ड के जल का रंग काला पड़ जाता है, जो एक प्रकार की चेतावनी देता है। इस कुण्ड की एक और विशेषता यह है कि प्रायः इस कुण्ड के जल के ऊपर स्वयंभूश्री यंत्र कभी-कभी बन जाता है, जिसका दर्शन महान कल्याणकारी माना जाता है। वास्तव में इस अमृत कुण्ड का आकार प्रणव अर्थात् ओंकार रूप है। मेरे सद्गुरु ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मण जी महाराज ने एक दिन इसी शाक्तपीठ पर विराजमान होके इसी प्रणवरूप की अपने अनुभव के आधार पर विस्तृत व्याख्या की जिसे सुनकर सारे भक्तजन अचम्भे में पड़ गये क्योंकि वह अनुभवात्मक वर्णन क्षीरभवानी का साक्षात्कार सम्बन्धी था। सिद्ध सन्त भगवान् गोपीनाथ जी ने भी इसी ओंकार रूप को स्वात्मसाक्षात्कार का प्रधान अंग माना था। योगिनी लल्लेश्वरी ने भी इसी ॐकार रूप को हजारों मन्त्रों से महत्तम माना है। यह चारों ओर संगमरमर के पत्थरों से शोभायमान है। महाराजा प्रताप सिंह जी के शासनकाल में इस महाराज्ञी अमृतकुण्ड पर वर्तमान सुन्दर मन्दिर का निर्माण हुआ था। तब से सभी प्रकार के भक्तजन अत्यन्त श्रद्धा से सोना चांदी और बहुमूल्य पदार्थ देवी को चढ़ाते हैं।

अष्टमी, नवमी, एकादशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालु अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार पूजा आदि का विधान करके कृतकृत्य हो जाते हैं। प्रायः हर शुक्ल अष्टमी और पूर्णिमा को यह दिव्य स्थान अलौकिक आभा से शोभायमान होता है। देवी का अमृत कुण्ड नाना प्रकार के फूलों से सुगन्धित होता है। "आज्यं सुराणामाहारं" इस

वेदवाक्य के आधार पर इस दिव्य स्थान पर रत्नदीप या हलवा आदि के लिए असली घी का ही केवल प्रयोग करना चाहिए। डालडा आदि सब्जी तेलों का कदापि प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आप विपत्तिग्रस्त हो जायेंगे और लेने के देने ही पड़ेगा। सभी भक्तजनों से यह सविनय निवेदन है कि जिस दिन इस दिव्य स्थान पर आना हो तो प्रायः निराहार रहकर ही पूजा करनी चाहिए। होटल का अपवित्र खाना खाकर पूजा करने वाला नरकगामी होता है। स्मरण रहे यह दिव्यस्थान परम वैष्णव स्थान है। अतः यहां शुद्ध कपड़े लगाकर तथा अच्छी तरह नहा धोकर ही आना चाहिए। मांस मछली अण्डा, प्याज, लसन आदि तथा अन्य मादक द्रव्यों का आहार यहां सर्वथा निषिद्ध है।

इस दिव्य स्थान की इतनी महत्ता है कि इस पवित्र तीर्थस्थान पर परमहंस रामकृष्ण के मूर्धन्य शिष्य स्वामी विवेकानन्द पूर्ण अध्यात्म- लाभ पाकर कृतार्थ हए। यहां यह लिखना अनावश्यक नहीं होगा कि स्वामी विवेकानन्द पूर्णता प्राप्त करने के लिए कश्मीर के उस समय के शाम्भवसिद्ध योगी "श्री राम" से मिलने के लिए जब आये तो उन्होंने ही स्वामी विवेकानन्द को "क्षीरभवानी" नामक असाधारण शाक्तपीठ पर स्वात्मसमावेश प्राप्ति के लिए प्रेरित किया था। यही फतेहकदल श्रीनगर निवासी "स्वामी राम" मेरे सद्‌गुरु ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मण जू रैना के परमगुरु थे। इनके अतिरिक्त कश्मीर और भारत के अन्य महापुरुषों ने इसी शाक्तपीठ पर विराजमान होके अपनी साधना में चार चांद लगाये। ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मणजू श्री आनन्द जी, श्री लभुशाह, श्री स्वामी विद्याधर जी, श्री बालक काक 'काव', भगवान् गोपीनाथ जी आदि, कुछेक प्रसिद्ध कश्मीर देश के महापुरुष हैं जिनका 'क्षीरभवानी' नामक शाक्तपीठ के साथ अनन्य सम्बन्ध है। इनके अतिरिक्त कई देशीय और विदेशीय विद्वानों ने भी

'क्षीरभवानी' तीर्थ स्थान पर ही मां के सान्निध्य में अपने बुद्धि कौशल की धाक अध्यात्म और विद्वत्ता के क्षेत्र में जमाई क्योंकि माता महाराज्ञी वाक्देवी सरस्वती की भी प्रतिमूर्ति है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि जो भक्तजन जहां कहीं से इस दिव्यस्थान पर, श्रद्धा के साथ आता है वह माता क्षीरभवानी की अमोघ कृपा से कभी वंचित नहीं हुआ। वैसे तो "जाकी रही भावना जैसी सो वैसा फल पावे" वाली उक्ति यहां पर पूरी तरह से चरितार्थ होती है। विदेशी विद्वान डब्ल्यू. आर. लॉरन्स ने सन् 1885 में तथा आर्ल स्टैन ने सन् 1900 में माता क्षीरभवानी के महात्म्य के विषय में विस्तार से लिखा है। यहां यह लिखना अप्रासंगिक नहीं होगा कि आज से साठ वर्ष पूर्व सारे यात्री लोग व भक्तजन नौकाओं में श्रीनगर के विभिन्न स्थानों से जाकर इस तीर्थ स्थान पर कई दिन विश्राम करके आध्यात्मिक लाभ से लाभान्वित होते थे। सायंकालिक पूजा में असंख्य दीप जगमगाते थे जिनकी आभा अमृतकुण्ड में प्रतिबिम्बित होकर माता के ज्योतिस्वरूपा होने का साक्षात्कार कराती थी। अमृतकुण्ड में स्थित पावन मन्दिर में जो कृष्ण वर्ण की दो शिलामूर्तियां हैं वे इस अमृतकुण्ड से ही निकली हुई हैं। इनमें एक शिला मूर्ति श्री भूतेश्वर महाराज (जो माता के स्वामी माने जाते हैं) की है और दूसरी शिलामूर्ति माता महाराज्ञी की है। स्मरण रहे कि श्री भूतेश्वर- अधीश्वर (महाराज) है और महाराज्ञी अधीश्वरी (महारानी) है। प्रकाश विमर्शमय इस युगल मूर्ति की महिमा अपार है। यही कश्मीर शैवदर्शन के शिव शक्ति संघट्ट की सूचिका है। इसी का गौरवगान जगद्गुरु आदिशंकराचार्य ने "आनन्द लहरी" के प्रथम श्लोक में इस प्रकार किया है-

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।
नचेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि आदि।।

श्री तंत्रालोक में भी अभिनव गुप्त ने लिखा है कि-

नशिवः शक्तिः रहितो न शक्तिः शिववर्जिता

तयोर्हि यामलं रूपं०

इस प्रकार परमशिव की महत्ता से अभिभूत बने आदि-शंकराचार्य को भी अन्ततः नतमस्तक होके पराशक्ति की महिमा को स्वीकारना पड़ा और इस परा शक्ति के बिना परमशिव के अस्तित्व को उन्होंने ललकारा।

माता क्षीरभवानी का अधीश्वर श्रीभूतेश्वर है। इसकी पूजा का वर्णन तथा अमृतकुण्ड के नागों की स्थिति का वर्णन मुझे मुगल शासनकाल की एक हस्त लिखित प्रति में, जो मेरे पूर्वजों की धरोहर है, मिला था। वहां श्री भूतेश्वर की पूजा गायत्री ध्यान आदि का वर्णन इस प्रकार है-

पूजा से पहले यह संकल्प हाथ में पानी लेकर करें-

अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रं छन्दः,

श्री भूतेश्वरो देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः,

उों कीलकं, महाराज्ञी अधीश्वरस्य श्री भूतेश्वरस्य प्रीत्यर्थं श्री भूतेश्वर देवता मन्त्र जपे / होमे / पाठे / विनियोगः।

तत्पुरुषाय विद्महे

शूलहस्ताय धीमहि

तन्नो भूतेश्वरः प्रचोदयात्।। 3।।

श्री भूतेश्वर का ध्यान इस प्रकार है-

कुन्देन्दु हासं शशिखण्डचूडं

कपाल पाशांकुशशूलहस्तम्।

त्रिलोचनं भूतिसितं हसन्तं

भूतेश्वरं चेतसि चिन्तयामि।।

श्री भूतेश्वर मंत्र

उों ह्रीं हुं भूतेश्वराय नमः / या भूतेश्वराय स्वाहा

माता क्षीरभवानी का यह शाक्तपीठ अनन्यतम शाक्तपीठों में से एक है। यह सारे विश्व में एकमात्र शाक्तपीठ है, जहां अनन्त नागराज और उसके सहवर्ती अष्टकुलनाग देवों का भीषण रूपवर्णन मिलता है। रुद्रयामलतन्त्र में इन नागों का चित्रण इस प्रकार दिया है:—

अमृतकुण्ड के द्वार पर गणपति, भीमराज और कुमार हैं।

अमृत कुण्ड के मध्य (बीच) में पूर्व की ओर अष्ट नाग देवताओं का वास है जिनके नाम इस प्रकार हैं वासुकिनाग, नीलनागराज, तक्षकनागराज, कार्कोटकनागराज, पद्मनागराज, महापद्मनागराज, शंखपाल नागराज और कुलिक नागराज।

अमृत कुण्ड के मध्य में श्री अनन्त नागराज हैं। वर्णन इस प्रकार है-

सहस्त्ररश्मि रत्नभूषिताय, सहस्त्रभोगाय, द्विसहस्त्रलोचनाय, द्विसहस्त्रजिह्वाय, सहस्त्रनागकोटि परिवृताय, पीताम्बराय मुसलपाणे अनन्तनागराजाय नमः। तत्पृष्ठे कमला सनाय नमः जो हजारों रत्नों की किरणों से भूषित है, (सहस्त्र रश्मिरत्न भूषिताय) सहस्त्रभोगाय (जो हजार फणों को धारण करने वाले हैं) द्विसहस्त्रलोचनाय (जो दो हजार नेत्रों को धारणकरने वाले हैं) द्विसहस्त्रजिह्वाय (जो दो हजार जीबों वाला है) सहस्त्रनाग कोटि परिवृताय (एक हजार करोड़ नागों से घेरा हुआ है) पीताम्बराय (पीले रंग के वस्त्रों से जो शोभायमान है) मुसल पाणये (जो हाथ में मुसल (a mace, club or pestle) को धारण करने वाले हैं,) अनन्त नागराजाय नमः। इस ऐसे अनिर्वचनीय स्वरूपवाले श्री अनन्तनाग राज के (तत्पृष्ठे कमलासनाय नमः) पीठ पर सहस्त्रदल कमल (हजार पत्तों वाले कमल) का आसन है जिसपर माता महाराज्ञी या माता क्षीरभवानी

विराजमान है।

ध्यानमंत्र न्यास और पूजाक्रम इस प्रकार है-

ध्यानं-

या द्वादशार्क परिमण्डित मूर्तिरिका
सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतांच।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम्।।

अर्थात्-

तेज पुंज युत बारह सूर्य सी
उज्ज्वल मूर्ति से आभावान्
अनन्त नाग कोटि निषण्णा
सिंहासन पर विराजमान
इन्द्रिय वृत्ति शक्ति अगोचरा
महा जो राज्ञी प्रतापवान्
उस तेजोमय परम स्वरूपा
ऋतम्भरा को सदा प्रणाम

गायत्री–

सूर्यकर्णायै विदमहे
भानुरत्नायै धीमहि
तन्नो राज्ञी प्रचोदयात्।। 3।।

गायत्री त्रिपदा होती है। इसमें क्षीरभवानी के तीन नाम हैं- सूर्यकर्णा, भानुरत्ना, महाराज्ञी इन तीन नामों के साथ तीन क्रियायें (actions) हैं-

विद्महे, धीमहि और प्रचोदयात्।

प्रायः प्रत्येक देवी देवताओं की गायत्री में उपरोक्त तीन क्रियायें होती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मैं साधक 'सूर्यकर्णा' को जानता

हूँ अपने अन्तस्तल में मैं भानुरत्ना का सावधान होके ध्यान करता हूँ वह महाराज्ञी हमें अच्छे कर्मों में प्रेरित करे।

इसके बाद शरीर न्यास करें-

ऊँ ह्रीं हृदयाय नमः

ऊँ श्रीं शिरसे स्वाहा

ऊँ रां शिखायै वौषट्

ऊँ राज्ञी कवचाय हुम्

ऊँ भगवत्यै नेत्रेभ्यो वषट्

ऊँ नमः अस्त्राय फट्

अंगन्यास

ओं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः

ओं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ओं रां मध्यमाभ्यां नमः

ओं राज्ञी अनामिकाभ्यां नमः

ओं भगवत्यै कनिष्ठकाभ्यां नमः

ओं नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

महाराज्ञी मंत्र से प्राणायाम

ओं ह्रीं श्रीं रां राज्ञी भगवत्यै नमः

पूरक (एक बार) सांस लेना

कुम्भक (दो बार) सांस रोकना

रेचक (तीन बार) सांस छोड़ना

महाराज्ञी मंत्र जप

ओं ह्रीं श्रीं रां राज्ञी भगवत्यै नमः।।

यह महाराज्ञी मन्त्र ऊपर निर्दिष्ट ध्यान "या द्वादशार्क" के आधार पर बारह अक्षरों वाला है। यह पंचदशाक्षरी मन्त्र से भिन्न है।

पंचदशाक्षरी मंत्र इस प्रकार है-

गायत्री-

ॐ राज्यप्रदायै विद्महे
पंचदशाक्षर्यै धीमहि
तन्नो महाराज्ञी प्रचोदयात्।। 3।।

ध्यानं

उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम्।। 4।।

जप मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः
भगवत्यै राज्ञ्यै ह्रीं स्वाहा।।

स्मरण रहे श्री महाराज्ञी के भैरव का नाम है "रामशूर" अतः पूजा के अन्त में-

ओं ह्रीं श्रीं रामशूराय क्षेत्रेश्वराय वौषट् इति क्षेत्रेशम्।

यह कहकर इस क्षेत्रपाल को बलि देनी चाहिए। बलि में क्षीर, मिठाई, बर्फी, गोला या केला का प्रयोग करना चाहिए।

जय गुरुदेव।

माताक्षीरभवानी के शक्तिपात से सदा अपने स्वरूप में रहिये और इसकी अपूर्व दया के परमपात्र बनिये। यह महावात्सल्यमयी माता वैष्णवी माता है। अतः मन, वाणी और कर्म से परमवैष्णव रहिये। मांस खाना घोर पाप है। अतः इस तीर्थस्थान पर पधारकर मांस खाने से आज से ही परहेज करें और मांस खाने वाले की खुलकर निन्दा करें।

माताक्षीरभवानी आप पर प्रसन्न हों।

पुस्तक के विषय में



मेरे लिए आज यह महान् हर्ष का विषय है कि मैं जगदम्बा श्री महाराज्ञी का पंचांग सहृदय साधकों, देवी प्रेमियों तथा भक्तजनों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस पुस्तक का नाम श्री महाराज्ञी पंचांग है। यहां पंचांग से तात्पर्य है देवी पूजा के प्रधान पांच अंग।

तन्त्रों के आधार पर तान्त्रिक पूजा के ये पांच अंग निम्नलिखित हैं-

(1) महाराज्ञी पटलम् (2) महाराज्ञी पूजापद्धतिः
(3) महाराज्ञी कवचम् (4) महाराज्ञी सहस्रनामावली अथवा होम के लिए सहस्रनामस्वाहाकार। (5) महाराज्ञी-स्तोत्र।

तांत्रिक पूजाविधि के ये पांच अंग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। प्रथम अंग में मन्त्राकार का विधान होता है। दूसरे अंग में इष्ट देव / देवी की पूजापद्धतिः होती है। यह पूजापद्धतिः अतीव सूक्ष्म है। अतः इस तान्त्रिक पूजा-पद्धतिः का प्रयोग वही साधक कर सकता है जिसका स्वरूपसमावेश हुआ हो। कहने का तात्पर्य यह है कि कुण्डलिनी जागरण का अभ्यस्त साधक ही इस पूजा पद्वति को अपनाकर कदम-कदम पर पूजापद्धति के निर्देशानुसार अपने हृदय-चक्रों का जागरण करके स्वरूप समाविष्ट होता है। कहीं अर्थ का अनर्थ न हो इस बात को ध्यान में रखकर मैंने प्राचीन प्रचलित देवीपूजा को ही इस पंचांग का दूसरा अंग बनाया। मुझे आशा है कि आप महानुभाव मेरे इस दुस्साहस की ओर ध्यान न देकर मेरा सहयोग देंगे और इस प्राचीन प्रचलित देवीपूजा का सावधान मन से तथा श्रद्धा भाव से क्रियान्वयन कर यथेष्ट फल प्राप्ति से सुशोभित होंगे। इस पूजा पद्धति

की यह विशेषता है कि आप सदा थोड़े से समय में अपने घर में, देवी मन्दिर में या देवी तीर्थ स्थल में यह पूजा करके कृत-कृत्य हो सकते हैं क्योंकि इस सामान्य वैदिक पूजा में किसी विशेष विधि विधान की आवश्यकता नहीं है। नवरात्र के दिनों में भी आप इसी पूजा से प्रतिदिन महामाया को सन्तुष्ट कर सकते हैं और फिर नवार्ण मन्त्र का समयानुसार दसमाला जप कर सकते हैं।

इस पूजा पुस्तक का तीसरा अंग महाराज्ञी कवच है। कवच का शाब्दिक अर्थ है (an armour- considered as preservative) मंत्र द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों की रक्षा का आवरण। इसी अभिप्राय से कवच का पूजा पंचांग में विन्यास होता है ताकि आरंभ किया गया पूजा अनुष्ठान निर्विघ्न समाप्त हो और साधक के शरीर का अंग प्रत्यंग स्वस्थ और सुरक्षित हो। स्मरण रहे पूजापंचांग के अनुष्ठान में घोरतरी शक्तियां सदा विघ्न डालने में कटिबद्ध रहती हैं। अतः कवच का पाठ इन विघ्नों से सुरक्षित रखने में सहायक होता है।

पूजा पुस्तक का चौथा अंग सहस्रनाम है। इसमें महाराज्ञी के एक हजार नाम दिये गये हैं जिनका पाठ साधारण रूप से आप कर सकते हैं अथवा एक एक श्लोक के बाद एक एक फूल अमृत कुण्ड में डाल सकते हैं। इसके पश्चात् यज्ञानुष्ठान में जिस रीति से इस सहस्र-नाम के अलग-अलग नामों को लेकर आहुति डालने का विधान है उस रीति से उन उन नामों को अलग अलग लिखा गया है। आशा है कि आप सारे साधकों को इससे महान् लाभ होगा। यदि आप 'पुष्पार्चन होम' करने के इच्छुक हों तो एक-एक सम्पूर्ण पुष्प को एक-एक नाम के पश्चात् 'नमः' शब्द जोड़कर अमृत कुण्ड में डाला करें। जैसे "महाराज्ञै नमः या "पंचदशाक्षर्यै नमः" ऐसा कहकर फूलों से अर्चना करें।

पूजा पंचांग का अन्तिम भाग है "स्तोत्र पाठ"। इसमें महाराज्ञी का जो तन्त्रोक्त स्तोत्र है उसका विधान है। यह स्तोत्र पढ़ते-पढ़ते भी आप देवी को पुष्प वर्षा से सुशोभित करें।

इस प्रकार इस पंचांग पूजा विधि का यथोक्तरूप में आचरण करके आप इहलौकिक और पारलौकिक दोनों सुखों के भागी बन सकते हैं।

अन्त में मैं जम्मू-कश्मीर राज्य सचिवालय हिन्दूभक्तसंस्था का तथा इस संस्था के अध्यक्ष श्री आर. एल. भान साहिब का धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता हूँ क्योंकि इनकी अनन्य भक्ति, अदम्य उत्साह तथा अनवरत परिश्रम के परिणाम स्वरूप ही आज यह पुस्तक प्रकाश में आई। इस पुस्तक के प्रेरणास्रोत अपने सुपुत्र श्री अरुण कुमार कुकिलू को भी धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं क्योंकि पिछले दो वर्षों से मुझे वे समय-समय पर इस कार्य की पूर्ति के लिए याद दिलाते रहे और प्रकाशन प्रतीक्ष्य भक्त जनता की तीव्रभावनाओं से अवगत कराते रहे।

श्री आर.एल. भान साहिब के विषय में मैं इतना ही कहूँगा कि जिस लगन से ये अपनी संस्कृति और सभ्यता के उत्थान के लिए कार्यरत हैं वह अनिर्वचनीय है। बिरले ही ऐसे परोपकारी महापुरुष होते हैं जो अपने स्वार्थ की बलि देकर अपने धर्म की उन्नति के साथ साथ धार्मिक तीर्थस्थानों के रख रखाव और विकास को अपने जीवन का लक्ष्य समझकर रात दिन उसके क्रियान्वयन में दत्त चित्त रहते हैं। इनकी अध्यक्षता में क्षीरभवानी तीर्थस्थान का मानचित्र ही संपूर्ण रूप से बदल रहा है। राज्य कोष तथा केन्द्रीय कोष से चौदह करोड़ रुपयों की अनुदान राशि को इस तीर्थस्थान के आमूल परिवर्तन के लिए दिलवाकर इन्होंने न केवल कश्मीरी पंडितों का महान उपकार

किया अपितु समस्त हिन्दू श्रद्धालुओं को कृतकृत्य किया। माता महाराज्ञी के प्रसाद से इनका जीवन सफल हो और स्वात्मलाभ से सुगन्धित हो, यही हमारी हार्दिक अभिलाषा है। आतंकवाद के विगत १५ वर्षों में इस रमणीक दिव्यस्थान की जो दुर्दशा हुई, वह अकथनीय है। पर इस उपरोक्त संस्था ने इन वर्षों में अपने जीवन की रक्षा की चिन्ता किये बिना समय-समय पर जिस दिलेरी का साक्षात्कार कराया वह उल्लेखनीय है। इस तीर्थस्थान को सुरक्षित रखने का एकमात्र श्रेय इस संस्था के सदस्यों के साथ साथ सीमा सुरक्षा बल तथा केन्द्रीय सुरक्षा बल के अधिकारियों को भी है जिन्होंने स्वार्थान्ध बने हुए विघटनकारियों की प्रत्येक दुर्भावना का डटकर मुकाबला किया।

माता श्री महाराज्ञी सबों का कल्याण करें तथा कश्मीर देश को पुनः प्रफुल्लित करे।।

जय गुरुदेव।

ज्येष्ट शुक्ल अष्टमी *प्रो० मखनलाल कुकिल्*

बुधवार 15 जून, 2005

श्रीमहाराज्ञीपटलम्

श्रीशैलशिखरासीनं भगवन्तमुमापतिम्।
चन्द्रार्धमुकुटं देवं सूर्यसोमाग्निलोचनम्।।
गजचर्मपरीधानं विरूपाक्षं सुराधिपम्।
गणगन्धर्वयक्षेन्द्र-देवासुरनमस्कृतम्।।
विहसन्तं जपन्तं च पठन्तं च मुहुर्मुहुः।
नागाभरणभूषाढ्यं ब्रह्माच्युतनमस्कृतम्।।
उत्थाय प्रणता भूत्वा पर्यपृच्छत भैरवी।

श्रीदेव्युवाच

भगवंस्त्वं परो देवः सुरासुरनमस्कृतः।
गुणी वेदान्ततन्त्रज्ञो गुणातीतश्चिदीश्वरः।।
सततं किंजपासक्तस्तत्त्वं सर्वोत्तमं प्रभो।
अद्याप्यविदितं यन्मे तत्तत्त्वं वक्तुमर्हसि।।

श्रीभैरव उवाच

या देवी निष्कला श्यामा निराभासा निरञ्जना।
महाश्रीषोडशीविद्या सा राज्ञीति निगद्यते।।
सकला राज्यदा लोके विद्याराज्ञी महेश्वरी।
देवी पञ्चदशी सैव परब्रह्मकुटुम्बिनी।।
नृणां दारिद्र्यनाशाय प्रादुर्भूताद्य भारते।
यस्याः पञ्चदशीविद्यां गुह्यामविदितां पुरा।।
तां जपामि महाविद्यां तत्पञ्चाङ्गं स्मराम्यहम्।

श्रीदेव्युवाच

भगवन् करुणाम्भोधे शरणागतवत्सल।
या देवी लोकमातेति राज्ञी राज्यप्रदायिनी।।
दारिद्र्यहारिणी त्वद्य तत्पञ्चाङ्गं वदस्व मे।

तत्त्वतो वदतन्त्राढ्यं यद्यहं प्रेयसी तव।।

श्रीभैरव उवाच

शृणुष्वावहिता भूत्वा पटलं मन्त्रविग्रहम्।
राज्ञ्याः सर्वस्वभूतं मे रहस्यं देवदुर्लभम्।।
मन्त्रोद्वारं महादेवि राज्ञ्या मद्वदनोदितम्।
श्रुत्वा गोपय यत्नेन येन सिद्धिः प्रजायते।।
तारं माया मानलः कामशक्ती
मध्ये चाख्या भगवत्यै च राज्ञ्यै।
मायाबीजं ठद्वयं देवि राज्ञ्या
मन्त्रोद्वारो वर्णितो गोपनीयः।।
नास्यान्तरायो न क्लेशो न विपर्ययभीः शिवे।
सर्वसिद्धिप्रदो देवि मन्त्रोऽयं भाग्यवर्धनः।।
मन्त्रमुत्कीलयेदादौ ततः सञ्जीवयेन्मनुम्।
सिद्धं मन्त्रं जपेद् देवि ततः संपुटितं चरेत्।।
ततो मन्त्रोऽयमीशानि साक्षात् सिद्धिप्रदो भवेत्।
यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वाशापरिपूरकम्।।
सर्वसंपत्प्रदं चैव सर्वार्थसाधकं तथा।
सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वानन्दमयं तथा।।
सर्वसंमोहनं चक्रं पीठार्चायां प्रपूजयेत्।
बिन्दुस्त्र्यश्रं षडस्त्रं च वृत्ताष्टदलमण्डितम्।।
वृत्तत्रयं धरासद्म राज्ञीश्रीचक्रमीरितम्।
लयाङ्गमस्य देवेशि ! शृणु वेदागमोद्धृतम्।।
यस्य श्रवणमात्रेण पूजायुतफलं लभेत्।
गणेशो भीमराजश्च कुमारो जाङ्गलेश्वरः।।
इन्द्राद्या लोकपालाश्च पूजनीयाश्च भूगृहे।

वृत्तत्रयेऽभ्यर्चनीया गुरुपंक्तित्रयी शिवे।।
दिव्यसिद्धौघमर्त्यौघाः पूज्या गन्धाक्षतैः प्रिये।
वासुकिर्नीलनागश्च तक्षकः पद्मनागकः।।
पूर्वादिदिक्षु संपूज्या विदिक्षु शृणु पार्वति !।
कार्कोटकः शङ्खपालः कुलिकः शेष ईश्वरि।।
आग्नेयक्रमतः पूज्या ब्राह्म्याद्या मातरस्तथा।
भैरवास्त्वष्ट संपूज्या वामावर्तेन पार्वति !।।
ब्राह्मी च वैष्णवी चैव रुद्राणी चापराजिता।
कौमारी चैव चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधेशोन्मत्तभीषणाः।
कपालीशश्च संहारः पूजनीया यथाक्रमम्।।
श्रीदुर्गा शारिकादेवी वैखरी च शिवा शिवे।
कालिका त्रिपुरा चैव वामावृत्त्या षडश्रके।।
लक्ष्मीः सरस्वती बाला पूजनीयास्त्रिकोणके।
बिन्दौ राज्यप्रदा राज्ञी विद्या पञ्चदशाक्षरी।।
भूतेश्वरं शिवं देवि ! खड्ग पद्मं समर्चयेत्।
कलशं च सुधापात्रं पूजयेद्बटुकं तथा।।
योगिनीः क्षेत्रपालांश्च भूतांस्तत्र विनायकम्।
रामेश्वरं महेशानि लयाङ्गमिदमीरितम्।।
श्रीराज्ञीमूलमन्त्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा समीरितः।
गायत्री छन्द ईशानि राज्ञीदेवी च देवता।।
माया बीजं शरच्छक्तिः कामः कीलकमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तिता।।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि सात्त्विकं कामनावहम्।
सर्वसिद्धिप्रदं देवि मन्त्रकोटिफलप्रदम्।।

उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम्।।
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्।।
इत्येष पटलो राज्ञ्याः सर्वागमरहस्यवान्।
अन्यशिष्याय न देयो दुर्जनाय विशेषतः।।
गुरुभक्तिविहीनाय कुचैलाय दुरात्मने।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा निरयमाप्नुयात्।।
देयं शिष्याय शान्ताय गुरुभक्त्याहि पार्वति !।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च।।
इदं रहस्यं परमं तव भक्त्या मयोदितम्।
गुह्यं गोप्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्।।

इतिश्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीमहाराज्ञीपटलम्।।

अथ दूर्गा पूजा[1]

किसी पात्र में पानी लेकर निम्नाङ्कित संकल्पमंत्र पढ़कर छोड़ना। स्मरण रहे कि पात्र में कुशा का विष्टर रखना न भूलिये।

ॐ अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।।

न्यास[2] करना

मेरुपृष्ठ ऋषये नमः शिरसि

(सिर पर चारों अंगुलियों का अगला पर्व रखना)

सुतलं छन्दसे नमः मुखे

(मुख पर दोनों हाथ रखना)

कूर्मो देवतायै नमः हृदि

(हृदय पर दायें हाथ की हथेली रखना)

आसनशोधने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।

(सारे अंगों को स्पर्श करना)

---

१. सूर्योदय से पहले चार घड़ी (डेढ़ घण्टा) ब्राह्मी मुहूर्त होता है। उसमें उठकर नित्य कर्म आरंभ करे। इस समय सोना शास्त्रनिषिद्ध है।

आसन - देव कर्म में आसनशुद्धि परमावश्यक है। समभूमि पर आसन बिछावे। कुश, कम्बल (ऊनी) कृष्ण मृगचर्म, बाघ की खाल आदि में से कोई भी आसन होना चाहिए। स्मृतियों में कहा है-

वस्त्रासने वृथापूजा धरण्यां निर्धनो भवेत्। काष्ठासने व्याधिभयं पाषाणे हानिरेव च।।
कुशासने ज्ञानवृद्धि, कम्बले चोत्तमागतिः। कृष्णाजिने धनं पुत्राः, मोक्षः श्रीर्व्याघ्रचर्मणि।।

अर्थात् कपड़े पर बैठकर या उसे आसन बनाकर पूजा निष्फल होती है। खाली धरा पर निर्धन होता है। लकड़ी के आसन पर बीमारी, पत्थर पर हानि, कुशा के आसन पर ज्ञान वृद्धि, कम्बल पर उत्तमगति, मृगचर्म पर धन और सन्ततिः, व्याघ्र चर्म पर मोक्ष प्राप्ति होती है।

२. न्यास का तात्पर्य यह है-

न्यायोपार्जितवित्तानां अङ्गेषु विनिवेशनात्। सर्वरक्षा करात् देवि ! न्यास इत्यमिधीयते।।

विधिपूर्वक प्राप्त की हुई परासंपत्ति का अंगों में (limbs) संनिवेश करने से तथा सर्वरक्षा करने के परिणामस्वरूप न्यास को न्यास कहा जाता है।

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो[1] नमः, अर्घो[2] नमः, पुष्पं नमः।।

धरती पर गन्ध अक्षत और फूल[3] चढ़ाना।

(धरती को नमस्कार करना।)

पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस मंत्र से आसन को जल से अभिषिक्त करके दायें हाथ से उसका स्पर्श करना चाहिए। एवं आसन शुद्ध होता है। धरती पर गन्ध, अर्घ, फूल चढ़ाना।

हाथ जोड़कर पहले श्री गणेश का ध्यान करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्याये-त्सर्वविघ्नोपशन्तये।।

---

१. गन्ध- तन्त्रों में कहा गया है-

ग - गम्भीरापारदौर्भाग्य, न - क्लेशनाशन कारणात्। ध - धर्मज्ञानप्रदानात् च गन्ध इत्यभिघीयते।।

अगाध और अनन्त मुसीबतों को टालने से, दुःखों को नष्ट करने से और धर्म ज्ञान दायक होने से गन्ध को गन्ध कहा जाता है।

२. अक्षत - चावल के कण जो टूटे हुए न हों।

अ - अन्नदानात् कुलेशानि, क्ष - क्षपिताशेष कल्मषात्, त - तादात्म्य करणात् देवि!

अक्षताः परिकीर्तिताः।।

अन्न देने से, सारे पापों का समूल नाश करने से और पर तत्त्व के साथ मेल कराने से अक्षत को अक्षत कहा जाता है।

३. फूल-पुण्य संवर्द्धनात् चापि पापौघ परिहारतः।

पुष्कलार्थ प्रदानात् च पुष्पमित्यभिधीयते।।

पुण्य की वृद्धि करने से, पापों के ढ़ेर को मिटाने से और प्रभूत धन प्रदान करने का कारण होने से पुष्प को पुष्प कहा जाता है।

अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।

देवी का ध्यान करें।

महाबले ! महोत्साहे ! महाभयविनाशिनि !।
पाहि मां देवि ! दुष्प्रेक्ष्ये ! शत्रूणां भयवर्धिनि।।

अपने गुरुमहाराज का ध्यान करे-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
गुरवे नमः, परमगुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः,
परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्योनमः।।

"करन्यास"।।

दायें (right) हाथ की अनामिका (the ring finger) के मध्य पर्व (middle-space) पर कुशाकाण्ड रखके न्यास करना।

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्या नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। "षडङ्गन्यास"। ह्रां हृदयायनमः, ह्रीं शिरसे स्वाहाः, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुं, ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट्, ह्रः अस्त्राय फट्।।

अंगुलियों से कुशाकाण्ड छोड़ के अपने दोनों कन्धों (shoulder) के ऊपर से नीचे दिये मंत्र से तिल फेंकना[१]।

अपसर्पन्तु ते भूता ये दिवि भुवि संस्थिताः।
ये दिक्षु विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

---

१. स्मरण रहे कि तिल फेंकने से पूजा में विघ्न डालने वाली आसुरी शक्तियां दूर भागती हैं।

अब प्राणायाम[१] करना नीचे दिए मंत्र से-

ऊँ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सौः

भगवत्यै राज्यै ह्रीं स्वाहा।।

प्राणायाम विधि-

एक बार पूरक, दो बार कुम्भक, तीन बार रेचक।

विष्टरसहित तांबे के अर्घपात्र में (कश्मीरी में जिसे 'नअरत्र्य कचुल' कहते हैं) पानी रखकर अपने "मुख और पैरों को पानी नीचे दिये

---

१. प्राणायाम - केवल अंगुष्ठ से नाक के दाहिने छिद्र को दबाकर बायें छिद्र से धीरे धीरे उपरोक्त मंत्र को एक बार पढ़ें और सांस को खीचें। यह पूरक है। नाक के दोनों छिद्रों को (दाहिने छिद्र का) अंगुष्ट और बायें छिद्र को अनामिका (ring finger) और कनिष्ठिका (little finger) से बन्द करें और उपरोक्त मंत्र को धीरे-धीरे दो बार पढ़कर सांस को रोके। यह कुम्भक है। फिर नाक के दायें (right side) छिद्र से अंगूठा हटाकर रोके हुए सांस को तीन बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर दायें नाक के छिद्र से ही धीरे-धीरे छोड़े। इसे रेचक कहते हैं। स्मरण रहे कि बायें नाक के छिद्र पर रखी अनामिका और कनिष्ठिका को न उठायें। मध्यमा (middle finger) और तर्जनी (index finger) को सदा दूर रखें। कहा है-

अङ्गुष्ठेन पुरो धार्यं नासाया दक्षिणं पुनः। कनिष्ठानामिकाभ्यां तु वामं प्राणस्य संग्रहे।।
पोडयेत् दक्षिणां नाडीमङ्गुष्ठेन तथोत्तराम् कनिष्ठानामिकाभ्यां च मध्यमां तर्जनी त्यजेत्।

वैज्ञानिक दृष्टि से प्राणायाम का बड़ा महत्व है शरीर विज्ञान शास्त्र (Anatomy) के अनुसार फेफड़े में सात करोड़ कई लाख छोटे छोटे छिद्र माने जाते हैं उनके द्वारा समस्त शरीर में रक्त का प्रसार होता है। प्राणायाम करने से जो वायु रुक कर भीतर जाती है वह बड़े वेग से फेफड़े में प्रवेश करती है। इससे उन छिद्रों में विद्यमान मल आदि दूर हो जाता है और खून भी शुद्ध होकर संचारित होता है। शास्त्रों के अनुसार प्राणशक्ति के आयाम अर्थात् विस्तार को प्राणायाम कहते हैं। प्रणायाम के द्वारा क्रियाशक्ति नियन्त्रित की जाती है। जो नाड़ियां वायु संचार के अभाव में रोगों को बढ़ावा देते हैं वे ही प्राणायाम से अपना काम ठीक करने लगती है। मन प्राण और वीर्य स्थिर हो जाते हैं जिससे आध्यात्मिक; लौकिक और पारलौकिक लाभ सुनिश्चत है।

पूरक – Inhalation through the left nostril (इड़ा)। कुम्भक – Retaining the breath inside and drying up of the impurities of the body with वायुबीज। रेचक – Exhalation through the right nostril (पिंगला)

मन्त्र से छिड़कना"।।

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति।।

मा नः शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।।

नीचे दिये मंत्र से पवित्रक धारण[१] करना

---

१. पवित्रधारण - कुशका पवित्रक न मिलने पर काशका (एक प्रकार की छोटी घास) पवित्रक बना लेना चाहिए। यदि वह भी न मिल सके तो अन्य दर्भों से अर्थात् मूंज, दूब (दूर्वा) जौ, गेहूँ के पौधे, बगई (एक प्रकार की घास) या सोना चांदी तथा तांबे का पवित्रक बनाना चाहिए। धातुनिर्मित पवित्रक उत्तम माना जाता है और उसके अशुद्ध होने का भय भी नहीं रहता है। कातीय भाष्य में कहा है-

कुशाः काशाः शरा दूर्वा यव गोधूम बल्बजः।
सुवर्णं रजतं ताम्रं दश दर्भाः प्रकीर्तिताः।।

स्मरण रहे कि पवित्रक सदा दक्षिण अनामिका के प्रथम पर्व पर धारण करना चाहिए।

"आह्निक सूत्रावली" में निर्देश किया गया है।

स्नाने दाने जपे होमे स्वाध्याये पितृ कर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।।

अर्थात् स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, सन्ध्योपासन पितृकार्य तथा अभिवादन में दोनों हाथों में कुश धारण करना चाहिए। अर्थात् बायें हाथ में कुश और दायें हाथ में पवित्रक धारण करना चाहिए क्योंकि कात्यायन स्मृति में कहा है कि

वामः सोपग्रहः कार्यो दक्षिणः सपवित्रकः।

गन्धर्वतन्त्र में कहा है-

(क) दीपं देवस्य दक्षिणे पुरतो न तु वामतः।
वामतस्तु तथा धूपं अग्रे वा नतु दक्षिणे।।

अर्थात् देवता के दक्षिण भाग में या सामने रत्नदीप रखना चाहिए, वाम भाग में कदापि नहीं। इसी प्रकार धूप सदा वाम भाग में रखना चाहिए या सामने पर दक्षिण भाग में कदापि नहीं।।

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्र-धारमयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।।

"अपने आप को गन्धादिक लगाना"।।

स्वात्मने शक्तिस्वरूपाय समालभनं गन्धोनमः,

अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

.अपने दायें रखें रत्नदीप को गन्ध आदि इस मन्त्र से चढ़ाना - (रत्नदीप को सदा दायें या सामने रखना चाहिए। याद रखिये कि रत्नदीप असली घी का होना चाहिए) गन्ध लगाना।

स्वप्रकाशो महादीपकः, सर्वतस्ति-मिरापहः।

प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।।

"धूप को" हमेशा अपने बायें तरफ रखना चाहिए।

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।।

"सरूज को" गन्ध आदि देना (निर्माल्य पात्र में)

नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे।

नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

श्रीभास्कराय समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

विष्टर और अक्षत (चावल) समेत अर्घा पात्र से यह पढ़ते हुए पानी छोडना।

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च।

न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।

स्वात्मने शक्ति-स्वरूपाय दीप धूपसङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु दीपो नमः धूपो नमः।। ॐ तत्सब्रह्माऽद्यतावत्तिथा-वद्यामुकमासस्यामुकपक्षस्य तिथाव-मुकायामात्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवी-प्रीत्यर्थं अमुककामना-

सिद्ध्यर्थं भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै व्री-डाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्ड्यै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गा-भगवत्यै सहस्रनाम्यै दुर्गादेव्यै भवान्यै दीपोनमः धूपोनमः।। "अपसव्येन"।। (बायें ओर जनेऊ करके) **ॐ तत्सद्ब्रह्मा-द्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण पक्षस्य / शुक्लपक्षस्य महापर्वणि आषाढ़, श्रावण, फाल्गुन आदि प्रतिपति / द्वितीयस्यां आदि या द्वितीयस्यां परतः तृतीयस्यां आदि**

सोम, मंगल, बुध वासरान्वितायां पित्रे पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै, मातामहाय प्रमातामहाय, वृद्धप्रमातामहाय, मातामह्यै प्रमातामह्यै, वृद्धप्रमातामह्यै इत्यादि-भ्यः दीपः स्वधा धूपः स्वाधा

यह स्मरण रहे कि पहिले तिलयुक्त पानी[१] से अपने सारे पितृपक्ष / मातृपक्ष के पितरों को बायें जनेऊ करके दीप धूप तत्सत् ब्रह्म आदि पढ़कर गोत्र और नाम लेकर तथा सम्बन्ध को भी जतलाकर दीपः स्वधा धूपः स्वधा कहते हुए जल डालते रहे। यह जल निर्माल्य में डालना।

१. तिलयुक्त पानी–

मनुस्मृति में कहा है कि यज्ञ पांच हैं जो इस प्रकार हैं–

ब्रह्मयज्ञ (गृहस्थ के दैनिक पाप ब्रह्मयज्ञ से नष्ट होते हैं), पितृयज्ञ (पितृतर्पण को कहते हैं), देवयज्ञ (देवताओं के प्रीत्यर्थ हवन और पूजन को कहते हैं), भूत

फिर दायें जनेऊ करके तिल पानी में डालकर माता के जलकुण्ड के पास छोड़ना।

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।

नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।

तत्सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुकमासस्य कृष्ण / शुक्लपक्षस्य महापर्वणि अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायां

श्री गुरवे (यहाँ अपने गुरु का नाम गोत्र सहित लेकर) दीपः स्वधा धूपः स्वधा श्रीपरमगुरवे (अपने परमगुरु का नाम गोत्र सहित लेकर) दीपः स्वधा धूपः स्वधा श्री परमेष्ठिने गुरवे (अपने परमेष्ठि गुरु का नाम गोत्र सहित लेकर) दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

इसके पश्चात् दाहिना जनेऊ करके, तिल, अक्षत, गन्ध विष्टर

→

यज्ञ - (पशुओं पक्षियों आदि को बलि देने को कहते हैं) और मनुष्ययज्ञ मनुष्य या (अतिथि पूजा को कहते हैं) इस प्रकार ये पांच यज्ञ हैं।

पितृयज्ञ अर्थात् पितरों का नाम लेकर प्रातः पूजा करने के समय तर्पण करने को या पितर संबन्धी अन्य कर्मां को पितृयज्ञ कहते हैं अतः सदा इस यज्ञ के फल को पाने के लिए पितृतर्पण करना चाहिए। विष्णुधर्मसूत्र (अध्याय २०) में कहा है कि प्रेतत्व से छूटने के बाद जब पितर पितृलोक में जाते हैं तो बन्धुबान्धवों द्वारा नाम गोत्रोच्चारण पूर्वक दिया गया तर्पण (जलदान) या अन्न उन्हें अवश्य प्राप्त होता है, पितर चाहे देवयोनि में हो, चाहे नरकयोनि में हो चाहे मनुष्य योनि में हो चाहे पशुपक्षी योनि में हो, अपने बान्धवों द्वारा दिये गये तर्पण या अन्न को उसी योनि के भोजन के रूप में अवश्य प्राप्त करते हैं। जैसे पितर यदि देवयोनि में हो तो तर्पण या अन्न आदि उत्तम गन्ध के रूप में उन्हें प्राप्त होता है, मनुष्य योनि में हो तो वही तर्पण या अन्न आदि उत्तम व्यञ्जन पदार्थ या स्वादिष्ठ भोजन के रूप में या soft drinks के रूप में उन्हें प्राप्त होता है, यदि पशु पक्षी योनि में हो तो उनके अच्छे खाद्य पदार्थ के रूप में प्राप्त होता है, यदि नरक योनि में हो तो वहां भी उस समय यातनायें नहीं दी जाती हैं और आराम का क्षण प्राप्त होता है। इस प्रकार पितृयज्ञ करने से पितर तथा पितृयज्ञ करने वाला भी पुष्टि होता है।

और पानी अर्घपात्र में डालकर नीचे दिए तीन मन्त्रों से तीन फूल डालना।

१. संव्चः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुवः ।

२. संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः

३. संय्यावः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानिवः।

आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम ।।३।।

यह पानी जलकुण्ड या प्रतिमापर छोड़ना।। जीवादान मन्त्र पढ़कर-।

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव,

मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव,

बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्ददातु तेन जीव।।

फिर हाथ में दो दर्भकाण्ड या पुष्प रखके चामर सा देवी का न्यास करना-

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्या नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। "षडङ्गन्यास"। ह्रां हृदयायनमः, ह्रीं शिरसे स्वाहाः, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुँ, ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट्, ह्रः अस्त्राय फट्।।

अक्षत युक्त दो दर्भकाण्ड हाथ में रख कर पूजा करने की आज्ञा लेना, नीचे दिये गायत्री मन्त्र को तीन बार पढ़कर-

बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय धीमहि

तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

ॐ तत्सब्रह्म०। भगवत्याः आमायाः कामायाःचार्वङ्ग्याः टङ्कधारिण्याः तारायाः पार्वत्याः यक्षिण्याः श्रीशारिकाभगवत्याः श्रीशारदाभगवत्याः श्रीमहाराज्ञीभगवत्याः श्रीज्वालाभगवत्याः व्रीडाभगवत्याः वैखरीभगवत्याः वितस्ताभगवत्याः

गङ्गाभगवत्याः यमुनाभगवत्याः कालिकाभगवत्याः सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः महात्रिपुरसुन्दर्याः शैल-पुत्र्याः, ब्रह्मचारिण्याः, कूष्माण्ड्याः, चण्डघण्टायाः, स्कन्दमातुः, सिद्धिदायाः, महागौर्याः, कालरात्र्याः, कात्यायन्याः नवदुर्गाभगवत्याः सहस्रनाम्न्याः दुर्गादेव्याः भवान्याः आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं देवीपूजनमऽर्चामहं करिष्ये ऊँ कुरुष्व।।

तिल, पीली सरसों और जौ दाने तीनों मिलाकर अपने दोनों कन्धों के ऊपर से पीछे की ओर फेंकना, फिर दो दर्भकाण्ड या पुष्प हाथ में रखकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ने के बाद देवी के कुण्ड में डालना।

आगच्छ त्वममादेवि ! भक्ताऽशयनिवासिनि !
प्रीत्या दत्तमासनं ते स्वास्यतां मम प्रीतये।।
भगवत्याः अमायाः०

ऊपर जो सारा दिया है उसे पढ़कर यह कहना-

इदमासनं[१] नमः।।

दोदर्भ काण्ड अक्षत समेत हाथ में रखकर देवी की पूजा[२] की आज्ञा लेना।

---

१. आ - आत्मसिद्धि प्रदानात् च । स - सर्व रोग निवारणात्।
न - नवसिद्धि प्रदानात् च आसनं कथितं प्रिये।।

हे प्रिये! आत्मसिद्धि प्रदान करने से सारे रोगों से छुटकारा दिलाने के कारण और नौ सिद्धियों से सम्पन्न कराने से आसन को आसन कहा जाता है।

२. पूर्वजन्मानुशमनात् जन्ममृत्यु निवारणात्। सम्पूर्ण फल दानात् च पूजेति कथिता प्रिये।।

हे प्रिये! पूर्व जन्मों का शमन करने से, जन्म मृत्यु को हटाने से, और सम्पूर्ण शुभ फल को देने के कारण पूजा को पूजा कहा जाता है।। त्रिकतन्त्रसार में कहा है-

आनन्दप्रसरः पूजा तां त्रिकोणे प्रकल्पयेत्।

अर्थात् आनन्द के प्रसार को ही पूजा कहते हैं। यह पूजा त्रिकोण पर करनी चाहिए। त्रिकोण प्रणाली युक्त शिवलिङ्ग का वाचक है।

भगवत्यै अमायै० युष्मान्वः पूजयामि ॐ पूजय।

दोदर्भ काण्ड छोड़े बिना केवल अक्षत कन्धों से फेंककर नया अक्षत पहिले रखे दो दर्भकाण्डों के साथ हाथ में रखकर देवी का आवाहन करना।

भगवतींअमां कामां चार्वङ्गीं टङ्कधारिणीं तारां पार्वतीं यक्षिणीं श्रीशारिकाभगवतीं श्रीशारदाभगवतीं श्रीमहाराज्ञी-भगवतीं श्रीज्वालाभगवतीं व्रीडाभगवतीं वैखरीभगवतीं वितस्ताभगवतीं गङ्गाभगवतीं यमुना-भगवतीं कालिका-भगवतीं सिद्धलक्ष्मीं महालक्ष्मीं महात्रिपुर-सुन्दरीं शैलपुत्रीं, ब्रह्मचारिणीं कूष्माण्डीं, चण्डघण्टां, स्कन्द-मातरं, सिद्धिदां, महागौरीं, कालरात्रीं, कात्यायनीं, नव-दुर्गाभगवतीं सहस्रनाम्नीं दुर्गादिवीं भवानीं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय[१]।।

यह पढ़कर अक्षत समेत दोनों दर्भकाण्डों को दोनों कंधों के ऊपर से फेंकना। फिर हाथ जोड़कर जलकुण्ड में फूल डालना-

श्रीशारिके त्रिपुरसुन्दरि शर्मसिन्धो
ज्वालेऽत्र राज्ञि वरदेऽखिलविश्वमातः।
शर्वांधेदेहनिलये धिषणे मदीयां
पूजामिमां स्वपरिवारयुता गृहाण।।
हे देवि त्वं पराशक्ते भक्तानुग्रहकारिणि।
अस्मद्दयानुरोधेन सन्निधिं कुरु चात्र भोः।। ३।।

अब हाथ जोड़कर मानसिक पूजा करके यह पढ़ना-

इत्याहूय च गायत्रीं त्रिःसमुच्चार्य तत्ववित्।
मनसा चिन्तितैर्द्रव्यैर्देवीमात्मनि पूजयेत्।।

---

१. देवं पूजार्थमाह्वानमावाहनमिति स्मृतम्।
इष्टदेव को पूजा के लिए बुलाना ही आवाहन है।

तेजोरूपां ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।।

दो तीन जऊँ दाने दोनों कन्धों के ऊपर से फेंककर पीछे बताए गए श्रीमहाराज्ञी मन्त्र से पूर्वोक्त विधि से प्राणायाम करना।

अब श्री महाराज्ञी को पाद्य देने के लिए तांबे के पात्र में पानी डालना फिर उस पानी को अपने हाथ में डालकर

शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभि स्रवन्तु नः।।

यह मंत्र पढ़कर वापिस तांबे के पात्र में डालना। फिर उस पानी में खीलें (लायि) केसर, सर्वौषधि विष्टर जल ये पांच चीज डालकर देवी के पैर धोना। यह मंत्र पढ़कर–

एहि कामे कामहर्त्रि स्वेष्टकामदुघे शिवे।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं क्षाल्यतां पादपीठिकाम्।।
भगवत्यै महाराज्यै पाद्यं[१] नमः।
पाद्यंशेषं निवारयेत्।

बचा हुआ जल छोड़े। नया जल ले फिर

शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभि स्रवन्तु नः।।

यह मंत्र पढ़कर पानी हाथ का वापिस तांबे के पात्र में डालना फिर उस पानी में दूध, पानी, विष्टर, घी, दही, चावल, जऊं और पीली सरसों ये आठ द्रव्य (अर्घ्य[२] अर्थात् श्री महाराज्ञी के हाथ मुंह धोने

---

१. पाद्यं– धर्मार्थ काम मोक्षाणां संस्थानं पाद्यंउच्यते।
अर्थात् धर्म अर्थ काम और मोक्ष का स्थान पाद्य माना जाता है।

२. अर्घ्यं– अर्घ्येण लभते कामान् अर्घ्येण लभते धनम्।
पुत्रायुः सुख मोक्षादि दानात् अर्घस्य वै लभेत्।।
पुष्प– गन्धर्व तन्त्र में कहा है–
पुष्पमूले वसेद्ब्रह्मा पुष्पमध्येतु केशवः। पुष्पाग्रेऽहं स्थितो नित्यं सर्वे देवाः स्थिता दले। ब्रह्म विष्णु शिवादीनां पुष्पमेव सदा प्रियम्।।

की चीजे हैं) उसमें छोड़ना।

भगवति अर्घ्यं अर्घ्यं।।

चार्वङ्गि त्वमिहागच्छ सतां चार्वङ्गदायिनि।

मयाऽऽनीतमर्घ्यमिदं शुद्धचेतां मुखहस्तकौ।।

भगवति अमे कामे चार्वङ्गि टङ्कधारिणि तारे पार्वति यक्षिणि श्रीशारिकाभगवति श्रीशारदाभगवति श्रीमहाराज्ञी-भगवति श्रीज्वालाभगवति व्रीडा-भगवति वैखरीभगवति वितस्ताभगवति गङ्गाभगवति यमुनाभगवति कालिका-भगवति सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरि शैलपुत्रि, ब्रह्मचारिणि कूष्माण्डि, चण्डघण्टे, स्कन्दमातः, सिद्धिदे, महागौरि, कालरात्रि, कात्यायनि, नवदुर्गाभगवति, सहस्रनाम्रि दुर्गादेवि भवानि इदं वोऽर्घ्यं नमः।।

अब देवी का, साफ पानी पात्र में डालकर, आचमन अर्थात् मुंह सफा करवाना नीचे दिए गए मंत्र से-

टङ्कधारिणि त्वमेहि दुष्टान् टङ्कैर्विधारिणि।

गृहाणाचमनं दत्तं मुखान्तर्मलमृष्टये।

भगवत्यै महाराज्ञ्यैआचमनीयं नमः।।

देवी के शरीर पर लगी द्रव्यों की मलिनता हटाने के लिए थोड़ा सा साफ पानी उस पर यह मंत्र पढ़कर डालना-

आगच्छ तारे स्थानेऽस्मिन् भवसागरतारिणि।

मलोत्थापनकं देहात्मन्त्रस्नानं च स्वीकुरु।।

भगवत्यै महाराज्ञ्यै मन्त्रस्नानीयं नमः।।

फिर महाराज्ञी के स्नान के लिए ये द्रव्य पानी में डालता-

लाज (लायि) गन्ध, वचः (वय कश्मीरी भाषा में) कुष्ठं (कश्मीर भाषा में क्वठ) वालुकं (छोटी सब्ज इलायची) शंख पुष्पक (सफेद फूल) कुंकम (केसर) अगरु, (एक प्रकार की लकड़ी का चूर्ण) कर्पूर

(काफूर की डल्ली)। इसके अतिरिक्त दूध की अच्छी मात्रा और शक्कर डालना। यह बड़े पात्र में तैयार करके नीचे लिखे मंत्रों से महाराज्ञी का स्नान करना। पहले महाराज्ञी मंत्र की एक माला जप करते करते जल कुण्ड में मिश्रित पानी डालना। फिर नीचे लिखे मंत्रों से स्नान करना।

इदमपि च ॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः ॥ १ ॥
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
पूश्चपृथ्वीबहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंय्योः॥ २ ॥
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि।
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ ३ ॥
पृतनाजितं सहमानमुग्रम-ऽग्निं हुवेम परमात्सधस्थात्।
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वाक्षामाद्देवो अतिदुरितात्यग्निः॥४ ॥
प्रत्नोहि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वा-स्मभ्यं च सौभगमायजस्व ॥५ ॥
यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्वस्विदऽस्याः परमं जगाम ॥ ६ ॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ ७ ॥
प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
धीनामवित्र्यवतु ॥ ८ ॥
ॐ गायत्र्यै सावित्र्यै / सरस्वत्यै नमः
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ ॥ ९ ॥
जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।

स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव सिन्धुंदुरितात्यग्निः।। १० ।।
भगवत्यै० महाराज्ञ्यै अष्टौ स्नानानि परिकल्पयामि नमः ।

फिर **ॐ नमो देवभ्यः।** "**कंठोपवीती**" गले में जनेऊ करके - **स्वाहा ऋषिभ्यः।** "**अपसव्येन**" बायीं ओर जनेऊ रखके - **स्वधा पितृभ्यः ।** पितरों का पहिले विधि अनुसार तिलयुक्त पानी से तर्पण करना। यह पढ़कर- **तत् सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य तु महापर्वणि अष्टम्यां** फिर पिता, पितामह, प्रपितामह, वृद्ध प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही आदि का नाम गोत्र सहित लेकर **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यता** कहकर कहना फिर दाहिनी ओर जन्यू करके **तत् सद् ब्रह्म०** आदि सारा पढ़कर तिलयुक्त पानी से श्री गुरु, परमगुरु, परमेष्ठिगुरु का नाम गोत्र सहित लेकर **तृप्यतां तृप्यतां तृप्यता** कहकर जल कुण्ड में पानी डालना। फिर दायीं ओर जनेऊ करके पानी डाले यह पढ़कर।

आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवमस्तु।। फिर पात्र में नया पानी **'ऐंक्लींसौः हसरक्षमलवयऊंह्रींश्रींरां'**

इस मन्त्रसे सात वार मन्त्रित करके अपने माथेतक लेके अमृतसे भराहुवा ध्यान करके देवी के सिरपर छोड़ना। यह मन्त्रगुडक है।। फिर "बाहें करतल में अक्षत युक्त पानी रख के आरात्रिका (आलथ-कश्मीरी में) निकालना-

गृह्णन्तु चण्डिकाभक्ता भूताः प्रासादबाह्यगाः।
पञ्चभूतात्मकाः प्रेतास्ते तृप्यन्तु सदा वौषट्।।

फिर देवी के पादों का जल नेत्रों को मलना" इस मंत्र से-

एहि देव पराशक्ते भगवत्यमलाशये।
प्रकाशय परं तेजो नेत्रस्पर्शेन वैष्णवि।।
उत्तिष्ठ देहि शरणं भुवि चित्रमाये

ह्युत्तिष्ठ दुष्टकृतदुःखततिं कृणीहि।

उत्तिष्ठ देहि शरणंभुवि चित्रमाये

ह्युत्तिष्ठ दुष्टकृतदुःखततिं कृणीहि।।

उत्तिष्ठ भक्तवरदायकमऽधि धेहि

ह्युत्तिष्ठ शोकभयकुञ्जमिदं लुनीहि।।

फिर देवी का आसन देना फूलों को बिछाना से यह पढ़कर-

आसनाय नमः, सिंहासनाय नमः, शवासनाय नमः, मुञ्चासनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः, नागासनाय नमः।।

फिर अनुलेपन करना।

सृष्टेरधिष्ठि-तिभुवः किमु चासनं ते,

नानाचमत्कृतिकृतः किमु भूषणं वा।।

किं देयमस्ति भुवनासुप्रदायिकाया

वाच्यं किमस्ति स्वयमेव त्रयीजनन्याः।।

"ऐसे ही देवीस्तोत्र पढते हुए देवीको चन्दनादि द्रव्योंसे अनुलेपन (मलना) करना"।।

"वस्त्र पहनाना" जो नया वस्त्र देवी के लिए लाया हो वही वस्त्र पहनाना नीचे दिये मन्त्र से-

एहि पार्वति ! शैलोत्थे वस्त्र त्वग्रोम-कोशजम्।

नानावर्णं मयानीतं व्रियतां चारु भावजम्।।

भगवत्यै० महाराज्ञ्यै वस्त्रं परिकल्पयामिनमः।।

"जनेऊ पहनना"।।

यक्षिण्येहि यज्ञ-मातः सुवर्णतन्तुनिर्मितम्।

त्रिगुणात्म यज्ञसूत्रं मयानीतं सुवीष्ट्च्यताम्।

भगवत्यै० महाराज्ञ्यै यज्ञोपवीतं नमः

"गन्ध चढाना"।।

शारिके त्वं विद्रुमाभे चन्दनागुरुकुङ्कुमैः।

संस्कृतं तिलकं भाले क्रियतां मम प्रीतये।।

भगवत्यै० महाराज्ञ्यै समालभनं गन्धोनमः।

लेपं निवारयेत्-

हाथ पर गन्ध का लेप हटाना।

"अक्षत और फूल चढाना"।।

हे शारदे ! शास्त्रदात्रि ! दूर्वार्घ-बिल्वपुष्पवत्।

नानाविधं पुष्पजाति प्रीत्यानीतं सुमर्द्यताम्।।

एक एक मन्त्र के पढ़ने के बाद एक फूल चढ़ाते रहिये-

ऊँ गांगणपतये नमः, भैंभीमराजायनमः,

कांकुमारायनमः। जुंजाङ्गलेश्वरायनमः।

ओंलं इन्द्रायनमः ऊँ ह्रीं अग्रये नमः ऊँ ह्रीं धर्मराजायनमः, नैऋतयेनमः, वरुणायनमः, वायवेनमः, कुबेरायनमः, ईशाना नमः, ब्रह्मणेनमः, अनन्तायनमः। धूम्रार्चिषेनमः, ऊष्मायनमः, ज्वलिन्यैनमः, ज्वालिन्यैनमः, विस्फुलिङ्गन्यैनमः, सुश्रियेनमः, स्वरूपायनमः, कपिलायैनमः, हव्यवाहनायैनमः, कव्यवाहनायनमः, दशकलात्मने वह्नयेनमः। तपिन्यैनमः, तापिन्यै नमः, धूम्रायैनमः, मरीच्यैनमः, जुलिन्यैनमः, तथ्यैनमः, सुषुम्णायैनमः, भोगदायैनमः, विश्वायैनमः, बोधिन्यैनमः, धारिण्यैनमः, क्षमायैनमः, द्वादशकलात्मनेसूर्यायनमः। अमृतायैनमः, आनन्दायैनमः, पूषायैनमः, तुष्ट्यैनमः, पुष्ट्यैनमः, रत्यैनमः, धृत्यैनमः, शिशिन्यैनमः, चण्डिकायैनमः, कान्त्यैनमः, ज्योत्स्नायैनमः, श्रियैनमः, प्रीत्यैनमः, अङ्गदायैनमः, पूर्णायैनमः, पूर्णामृतायैनमः, षोडशकलात्मनेशशिनेनमः।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

ऊँ गुरवे नमः, परमगुरवेनमः, परमेष्ठिगुरवेनमः।।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं द्वितीया-वरणार्चनम्।

अनन्तनागराजायनमः, वासुकिनागराजायनमः, कार्कोटक-नागराजायनमः, शङ्खपालनागराजायनमः, तक्षकनागराजाय-नमः, कुलिकनागराजायनमः, पद्मनागराजायनमः, महापद्म-नागराजाय नमः।।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

असिताङ्गभैरवयुत-ब्राह्म्यैनमः, रुरुभैरवयुतवैष्णाव्यै नमः, चण्डभैरवयुतरुद्राण्यैनमः, क्रोधभैरवयुतनारसिंह्यैनमः, उन्मत्तभैरवयुतकौमार्यैनमः, भीषणभैरवयुत चामुण्डायैनमः, कपालेश्वरभैरवयुतवाराह्यैनमः, संहारभैरवयुतमहालक्ष्म्यै नमः।।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

दुर्गायैनमः, भगवत्यैनमः, अमायैनमः, कामायैनमः, चार्वङ्ग्यैनमः, टङ्कधारिण्यैनमः, तारायैनमः, पार्वत्यैनमः, यक्षिण्यैनमः, श्रीशारिकायैनमः, श्रीशारदायैनमः, श्रीमहा-राज्ञ्यैनमः, श्रीज्वालायैनमः, व्रीडायैनमः, वैखर्यैनमः, वितस्तायैनमः, गङ्गायैनमः, यमुनायैनमः, कालिकायैनमः, सिद्धलक्ष्म्यैनमः, महात्रिपुरसुन्दर्यैनमः।।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

गायत्र्यैनमः, सावित्र्यैनमः, सरस्वत्यैनमः, बालायैनमः, भुवनेश्वर्यैनमः।।

अभीष्टसिद्धिं से देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

वज्रायनमः, शक्तयेनमः, दण्डायनमः, खड्गायनमः, पाशायनमः, ध्वजायनमः, गदायैनमः, त्रिशूलायनमः, पद्मायनमः, चक्रायनमः।।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।

भक्तया समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

अग्न्यादित्याभ्यांनमः, वरुणचन्द्रमोभ्यांनमः, कुमार-भौमाभ्यांनमः, विष्णुबुधाभ्यांनमः, इन्द्राबृहस्पतिभ्यांनमः, सरस्वतीशुक्राभ्यांनमः, प्रजापतिशनैश्चराभ्यांनमः, गणपति-राहुभ्यांनमः, रुद्रकेतुभ्यांनमः, ब्रह्मध्रुवाभ्यांनमः, अनन्ता-गस्त्याभ्यां नमः।। पराशक्तयेनमः चिच्छक्तये नमः सहस्त्रनाम्न्यैनमः, दुर्गादिव्यैनमः, भवान्यैनमः, अर्घोनमः पुष्प नमः।।

"धूप[१] चढ़ाना"।।

महाराज्ञि राजसेव्ये साज्यं गुग्गुलसंस्कृतम्।

अष्टगन्धयुतं धूपं मया नीतं सुजिघ्रताम्।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवत्यै महाराज्यै धूपं परिकल्पयामि नमः।।

"रत्नदीप[२]"।।

एहि ज्वाले महा-ज्वाले कर्पूरपीठमण्डितम्।

---

१. धूप - धूताशेष महादोष पूतिगन्धप्रभावतः। परमानन्द जननात् धूप इत्यभिधीयते।।
प्रदूषण युक्त वातावरण की दुर्गन्धि से उत्पन्न सारे महान दोषों को हटाकर परम आनन्द देने से धूप की महत्ता कही गई है।

२. दीप - दीर्घाज्ञान महाध्वान्ताहंकार परिवर्जनात्। परतत्त्वप्रकाशात् च दीप इत्यभिधीयते।।
दीर्घ अज्ञान के महान अन्धकार को तथा अहं भावना को मिटाने से और परतत्त्व को प्रकाशित करने से दीप की महत्ता कही गई है।।

नानावर्ति रत्नदीपं मया दत्तं प्रकाश्यताम्।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवत्यै महाराज्ञ्यै रत्नदीपं समर्पयामि नमः।।

कर्पूर-

कर्पूर की (Camphor) टिकिया या ढली को जलाकर नीचे दिये मन्त्र से महाराज्ञी को अर्पण करना-

कर्पूरदीपं सुमनोहरं प्रभो ! ददानि ते देवि ! मयि प्रसीद भो। पापान्धकारं त्वरितं निवारय प्रज्ञान दीपं मनसि प्रज्वालय।।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवत्यै महाराज्ञ्यै कर्पूरदीपं समर्पयामि नमः।।

"चामर"

एहि व्रीडे वीतव्रीडे चामरं पिच्छलैर्युतम्।
सुख-वातप्रदं सम्यक् दत्तं स्वीक्रियतामिदम्।।

(गौरीं अम्बां स्तुति) सारी पढ़कर"

भगवत्यै महाराज्ञ्यै चामरं समर्पयामिनमः।।

यह कहकर चामर अर्पण करे।

"अन्य उपकरण" (छत्र, ध्वजा, पंखा, आभूषण आदि)

एहि दुर्गे पराशक्ते भक्त्या कंकतिकां शुभाम्।
ध्वजं छत्रं व्यञ्जनं च मया नीतं विभूष्यताम्।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवत्यै महाराज्ञ्यै उपकरणानि

(जो छत्र आदि में हो उसका नाम लेकर पढ़ना)

समर्पयामि नमः।।

"आईना" दिखाना-

हे वैखरि विश्वमातस्त्वदष्ट्याऽदर्शबिम्बवत्।

भाति विश्वं स्वयं त्वं साऽऽदर्श दत्तं सुपश्यताम्।।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्ल पक्षस्य महापर्वणि तिथौ प्रतिपदा/आदि अमुक वासरान्वितायां भगवत्यै महाराज्ञ्यै आदर्श समर्पयामि नमः।।

पानी निर्माल्य में छोड़ते हुए पढ़े-

एताभ्यो देवताभ्यः दीपोनमः धूपोनमः।।

सपरिवारायाः पराशक्तेरर्घ्यदानाद्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।।

अब महाराज्ञी को चरु देना अर्थात् तांबे के पात्र[१] में दूध, घी, शहद, शक्कर, दही, इकट्ठा करके "मधुपर्क"[२] चढ़ाना-

हे वितस्ते पापहर्त्रि क्षीराज्यमधुशर्करम्।

षड्रसास्वादितं भक्ष्यं चरुं न्यस्तं सुस्वाद्यताम्।

भगवत्यै महाराज्ञ्यै चरुं समर्पयामि नमः।।

अब पंचस्तवी के कुछ चुने हुए श्लोकों को पढ़कर फिर 'फूलो की अञ्जलि' माता महाराज्ञी को अर्पण करना इस मंत्र से-

एहि गङ्गे विष्णुपज्जे बिल्वदूर्वाब्जमण्डिताम्।

पुष्पाञ्जलिमिमां भक्त्या दत्तां नस्यां सुजिघ्रताम्।।

भगवत्यै महाराज्ञ्यै पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः।।

नीचे दिये मन्त्र को पढ़ने के प श्चात् माता के सामने अंगूर, केला, अनार, या खजूर का फल यह मन्त्र पढ़कर रखो-

यमुने त्वं यमस्वसुर्भव्यखर्जूरदाडिमम्।

---

१. तांबे का पात्र प्रशस्त माना जाता है, कहा है-

ताम्रे देवाः प्रमोदन्ते ताम्रे देवाः स्थिताः सदा।

२. मधुपर्क- ज्योतिष्टोम यज्ञ और अश्वमेघयज्ञ से जो पुण्य प्राप्ति होती है वह सब मधुपर्क में प्रतिष्ठित है।

द्राक्षारुकाम्बरम्भादि फलं प्रत्तं सुभक्ष्यताम्।।
भगवत्यै महाराज्ञ्यै फलंसमर्पयामि नमः।।

सब्ज़ इलायची छोटी, लौंग, काली मिर्च, सुपारी, छुआरा, सोगी को इकट्ठा करके पात्र में रखकर "ताम्बूल" देवी के सामने यह मन्त्र पढ़कर रखिए-

कालिके त्वं कोकिलाभे पूगताम्बूलपानकम्।
मुखभागन्धदं दत्तं प्रीत्या श्वासं सुगन्ध्यताम्
भगवत्यै महाराज्ञ्यै ताम्बूलं समर्पयामि नमः।।

"एक परिक्रमा[१] मन से देवी के जल कुण्ड के इर्द-गिर्द यह मन्त्र पढ़कर करें-

सिद्धलक्ष्मीः विष्णुपत्नि ! ज्ञाताज्ञातकृतानि मे।
दशधैनांसि दह्यन्तां प्रक्रमैक-विधानतः।।
ॐ नमो भगवत्यै महाराज्ञ्यै प्रसीद।।

पंचस्तवी और सौन्दर्यलहरी के कुछ मधुर स्तोत्र पढ़कर अष्टाङ्ग-प्रणाम करना"-

महालक्ष्मी मारमातर्भुक्तिमुक्ति-फलप्रदम्।
भक्त्या कृतं प्रणामं ते साष्टाङ्गं स्वीविधीयताम्।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यामुरसा शिरसा मनसा
वचसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

पानी (निर्माल्य में) डालना पात्र से पूजा में हुई विधि आदि की कमी के दोष से मुक्त होने के लिए-

अन्नं नमः २ आज्यमाज्यमऽद्यदिनेऽद्ययथासङ्कल्पात् सिद्धिरस्तु। अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं

---

१. कहा है - एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके।
हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्ध प्रदक्षिणा।।

अर्थात् देवी की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात बार, गणेश की तीन बार विष्णु की चार बार और शंकर की अर्ध प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

च यत्गतं तत् सर्वंअच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।।

अब पानी वाले पात्र से दायें हाथ पर पानी डालकर वापिस पात्र में नीचे लिखे मन्त्र से पानी डाले।

शन्नोदेवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।

इस पानी से देवीकुण्ड के सामने

भगवत्यै महाराज्ञ्यै अपोशानं नमः

कहकर पानी डालें। पुनः

शन्नोदेवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।

ऊपर कही हुई विधि के अनुसार पानी पात्र में वापिस डालकर उस पानी से यथा शक्ति भगवती के सामने रुपया पैसा,

भगवत्यै महाराज्ञ्यै दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्कर्णं ददानि

कहकर डाले।

फिर एक सिक्का पानी से भिगोकर

एता देवताः सदक्षिणाऽन्नेन प्रीयन्ता प्रीताः सन्तु

यह कहकर डालें।।

नैवेद्य- (प्रेपुन) कश्मीरी शब्द प्रेपुन का अर्थ है पराशक्ति को अर्पण= प्रेपुन। परार्पण से 'प्रेपुन' बना है।

अच्छी सजी हुई थाली में क्षीर या हलवा या मिठाई या अन्य मीठे पदार्थ रखकर देवी के सामने रखिए। फिर सारे भक्त जन उस थाली को दोनों हाथों से पकड़कर यह नैवेद्य मन्त्र पढ़ें-

"नैवेद्यम्:"

"ऊँ अमृतोद्भवाय सोमाय अन्नाय ठः ठः

यह मन्त्र पढ़कर जल की छीटें नैवेद्य थाली पर डालिये-

अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्।

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः

प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।।

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः।। प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलश-देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः, चर्तुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय (मार्गशीर्षे) रुक्मिणीसहिताय कृष्णाय,श्रीसहिताय केशवाय। (पौषे) प्रियासहिताय, अनन्ताय, वागीश्वरीसहिताय नारायणाय (माघे) प्रीतिसहिताय अच्युताय, कान्तासहिताय माधवाय (फाल्गुणे) शक्ति-सहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय (चैत्रे) सिद्धिसहिताय वैकुण्ठाय, मतिसहिताय विष्णवे। (वैशाखे)। शोभासहिताय जनार्दनाय, विभूतिसहिताय मधुसूदनाय। (ज्येष्ठे)। महिमासहिताय उपेन्द्राय, इच्छासहिताय त्रिविक्रमाय। (आषाढे)। लक्ष्मीसहिताय यज्ञपुरुषाय, धृतिसहिताय वामनाय। (श्रावणे)। कान्तिसहिताय वासुदेवाय, रतिसहिताय श्रीधराय। (भाद्रपदे)। प्राप्तिसहिताय हरये, मायासहिताय हृषीकेशाय। (अश्वयुजे) । प्राकाम्यासहिताय योगीश्वराय, धीसहिताय पद्मनाभाय। (कार्तिके) लघिमासहिताय पुण्डरीकाक्षाय, गरिमासहिताय दामोदराय। (मलिम्लुचे)। सत्यभामासहिताय नरकारये, निष्कलासहिताय महामार्तण्डाय।। दुर्गायै त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगण-यागदेवताभ्यः।। भगवते वासुदेवाय, सङ्कर्षणाय, प्रद्युम्नाय, अनिरुद्धाय, सत्याय, पुरुषाय, अच्युताय, माधवाय, गोविन्दाय, सहस्रनाम्ने विष्णवे, लक्ष्मीसहिताय नारायणाय।। भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय

देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमासहिताय, शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय।। विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिङ्गलाय, गजाननाय, लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय।। क्लींकांकुमाराय, षण्मुखाय, मयूरवाहनाय, सेनाधिपतये कुमाराय।। ह्रांह्रींसः सूर्याय सप्ताश्वाय, अनश्वाय, एकाश्वाय, नीलाश्वाय, प्रत्यक्षदेवाय, परमार्थसाराय, तेजोरूपाय, प्रभासहिताय आदित्याय।। भगवत्यै अमायै कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै।। अभयङ्करीदेव्यै, क्षेमङ्करीभवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्रधिपतये, अमुकभैरवाय।। इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तिहस्ताय, यमाय दण्डहस्ताय, नैर्ऋतये खड्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वजहस्ताय, कुबेराय गदाहस्ताय, ईशानाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताय, विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः।। अग्न्यादित्याभ्यां, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमारभौमाभ्यां, विष्णुबुधाभ्यां, इन्द्राबृहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापतिशनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां।। ब्रह्मणे, कूर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै, कमलायै, शिख्यादिभ्यः पञ्चचत्वा-रिंशद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्यः।। ब्राहम्यदिभ्यो मातृभ्यः,

गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः, दुर्गाक्षेत्र-गणेश्वरदेवताभ्यः, राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनी-वालीदेवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः, कुहूदेवताभ्यः, रौद्री-देवताभ्यः, ऐन्द्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः, बार्हस्पत्य-देवताभ्यः, ॐ भूर्देवताभ्यः, ॐ भुवर्देवताभ्यः, ॐस्वर्देवता-भ्यः, ॐ भूर्भुवःस्वर्देवताभ्यः, अखण्डब्रह्माण्डदेवताभ्यः, धूर्म्यः, उपधूर्म्यः महागायत्र्यै, सावित्र्यै, सरस्वत्यै, हेरुकादिभ्यो वटुकादिभ्यः,

उत्पन्नं अमृतं दिव्यं प्राक्क्षीरोदधिमन्थनात्।
मिष्टान्नं अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य अमुकमासस्य / ज्येष्ठमासस्य शुक्लपक्षस्य अष्टभ्यां बुधवासरान्वितायां आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं भगवती श्री महाराज्ञी देवी प्रीत्यर्थं। ॐ० नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

"योगिनीबलि-(चुट्)"।। आकाशमातृभ्यो बलिंनमः, समालभनं गन्धोनमः (टीका लगाना) अर्घोनमः पुष्पंनमः।। (चावल और फूल डालना) "देवीको"।। महाराज्ञी भगवती के दो तीन स्तुति श्लोक तत् सद् ब्रह्म आदि सारा तिथि वार सहित पढ़कर।

दुर्गाभगवत्यैश्रीमहाराज्ञ्यै फलादिसमर्पयामिनमः।। "क्षेत्र-पालको"।। क्षांक्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः, रां राष्ट्राधिपतयेऽन्नं नमः, सर्वाभयवरप्रद मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्ददातु।। यह पढ़कर तलसहित फल अन्न आदि अर्पण करे।

"नित्यकर्म जपादि करके।

जप विधिः

अब एक माला (१०८) मन्त्र जाप करना। पहिले संकल्प के लिए पानी (निर्माल्य में) डालना-

संकल्प विधि-

तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य

अमुक मासस्य कृष्ण / शुक्लपक्षस्य तु महापर्वणि- अमुक देवी / देवता प्रसन्नार्थेनपे विनियोग

१. जप - जन्मान्तर सहस्त्रेषु कृतपाप प्रणाशनात्।

परदेव प्रकाशात् च जप इत्यभिधीयते।।

तन्त्रों में कहा है कि हजारों जन्मों में किये गये पापों को नष्ट करने से और परमात्म देव का प्रकाशन करने से 'जप' इन दो वर्णों (ज, प) का अतीव माहात्म्य कहा गया है। माला को हाथ में लेकर

मां माल्ये महामाल्ये सर्व शक्ति स्वरूपिणि !

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मात् मे सिद्धिदाभव।।

अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्वामि दक्षिणे करे।

जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद ममसिद्धये।।

यह कहकर जप आरम्भ करें। जप के पश्चात् फिर प्राणायाम करे पूर्वोक्त विधि के अनुसार और पानी डालते हुए पढ़े-

अनेन महाराज्ञी भगवती मन्त्र जपेन श्री भूतेश्वर सहिता श्री महाराज्ञी देवी

प्रीयतां प्रीताऽस्तु।

फिर सिर पर माला रखकर पढ़े-

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

जप के विषय में ध्यान देने योग्य बातें-

१. भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है:-

"यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि" अर्थात् यज्ञों में मैं जपयज्ञ हूँ।

२. तन्त्रों में कहा है कि—

जपयज्ञात् परो यज्ञो नापरोऽस्तीह कश्चन।
तस्मात् जपेन धर्मार्थ काममोक्षांश्च साधयेत्।।

अर्थात् जपयज्ञ से दूसरा यज्ञ संसार में उत्तम नहीं है। अतः जप से ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करें।

३. जप तीन प्रकार का होता है-

वाचिक, उपांशु और मानस।

इनमें से वाणी से मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण वाचिक जप है। जिससे दूसरों को शब्द सुनाई न दे, इस प्रकार जरा जरा सा ओंठ हिलाकर सूक्ष्म उच्चारण पूर्वक मन्त्र का जप उपांशु जप कहलाता है। मन बुद्धि के द्वारा मन्त्र के वर्ण, शब्द और अर्थ का चिन्तन करना मानस जप है। इनमें से वाचिक जप से उपांशु जप और उपांशु जप से मानस जप श्रेष्ठ है।।

४. जप की सिद्धि के लिए, मन में संतोष, पवित्रता, मौनभाव और मन्त्र के अर्थ का विचार करना, उद्वेग एवं खेद का न होना आवश्यक है।

५. अपने दायें हाथ को सदा वस्त्र से ढ़ककर तथा पवित्र धारण किये जप करे वही जप सफल होता है। जो ऐसा नहीं करता उसका जप निष्फल होता है। कहा है व्यास स्मृति में—

वस्त्रेणाच्छाद्य तु करं सपवित्रं सदा जपेत्।
तस्य स्यात् सफलं जाप्यं तत् हीनं अफलं मतम्।।

६. मन्त्र ज़प की गिनती अवश्य रखनी चाहिए क्योंकि बिना संख्या का जप आसुर जप कहलाता है कहा है बृहत् पराशर संहिता में—

असंख्यमासुरं यस्मात् तत् गणयेत् ध्रुवम्।

और भी कहा है–

व्यग्रचित्तेन यत् जप्तं यत् जप्तंमेरुलंघने।

असंख्यातं तु यत् जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत्।।

७. प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम्।

सायं जपेत् च नासाग्रे एष जप्यविधिः स्मृतः।

अर्थात् सुबह के समय हाथ नाभि के पास, मध्याह्न में हृदय के पास तथा सायं नासिका के पास रखकर जप करना उत्तम है।

८क. जप के समय किसी से बोलना नहीं चाहिए, अपने शरीर के अंगों को हिलाना नहीं चाहिए। न सिर और न गर्दन हिलाये, न जंभाई करे, न नींद करे, न थूके, न शरीर के निचले अंगों का स्पर्श करे।एकान्त स्थान में स्थिर आसन से बैठकर केवल मन्त्र देवता और मन्त्र के अर्थ का चिन्तन करे। यदि इसके विपरीत जप होता है तो उसका फल राक्षस तथा सिद्ध हरण कर लेते हैं।

ब. जप करने के समय यदि मन इधर उधर भटकने लगे तो उसे वहां से जबर्दस्ती से हटा कर ध्येय पर लाना चाहिए। भटकने नहीं देना चाहिए।

९. घर में जप का फल एक गुणा, गाय की समीपता में सौ गुणा, पवित्र उद्यान और तीर्थ में हजार गुणा, नदी के तट पर लाख गुणा, देव मन्दिर और गुरु के आश्रम में करोड़ गुणा तथा शिवालय में अनन्त गुणा मिलता है।

१०. यस्मिन् स्थाने जपं कृत्वा शक्रो हरति तज्जपम्।

तन्मृदा लक्ष्मकुर्वीत ललाटे तिलकाकृतिः।।

व्यास स्मृति के अनुसार आसन के नीचे की मिट्टी का तिलक माथे पर करे या नीचे के स्थान को अन्त में हाथ लगाकर माथे पर रखे, ऐसा न करने से जप का फल इन्द्र को प्राप्त होता है।।

११. पंचमुखी रुद्राक्ष की माला, लाल चन्दन की माला या तुलसी की माला पर जप करना चाहिए। जप करते समय माला को मध्यमा या अनामिका के प्रथम पर्व पर रखना चाहिए। तर्जनी और कनिष्ठिका से माला को न छुवे।

माला १०८ दानों की होनी चाहिए। माला में रखे सुमेरु (मोटा दाना) को कभी स्पर्श न करें।

१२. माला में १०८ दानें ही क्यों है इस विषय में कहा है कि

रुद्राणां शतमेकंतु भैरवाष्टक योजितम्।
कृत्वा मेरुं महारुद्रं मालाचाष्टोत्तरं शतम्।।

अर्थात् प्रधान रुद्रों की संख्या एक सौ है, भैरवों की संख्या आठ है। इन आठ भैरवों को रुद्रों के साथ मिलाकर एक सौ आठ की संख्या होती है। सुमेरु को महारुद्र, माना जाता है। अथवा-

चतुर्विंशति तत्त्वाश्च नाड्या द्वासप्ततिस्तथा।
द्वादशाङ्गुलमुच्छ्वासो माला चाष्टोत्तरं शतम्।।

अर्थात् पांच ज्ञानेद्रिय पांच कर्मेन्द्रिय, पांच तन्मात्र, प्रकृति, पुरुष, मन, बुद्धि, अहंकार, ईश्वर, सदाशिव, शक्ति और शिव, ये २४ तत्त्व, प्रधान ७२ नाडियां और १२ अंगुल आयाम का उच्छ्वास, इस प्रकार इन्हीं १०८ संख्याओं की प्रतीक भूत १०८ दाने की माला मानी जाती है। अथवा

षड्नवत्याङ्गुलायामं स्वदेहं द्वादशाङ्गुलः।
बहिः प्राणो याति चैवं माला चाष्टोत्तरशतम्।।

अर्थात् अपने शरीर का आयाम ९६ अंगुल माना जाता है और प्राण वायु भी १२ अंगुल अन्दर से बाहर निकलती है इस प्रकार इन्हीं १०८ संख्याओं की प्रतीक माला मानी जाती है। अथवा

नवान्ता वर्णिता संख्या कालोऽयं द्वादशावधिः।
हत्वापरस्परं चैवं माला चाष्टोत्तरं शतम्।।

अर्थात् संख्या एक से नौ तक मानी जाती है काल की अवधि बारह है। बारह से नौ को गुणन करके = ९ x १२ = १०८ की संख्या माला की ही प्रतीक है। अथवा ज्योतिषशास्त्र के अनुसार अश्विनी आदि नक्षत्र २७ हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद हैं अतः २७ x ४ = १०८ की संख्या माला की ही प्रतीक है।

श्री कुलार्णवतन्त्र में कहा है कि-

अक्षमाला द्विधा प्रोक्ता कल्पिताऽकल्पितेति च।

कल्पिता मणिभिः क्लृप्ता मातृकास्यादकल्पिता।।

अर्थात् अक्षमाला दो प्रकार की होती है।

कल्पित और अकल्पित। कल्पित माला मणियों (रुद्राक्ष आदि) की माला है। अकल्पिता - आदिक्षान्ता मातृका -अ से क्ष तक के वर्ण समुदाय को मातृका कहते हैं और यही अकल्पित है।

आदिक्षान्ताक्षवर्णत्वात् अक्षमालेति कीर्तिता।

अनुलोम विलोमाभ्यां गणयेत् मन्त्रवित्तमः।।

अर्थात् 'अ' वर्ण से 'क्ष' वर्ण तक के वर्ण समुदाय से उद्भूत अक्षमाला है। मन्त्र ज्ञाता जप संख्या की गणना इसी के आधार पर अनुलोम (forward order) और विलोम (reverse order) अक्रम से करे।

शिवसूत्र में भी कहा है "मातृका चक्र संबोधः" अर्थात् सद्गुरु के प्रसाद से ही शिष्य को अक्षमाला चक्र का ज्ञान होता है। अक्षमाला- अ से क्ष तक (अ आ इ ई से श, ष, स, ह, क्ष तक) के पचास वर्ण की सारे विश्वविस्तार की प्रतीक है। विश्व शिवतत्त्व (अनुत्तर तत्त्व) से आरंभ होकर पृथिवी तत्त्व में समाप्त होता है। एवं ३६ तत्त्व, इन पचास अक्षरों अर्थात् मातृका शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसकी महत्ता यहां तक कही गई है कि जो साधक इस वर्ण समुदाय का (अ से क्ष तक)

ही केवल सावधान मन से चिन्तन करता है वह असंख्य मन्त्रों का जप करता है क्योंकि सारे मन्त्र इसी वर्ण समुदाय से बने हैं।

स्मरण रहे-

न धारयेत् करे मूर्ध्नि कण्ठे च जप मालिकाम्
जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले क्षिपेत्।।

अर्थात् जिस माला से जप करते हो उस माला को न हाथ में धरें, न गले में डाले। जप के समय जप करने के पश्चात् उसे शुद्ध स्थान पर संभाल के रखें।।

शैवक्रम के अनुसार शैवयोगी के लिए शाक्तोपाय साधना में नियत रूप में मन्त्रों का उच्चारण करना माला आदि को हाथ में धारण करना जप नहीं है अपितु ऐसा शैवयोगी प्राकृतिक पूर्णाहन्ता में प्रविष्ट होकर जो कुछ व्यवहार करता है, या प्राणों की चेष्टाओं का आचरण करता है वह सारा इस योगी के लिए जप ही बन जाता है। इसकी सारी चेष्टायें मन्त्ररूपता से ही स्फुरित होती है। चाहिये वह वार्तालाप करे, या कोई श्लोक पढ़े, या गाली गलौच का प्रयोग करे, उठे, बैठे, भ्रमण करे, स्नान करे वह सारा व्यवहार अहं परामर्श की एकता के साथ ही चलता है।

शिवसूत्र में ऐसे योगी के लिए ही कहा है

कथा जपः।।

पृच्छा करना"।।

हाथ में दो कुशाकाण्ड और अक्षत लेकर यह मन्त्र तीन बार पढ़िये-

बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय धीमहि
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।। ३ ।।
ॐ तत्सद्ब्रह्माद्यता-वत्तिथावद्यामुकमासस्याऽमुकपक्षस्य

अमुकवासरान्वितायां आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं भगवत्या अमायाः कामायाःचार्वङ्ग्याः टङ्कधारिण्याः तारायाः पार्वत्याः यक्षिण्याः श्रीशारिकाभगवत्याः श्रीशारदा-भगवत्याः श्रीमहाराज्ञी-भगवत्याः श्रीज्वालाभगवत्याः व्रीडाभगवत्याः वैखरीभगवत्याः वितस्ताभगवत्याः गङ्गा-भगवत्याः यमुनाभगवत्याः कालिकाभगवत्याः सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः महात्रिपुरसुन्दर्याः शैल-पुत्र्याः, ब्रह्मचारिण्याः, कूष्माण्ड्याः, चण्डघण्टायाः, स्कन्दमातुः, सिद्धिदायाः, महागौर्याः, कालरात्र्याः, कात्यायन्याः नवदुर्गाभगवत्याः सहस्रनाम्न्याः दुर्गादिव्याः भवान्याः श्रीमहाराज्ञीदेवीप्रीत्यर्थं देवीपूजनमच्छिद्रंसम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।।

अब पानी में जौ दाने डालकर पढ़े

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पणं-नमः।।

अब हाथ में फूल लेकर साष्टांग प्रणाम करते हुए पढ़ें-

"क्षमाफूलचढाना"

"स्तोत्रादि पढ़कर"

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
का परा सहते देवि ! केवलं स्वामिनं बिना।।
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकम्पया।।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा नमस्कारं करोमि नमः।

"तर्पण"। अब पानी (निर्माल्य में) डालते हुए पढ़िये-

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्रये नमः पृथिव्यै
नम ओषधीभ्यः।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे
बृहते कृणोमि ।।

इत्येतासामेव देवतानां सलोकतां सायुज्यं सार्ष्टिं सामीप्यमाप्रोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते।।

"माफीकी प्रार्थना"

स्वच्छस्वान्तेन ते भक्त्या महात्रिपुरसुन्दरि।
यथाभावं कृतां पूजां स्वीकृत्य विश स्वाश्रयम्।।
मनस्यन्तर्गतं मन्त्रं मन्त्रस्यान्तर्गतं मनः।
मनोमन्त्रमयं दिव्यमेकपुष्पं पराऽर्चनम्।।

सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः
इति दुर्गापूजा-सम्पूर्णा।।

श्रीमहाराज्ञीकवचम्

श्री भैरव उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि राज्ञीकवचमुत्तमम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम दिव्यं भोगापवर्गदम्।।
मूलमन्त्रमयं मुख्यमष्टसिद्धिप्रदायकम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं लोके सर्वागमविनिश्चितम्।।
पठनाद् धारणाद् देवि महापातकनाशनम्।
महोत्पातप्रशमनं मूलविद्यामनोहरम्।।
विरूपाक्षः शिवो देवि विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पितामहो लोके जिष्णुर्गीर्वाणानायकः।।
महोनिधिस्तथा सूर्यस्तारकाधिपतिः शशी।
रत्नाकरश्च जलधिः शेषश्चानन्ततां गतः।।
श्रीराज्याः कवचस्यास्य पठनाद् धारणात् सदा।
बहुनोक्तेन देवेशि कवचस्यास्य धारणात्।।
मर्त्योऽप्यमरतां याति राज्ञीपदमवाप्नुयात्।
ऋषिरस्य महादेवि ब्रह्मा च्छन्दः समीरितम्।।
गायत्री देवता राज्ञी माया बीजमुदाहृतम्।
शरच्छक्तिः कीलकं च कामराजः सुरेश्वरि।।
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोग इति स्मृतः।

अस्य श्रीमहाराज्ञीत्रैलोक्यविजय कवचस्य, श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे विनियोगः। ब्रह्म- ऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। महाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐ ह्रां

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्या नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। "षडङ्गन्यास"। ह्रां हृदयायनमः, ह्रीं शिरसे स्वाहाः, ह्रूं शिखायै वषट्, ह्रैं कवचाय हुँ, ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट्, ह्रः अस्त्राय फट्।। ध्यायेत्।

उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम्।।
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्ग धारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्।।
उों लक्ष्मीर्मे शिरः पातु ह्रीं ललाटं सरस्वती।
श्रीं बाला पातु मां नेत्रे त्र्यश्रं पातु श्रुती मम।।
रां दुर्गा पातु मे नासां क्लीं मुखं पातु शारिका।
सौः कण्ठं वैखरी पातु भं भुजौ पातु मे शिवा।।
गं हस्तौ पातु मे काली वं वक्षस्त्रिपुरावतु।
षडश्रं पातु मे मध्यं वृत्तं पार्श्वौ ममावतु।।
त्यैं पृष्ठं पातु मे ब्राह्मी रां नाभिं पातु वैष्णवी।
ज्यैं गुदं पातु रुद्राणी ह्रीं कटिं मेऽपराजिता।।
स्वां कौमारी पातु जानू हां जङ्घेऽवतु चण्डिका।
स्वाहा गुल्फौ च वाराही उों पादौ नारसिंहिका।।
विस्मारितं च यत् स्थानं यत् स्थानं नामवर्जितम्।
तत् सर्वं पातु मे राज्ञी मूलविद्यामयी परा।।
वासुकिः पूर्वतः पातु नीलनागोऽनलेऽवतात्।

तक्षको दक्षिणे पातु नैऋते पद्मनागकः।।
कार्कोटकः पश्चिमेऽव्याच्छङ्खपालस्तु वायुगे।
कुलिकश्चोत्तरे पातु शेष ईशानमण्डले।।
ब्राह्मी ब्राह्ममुहूर्तेऽव्याद् दिनादौ वैष्णवी मम।
रुद्राणी पातु मध्याह्ने सायं पात्वपराजिता।।
निशादौ पातु कौमारी निशीथे चण्डिकावतु।
निशान्ते पातु वाराही सर्वदा नारसिंहिका।।
असिताङ्गः क्षितेः पातु पयसो रुरुभैरवः।
चण्डो मां पवनात् पातु क्रोधेशः पातु मानलात्।।
उन्मत्तः सोमतः पातु भीषणः सूर्यतोऽवतु।
याजकाच्च कपालीशो व्योम्नः संहारकोऽवतात्।।
सदा समन्ततः पातु वपुर्वसुदलं मम।
गुरवः पान्तु सर्वत्र दिगीशाः पान्तु सर्वतः।।
वृत्तत्रयं पातु नित्यं धरागेहं सदावतु।
श्रीचक्रं पातु भीतिभ्यो योगिन्यः पान्तु सर्वदा।।
ऊर्ध्वं चाधः सदा पातु देवो रामेश्वरः शिवः।
सर्वत्र सर्वदा सत्यं वपुर्भूतेश्वरोऽवतात्।।
पादादिमूर्धपर्यन्तं वपुः सर्वत्र मेऽवतु।
शिरसः पादपर्यन्तं राज्ञी पञ्चदशाक्षरी।।
इतीदं कवचं राज्या मन्त्रगर्भं जयावहम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम दारिद्र्यभयनाशनम्।।
सर्वरोगहरं साक्षात् सिद्धिदं पापनाशनम्
महाभयहरं देवि मूलविद्यामयं परम्।।
परमार्थप्रदं नित्यं भोगमोक्षैककारणम्।
यः पठेत् कवचं देवि रणे राजभये क्षणात्।।
संग्रामेषु रिपूञ्जित्वा विजयी गृहमेष्यति।

पठनात् कवचस्यास्य राजकोपः प्रशाम्यति।।
द्यूते धनं लभेद् द्यूती श्मशाने सिद्धिमाप्नुयात्।
त्रिवारं यः पठेद्रात्रौ रेतःस्रावे महेश्वरि।।
तस्य राज्ञी महाविद्या स्वप्नेऽभीष्टप्रदा भवेत्।
स्वयम्भूकुसुमैः शुद्धै रेतसा चोभयाङ्कितैः।।
रसैर्भूर्जे लिखेद्वर्म रवौ प्रातर्महेश्वरि।
चीनतन्तुभिरव्यक्तं लाक्षया वेष्टितं तथा।।
सुवर्णगुटिकान्तःस्थं पूजयेद्यन्त्रराजवत्।
गुटिकैषा महाविद्या राज्ञी मूर्तिरिवापरा।।
मूलविद्यामयी देवि सर्वाभीष्टफलप्रदा।
शिरःस्था धनदा देवि कण्ठस्था वाक्प्रदायिनी।।
वक्षःस्था पुत्रदा देवि कटिस्था भोगदायिनी।
पृष्ठस्था बलदा नित्यं कुक्षिस्था रोगनाशिनी।।
सर्वार्थसाधिनी लोके यथाभीष्टफलप्रदा।
गुटिकेयं शुभा राज्या न देया यस्य कस्यचित्।।
इदं कवचमीशानि मूलविद्यामयं ध्रुवम्।
सारस्वतप्रदं लक्ष्मीपुत्रपौत्रविवर्धनम्।।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्।
चतुष्षष्ट्यादितन्त्राणां सारमादाय वर्णितम्।।
श्मशाने यः पठेत् सायं महाचीनक्रमेश्वरः।
स साधको महादेवि राज्ञीपुत्रो भविष्यति।।
इतीदं मम सर्वस्वं त्रैलोक्यविजयाभिधम्।
कवचं मन्त्रगर्भं तु गोपनीयं स्वयोनिवत्।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीमहाराज्यास्त्रैलोक्यविजयं नाम कवचम्।।

महाराज्ञीसहस्त्रनामकम्

श्रीभैरव उवाच।

भगवन् वेदतत्वज्ञ मन्त्रतन्त्रविचक्षण।
शरण्य सर्वलोकेश शरणागतवत्सल।।
कथं श्रियमवाप्नोति लोके दारिद्र्यदुःखभाक्।
मान्त्रिको भैरवेशान तन्मे गदितुमर्हसि।।

श्रीभैरव उवाच।

या देवी निष्कला राज्ञी भगवत्यमलेश्वरी।
सा सृजत्यवति व्यक्तं संहरिष्यति तामसी।।
तस्या नामसहस्त्रं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति।
अवाच्यं दुर्लभं लोके दुःखदारिद्र्यनाशनम्।।
परमार्थप्रदं नित्यं परमैश्वर्यकारणम्।
सर्वागमरहस्याढ्यं सकलार्थप्रदीपनम्।।
समस्तशोकशमनं महापातकनाशनम्।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं राज्ञीनामसहस्त्रकम्।।

अस्य श्रीमहाराज्ञीनामसहस्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, महाराज्ञीसहस्त्रनामपाठे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीभूतेश्वरी-महाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः शक्तये नमो गुह्ये। क्लींकीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ध्यानं कुर्यात्।

या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरिका
सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां

तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम्।।
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्।।
ॐह्रींश्रींरांमहाराज्ञी क्लींसौःपञ्चदशाक्षरी।
ह्रींस्वाहात्र्यक्षरीविद्या पराभगवती विभा।।
भास्वती भद्रिका भीमा भर्गरूपा महस्विनी।
माननीया मनीषा च मनोजा च मनोजवा।।
मानदा मन्त्रविद्या च महाविद्या षडक्षरी।
षट्कूटा च त्रिकूटा च त्रयी वेदत्रयी शिवा।।
शिवाकारा विरूपाक्षी शशिखण्डावतंसिनी।
महालक्ष्मीर्महोरस्का महौजस्का महोदया।।
मातङ्गी मोदकाहारा मदिरारुणलोचना।
साध्वी शीलवती शाला सुधाकलशधारिणी।
खड्गिनी पद्मिनी पद्मा पद्मकिञ्जल्करञ्जिता।
हृत्पद्मवासिनी हृद्या पानपात्रधरा धरा।
धराधरेन्द्रतनया दक्षिणा दक्षजा दया।
दयावती महामेधा मोदिनी बोधिनी गदा।।
गदाधरार्चिता गोधा गङ्गा गोधावरी गया।
महाप्रभावसहिता महोरगविभूषणा।
महामुनिकृतातिथ्या माध्वी मानवती मघा।
बाला सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।।
शारी शरीरमध्यस्था वैखरी खेचरेश्वरी।
शिवदा शिववक्षःस्था कालिका त्रिपुरापुरी।।
पुरारिकुक्षिमध्यस्था मुरारिहृदयेश्वरी।

बलारिराज्यदा चण्डी चामुण्डा मुण्डधारिणी।।
मुण्डमालाञ्चिता मुद्रा क्षोभणा कर्षणक्षमा।
ब्राह्मी नारायणीदेवी कौमारी चापराजिता।।
रुद्राणी च शचीन्द्राणी वाराही वीरसुन्दरी।
नारसिंही भैरवेशी भैरवाकारभीषणा।।
नागालङ्कारशोभाढ्या नागयज्ञोपवीतिनी।
नागकङ्कणकेयूरा (१००) नागहारा सुरेश्वरी।।
सुरारिघातिनी पूता पूतना डाकिनीक्रिया।
क्रियावती कुरी कृत्या डाकिनी लाकिनी लया।।
लीलावती रसाकीर्णा नागकन्यामनोहरा।
हारकङ्कणशोभाढ्या सदानन्दा शुभङ्करी।।
प्रहासिनी मधुमती सरसी स्मरमोहिनी।
महोग्रवपुषी वार्ता वामाचारप्रिया सिरा।।
सुधामयी वेणुकरा वैरिघ्नीवीरसुन्दरी।
वारिमध्यस्थिता वामा वामनेत्रा शशिप्रभा।।
शर्मदा शङ्करी सीता रवीन्दुशिखिलोचना।
मदिरा वारुणी वीणागीतिज्ञा मदिरावती।।
वटस्था वारुणीशक्तिर्वटजा वटवासिनी।
वटुकी वीरसूर्वन्द्या स्तम्भिनी मोहिनी च मुत्।।
मुद्गराङ्कुशहस्ता च वराभयकरा कुटी।
पाटीरद्रुमवल्ली च वटिका वटुकेश्वरी।।
इष्टदा कृषिभूः कीरी रेवतीरमणप्रिया।
रोहिणी रेवती रम्या रमणा रोमहर्षिणी।।
रसोल्लासा रसासारा सारिणी तारिणी तडित्।
तरीतरित्रहस्ता च तोतुला तरणिप्रभा।।

रत्नाकरप्रिया रम्भा रत्नालङ्कारशोभिता।
रुक्माङ्गदा गदाहस्ता गदाधरवरप्रदा।।
षड्रसा द्विरसा माला मालाभरणभूषिता।
मालती मल्लिकामोदा मोदकाहारवल्लभा।।
वल्लभी मथुरा माया काशी काञ्ची ललन्तिका।
हसन्तिका हसन्ती च भ्रमन्ती च वसन्तिका।।
क्षेमा क्षेमङ्करी क्षामा क्षौमवस्त्रा (२००) क्षणेश्वरी।
क्षणदा क्षेमदा सीरा सीरपाणिसमर्चिता।।
क्रीता क्रीतातपा क्रूरा कमनीया कुलेश्वरी।
कूर्चबीजा कुठाराढ्या कूर्मिणी कूर्मसुन्दरी।।
कारुण्या चैव काश्मीरी दूती द्वारवती ध्रुवा।
ध्रुवस्तुता ध्रुवगतिः पीठेशी बगलामुखी।।
सुमुखी शोभनानीतिः रत्नज्वालामुखी नतिः।
अलकोज्ञयिनी भोग्या भङ्गी भोगावती बला।।
धर्मराजपुरी पूता पूर्णासत्त्वाऽमरावती।
अयोध्या योधनीया च युगमाता च यक्षिणी।।
यज्ञेश्वरी योगगम्या योगिध्येया यशस्विनी।
यशोवती च चार्वङ्गी चारुहासा चलाचला।।
हरीश्वरी हरेर्माया मायिनी वायुवेगिनी।
अम्बालिकाऽम्बा भर्गेशी भृगुकूटा महामतिः।।
कोशेश्वरी च कमला कीर्तिदा कीर्तिवर्धिनी।
कठोरवाक्कुहूमूर्तिः चन्द्रबिम्बसमानना।।
चन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्गी कनकाचलवासिनी।
मलयाचलसानुस्था हिमाद्रितनयातनुः।।
हिमाद्रिकुक्षिदेशस्था कुब्जिका कोसलेश्वरी।
कारैकनिगडा गूढा गूढगुल्फातिगोपिता।।

तनुजा तनुरूपा च बाणचापधरा नुतिः।
धुरीणा धूम्रवाराही धूम्रकेशाऽरुणानना।।
अरुणेशी रतिः स्वातिर्गरिष्ठा च गरीयसी।
महानसी महाकारा सुरासुरभयङ्करी।।
अणुरूपा महज्ज्योतिरनिरुद्धसरस्वती।
श्यामा श्याममुखी शान्ता श्रान्तसन्तापहारिणी।।
गौर्गण्या गोमयी गुह्या गोमती गुरुवागऽया।
गीतसन्तोषसंसक्ता (३००) ग्राहिणी ग्रहिणी ग्रहा।।
गणप्रिया गजगतिर्गान्धिारी गन्धमोदिनी।
गन्धमादनसानुस्था सह्याचलकृतालया।।
गजाननप्रिया गव्या ग्राहिका ग्राहवाहना।
गुहप्रसूर्गुहावासा ग्रहमालाविभूषणा।।
कौबेरी कुहका भ्रान्तिस्तर्कविद्या प्रियङ्करी।
पीताम्बरा पटाकारा पताका सृष्टिजा सुधा।।
दाक्षायणी दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी।
ताराचक्रस्थिता तारा तुरी तुर्या तुटिस्तुला।।
सन्ध्यात्रयी सन्धिजरा सन्ध्यातारुण्यलालिता।
ललिता लोहिता लम्पा चम्पा कम्पाकुला सृणिः।।
सृतिः सत्यवती स्वस्था समाना मानवर्धिनी।
महोमयी मनस्तुष्टिः कामधेनुः सनातनी।।
सूक्ष्मरूपा सूक्ष्ममुखा स्थूलरूपा कलावती।
तलातलाश्रया सिन्धुस्त्र्यम्बिका लम्पिका जया।।
सौदामिनी सुधादेवी सनकर्षिसमर्चिता।
मन्दाकिनी च यमुना विपाशा नर्मदानदी।।
गण्डक्यैरावती सिप्रा वितस्ता च सरस्वती।
रेवा चैरावती चेक्षुमती सागरवासिनी।।

देवकी देवमाता च देवेशी देवसुन्दरी।
दैत्यघ्नी दमनी दात्री दितिर्दितिजसुन्दरी।।
विद्याधरी च विद्येशी विद्याधरजसुन्दरी।
मेनका चित्रलेखा च चित्रिणी च तिलोत्तमा।।
उर्वशी मोहिनी रम्भा चाप्सरोगणसुन्दरी।
यक्षिणी यक्षलोकेशी नरवाहनपूजिता।।
यक्षेन्द्रतनया योग्या यक्षनायकसुन्दरी।
गन्धवती चिता गन्धा सुगन्धा गीततत्परा।।
गन्धर्वतनया नम्रा (४००) गीतिर्गन्धर्वसुन्दरी।
मन्दोदरी करालाक्षी मेघनादवरप्रदा।।
मेघवाहनसन्तुष्टा मेघमूर्तिश्च राक्षसी।
रक्षोहन्त्री केकसी च रक्षोनायकसुन्दरी।।
किंन्नरी कम्बुकण्ठी च कलकण्ठस्वना सुधा।
किंमुखी हयवक्त्रा च केला किन्नरसुन्दरी।।
पिशाची राजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थिता।
महापिशाचिनी चान्द्री पिशाचकुलसुन्दरी।।
गुह्येश्वरी गुह्यरूपा गुर्वी गुह्यकसुन्दरी।
सिद्धिप्रदा सिद्धवधूः सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी।।
भूतेश्वरी भूतालया भूतधात्री भयापहा।
भूतभीतिहरी भव्या भूतजा भूतसुन्दरी।।
पृथ्वी पार्थिवलोकेशी पृथा विष्णुसमर्चिता।
वसुन्धरा वसुनता पृथिवी भूमिसुन्दरी।।
अम्भोधितनयाऽलुप्ता जलजाक्षी जलेश्वरी।
अमूर्तिरम्मयी मारी जलस्था जलसुन्दरी।।
तेजस्विनी महोधात्री तैजसी सूर्यबिम्बगा।
सूर्यकान्तिः सूर्यतेजास्तेजोरूपैकसुन्दरी।।

वायुवाहा वायुमुखी वायुलोकैकसुन्दरी।
गगनस्था खेचरेशी शून्यरूपा निराकृतिः।।
निराभासा भासमाना द्युतिराकाशसुन्दरी।
क्षितिमूर्तिधराऽनन्ता क्षितिभृल्लोकसुन्दरी।।
अब्धियाना रत्नशोभा वरुणेशी वरायुधा।
पाशहस्ता पोषणा च वरुणेश्वरसुन्दरी।।
अनलैकरुचिज्योतिः पंचानिलगतिस्थितिः।
प्राणापानसमानेच्छा चोदानव्यानरूपिणी।।
पंचवातगतिर्नाडीरूपिणी वातसुन्दरी।
अग्निरूपा वह्निशिखा वडवानलसन्निभा।।
हेतिर्हविर्हुतज्योतिरग्निजा वह्निसुन्दरी।
सोमेश्वरी सोमकला सोमपानपरायणा।।
सौम्यानना सौम्यरूपा सोमस्था सोमसुन्दरी।
सूर्यप्रभा सूर्यमुखी सूर्यजा सूर्यसुन्दरी।।
याज्ञिकी यज्ञभागेच्छा यजमानवरप्रदा।
याजकी यज्ञविद्या च यजमानैकसुन्दरी (५००)।।
आकाशगामिनी वन्द्या शब्दजाकाशसुन्दरी।
मीनप्रिया मीननेत्रा मीनाशा मीनसुन्दरी।।
कूर्मपृष्ठगता कूर्मी कूर्मजा कूर्मरूपिणी।
वाराही वीरसूर्वह्याँ वरारोहा मृगेक्षणा।।
वराहमूर्तिर्वाचाला दंष्ट्रा वराहसुन्दरी।
नरसिंहाकृतिर्देवी दुष्टदैत्यनिसूदिनी।।
प्रद्युम्नवरदा नारी नरसिंहैकसुन्दरी।
वामजा वामनाकारा नारायणपरायणा।।
बलिदानवदर्पघ्नी वाम्या वामनसुन्दरी।
रामप्रिया रामकीलिः क्षत्रवंशक्षयङ्करी।।

दनुपुत्री राजकन्या रामा परशुधारिणी।
भार्गवी भार्गविष्टा च जामदग्न्यवरप्रदा।।
कुठारधारिणी रात्रिर्जामदग्न्यैकसुन्दरी।
सीतालक्ष्मणसेव्या च रक्षःकुलविनाशिनी।।
रामप्रिया च शत्रुघ्नी शत्रुघ्नभरतेष्टदा।
लावण्यामृतधाराढ्या लवणासुरघातिनी।।
लोहितास्या प्रसन्नास्या स्वारामा रामसुन्दरी।
कृष्णकेशा कृष्णमुखी यादवान्तकरी लया।।
यादोगणार्चिता योज्या राधाश्रीकृष्णसुन्दरी।
बुद्धप्रसूर्बुद्धदेवी जिनमार्गपरायणा।।
जितक्रोधा जितालस्या जिनसेव्या जितेन्द्रिया।
जिनवंशधरोग्रा च नीलान्ता बुद्धसुन्दरी।।
काली कोलाहलप्रीता प्रेतवाहा सुरेश्वरी।
कल्किप्रिया कम्बुधरा कलिकालैकसुन्दरी।।
विष्णुमाया ब्रह्ममाया शाम्भवी शववाहना।
इन्द्रावरजवक्षःस्था स्थाणुपत्नी पलालिनी।।
जृम्भिणी जृम्भहर्त्री च जृम्भमाणकचालका
कुलाकुलपदेशानी पददानफलप्रदा।।
कुलवागीश्वरी कुल्या कुलजा कुलसुन्दरी।
पुरन्दरेष्टा तारुण्यालया पुण्यजनेश्वरी।।
पुण्योत्साहा पापहन्त्री पाकशासनसुन्दरी।
सूर्यकोटिप्रतीकाशा सूर्यतेजोमयी मषी।।
लेखिनी भ्राजिता रज्जुरूपिणी सूर्यसुन्दरी (६००)।
चन्द्रिका च सुधाधारा ज्योत्स्ना शीतांशुसुन्दरी।।
लोलाक्षी च शताक्षी च सहस्त्राक्षी सहस्त्रपात्।
सहस्त्रशीर्षा चेन्द्राक्षी सहस्त्रभुजवल्लिका।।

कोटिरत्नांशुशोभा च शुभ्रवस्त्रा शतानना।
शतानन्दा श्रुतिधरा पिङ्गला चोग्रनादिनी।।
सुषुम्ना हारकेयूरनूपुरारावसङ्कुला।
घोरनादा घोरमुखी चोन्मुखी चोल्मुकायुधा।।
गोपिता गूर्जरी गाथा गायत्री वेदवल्लभा।
वल्लकीस्वननादा च नादविद्या नदीतटी।।
बिन्दुरूपा चक्रयोनिर्बिन्दुनादस्वरूपिणी।
चक्रेश्वरी भैरवेशी महाभैरववल्लभा।।
कालभैरवभार्या च कल्पान्तरङ्गनर्तकी।
प्रलयानलधूम्राभा योनिमध्यकृतालया।।
भूचरी खेचरीमुद्रा नवमुद्राविलासिनी।
वियोगिनी श्मशानस्था श्मशानार्चनतोषिता।।
भास्वराङ्गी भर्गशिखा भर्गवामाङ्गवासिनी।
भद्रकाली विश्वकाली श्रीकाली मेघकालिका।।
नीरकाली कालरात्रिः काली कामेशकालिका।
इन्द्रकाली पूर्वकाली पश्चिमाम्नायकालिका।।
श्मशानकालिका भद्रकाली श्रीकृष्णकालिका।
क्रींकारोत्तरकाली श्रींहुंह्रींदक्षिणकालिका।
सुन्दरी त्रिपुरेशानी त्रिकूटा त्रिपुरार्चिता।
त्रिनेत्रा त्रिपुराध्यक्षा त्रिपुटा पुटभैरवी।।
त्रिलोकजननी त्रेता महात्रिपुरसुन्दरी।
कामेश्वरी कामकला कालकामेशसुन्दरी।।
त्र्यक्षरी त्र्यक्षरीदेवी भावना भुवनेश्वरी।
एकाक्षरी चतुष्कूटा त्रिकूटेशी लयेश्वरी।।
चतुर्वर्णा च वर्णेशी वर्णाढ्या चतुरक्षरी।
पंचाक्षरी च षड्वक्त्रा षटकूटा च षडक्षरी।।

सप्ताक्षरी नवानेवी परमाष्टाक्षरेश्वरी।
नवमी पञ्चमी षष्ठी नागेशी च नवाक्षरी।।
दशाक्षरी दशास्येशी देविकैकादशाक्षरी।
द्वादशादित्यसङ्काशा (७००) द्वादशी द्वादशाक्षरी।।
त्रयोदशी वेदगर्भा वाद्या त्रयोदशाक्षरी।
चतुर्दशाक्षरी विद्या विद्यापञ्चदशाक्षरी।।
षोडशी सर्वविद्येशी महाश्रीषोडशाक्षरी।
महाश्रीषोडशीविद्या चिन्तामणिमनुप्रिया।।
द्वाविंशत्यक्षरी श्यामा महाकालकुटुम्बिनी।
वज्रतारा कालतारा नारी तारोग्रतारिणी।।
कामतारा शब्दतारा स्पर्शतारा रसाश्रया।
रूपतारा गन्धतारा महानीलसरस्वती।।
कालज्वाला वह्निज्वाला ब्रह्मज्वाला जटाकुला।
विष्णुज्वाला जिष्णुशिखा भद्रज्वाला करालिनी।।
विकरालमुखीदेवी कराली भूतिभूषणा।
चिताशयासना चिन्ता चितामण्डलमध्यगा।
भूतभैरवसेव्या च भूतभैरवपालिनी।
बन्धकी बद्धसंमुद्रा भवबन्धविनाशिनी।।
भवानी देवदेवेशी दीक्षा दीक्षितपूजिता।
साधकेशी सिद्धिदात्री साधकानन्दवर्धिनी।।
साधकाश्रयभूता च साधकेष्टफलप्रदा।
रजोवती राजसी च रजकी च रजस्वला।।
पुष्पप्रिया पुष्पवती स्वयम्भूपुष्पमालिका।
स्वयम्भूपुष्पगन्धाढ्या पुलस्त्यसुतघातिनी।।
पात्रहस्ता सुता पौत्री पीतास्या पीतभूषणा।
पिङ्गानना पिङ्गकेशी पिङ्गला पिङ्गलेश्वरी।।

मङ्गला मङ्गलेशानी सर्वमङ्गलमङ्गला।
पुरूरवेश्वरी पाशधरा चापधराऽधुरा।।
पुण्यधात्री पुण्यमयी पुण्यलोकनिवासिनी।
होतृसेव्या हकारस्था सकारस्था सुखावती।।
सखी शोभावती सत्या सत्याचारपरायणा।
सतीशानकलेशानी वामदेवकलाश्रिता।।
सद्योजातकलादेवी शिवाऽघोरकलाकृतिः।
शर्वरी क्षीरसदृशी क्षीरनीरविवेकिनी (८००)।।
वितर्कनिलया नित्या नित्यक्लिन्ना पराम्बिका।
पुरारिदयिता दीर्घा दीर्घनासाऽल्पभाषिणी।।
काशिका कौशिकी कोश्या कोशदा रूपवर्धिनी।
तुष्टिः पुष्टिः प्रजाप्रीता प्राजिका पूजकप्रिया।।
प्रजावती गर्भवती गर्भपोषणपोषिता।
शुक्लवासाः शुक्लरूपा शुचिवासा जयावहा।।
जानकी जन्यजनका जनतोषणतत्परा।
वादप्रिया वाद्यरता वादिता वादसुन्दरी।।
वाक्स्तम्भिनी कीरवाणी धीराधीरा धुरन्धरा।
स्तनन्धयी सामिधेनी निरानन्दा निरालया।।
समस्तसुखदा सारा वारांनिधिवरप्रदा।
वालुकी वीरपानेष्टा वसुधात्री वसुप्रिया।।
शुक्रनान्दा शुक्ररसा शुक्रपूज्या शुकप्रिया।
शुकी च शुकहस्ता च समस्तनरकान्तका।।
समस्ततत्त्वनिलया भगरूपा भगेश्वरी।
भगबिम्बा भगाहृद्या भगलिङ्गस्वरूपिणी।।
भगलिङ्गेश्वरी श्रीदा भगलिङ्गामृतस्त्रवा।
क्षीराशना क्षीररुचिराज्यपानपरायणा।।

मधुपानपरा प्रौढा पीवरांसा परंपरा।
पिलम्पिला पटोलेशा पाटलारुणलोचना।।
क्षीराम्बुधिप्रिया क्षीबा सरला सरलायुधा।
संग्रामा सुनया स्त्रस्ता संसृतिः सनकेश्वरी।।
कन्या कनकरेखा च कान्यकुब्जनिवासिनी।
काञ्चनाभतनुः काष्ठा कुष्ठरोगविनाशिनी।।
कठोरमूर्धजा कुन्ती कुन्तायुधधरा धृतिः।
चर्माम्बरा क्रूरनखा चकोराक्षी चतुर्भुजा।।
चतुर्वेदप्रिया चाट्वी चतुर्वर्गफलप्रदा।
ब्रह्माण्डचारिणी स्फूर्तिर्ब्रह्माणी ब्रह्मसंमता।।
सत्कारकारिणी सूतिः सूतिका लतिकालता (९००)।
कल्पवल्ली कृषाङ्गी च कल्पपादपवासिनी।।
कल्पपाशा महाविद्या विद्याराज्ञी सुखाश्रया।
भूतिराज्ञी विश्वराज्ञी लोकराज्ञी शिवाश्रया।।
ब्रह्मराज्ञी विष्णुराज्ञी रुद्रराज्ञी जटाश्रया।
नागराज्ञी वंशराज्ञी वीरराज्ञी रजःप्रिया।।
सत्त्वराज्ञी तमोराज्ञी गुणराज्ञी चलाचला।
वसुराज्ञी सत्यराज्ञी तपोराज्ञी जपप्रिया।।
मन्त्रराज्ञी वेदराज्ञी तन्त्रराज्ञी श्रुतिप्रिया।
वेदराज्ञी मन्त्रिराज्ञी दैत्यराज्ञी दयाकरा।।
कालराज्ञी प्रजाराज्ञी तेजोराज्ञी हराश्रया।
पृथ्वीराज्ञी पयोराज्ञी वायुराज्ञी मदालसा।।
सुधाराज्ञी सुराराज्ञी भीमराज्ञी भयोज्झिता।
तथ्यराज्ञी जयाराज्ञी महाराज्ञी कुलाकृतिः।।
वामराज्ञी चीनराज्ञी हरिराज्ञी हलीश्वरी।
पराराज्ञी यक्षराज्ञी भूतराज्ञी शिवासना।।

वटुराज्ञी प्रेतराज्ञी शेषराज्ञी शमप्रदा।
आकाशराज्ञी राजेशी राजराज्ञी रतिप्रिया।।
पातालराज्ञी भूराज्ञी प्रेतराज्ञी विषापहा।
सिद्धराज्ञी विभाराज्ञी तेजोराज्ञी विभामयी।।
भास्वद्राज्ञी चन्द्रराज्ञी ताराराज्ञी खवासिनी।
ग्रहराज्ञी लताराज्ञी वृक्षराज्ञी मतिप्रदा।।
धीरराज्ञी मनोराज्ञी मनुराज्ञी च काश्यपी।
मुनिराज्ञी रत्नराज्ञी युगराज्ञी मणिप्रभा।।
सिन्धुराज्ञी नदीराज्ञी नदराज्ञी दरीस्थिता।
बिन्दुराज्ञी नादराज्ञी आत्मराज्ञी च सद्गतिः।।
पुत्रराज्ञी ध्यानराज्ञी लयराज्ञी सदीश्वरी।
ईशानराज्ञी राजेशी स्वाहाराज्ञी महत्तरा।।
वह्निराज्ञी योगिराज्ञी यज्ञराज्ञी चिदाकृतिः।
जगद्राज्ञी तत्त्वराज्ञी वाग्राज्ञी विश्वरूपिणी।।
पञ्चदशाक्षरीराज्ञी ॐह्रींभूतेश्वरेश्वरी। (१०००)

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं राज्ञीनामसहस्रकम्।।
पञ्चदशाक्षरीतत्त्वं मन्त्रसारं मनुप्रियम्।
सर्वतत्त्वमयं पुण्यं महापातकनाशनम्।।
सर्वसिद्धिप्रदं लोके सर्वरोगनिवर्हणम्।
सर्वोत्पातप्रशमनं ग्रहशान्तिकरं परम्।।
सर्वदेवप्रियं प्राज्यं सर्वशत्रुभयापहम्।
सर्वदुःखौघशमनं सर्वशोकविनाशनम्।।
पठेद्वा पाठयेन्नाम्नां सहस्रं शक्तिसंनिधौ।
दूरादेव पलायन्ते विपदः शत्रुभीतयः।।
राक्षसा भूतवेतालाः पन्नगा हरिणद्विषः।
पठनाद्विद्रवन्त्याशु महाकालादिव प्रजाः।।

श्रवणात्पातकं नश्येच्छ्रावयेद्यः स भाग्यवान्।
(नानाविधानि भोगानि संभुज्य पृथिवीवले।।)
गमिष्यति परां भूमिं त्वरितं नात्र संशयः।
अश्वमेधसहस्रस्य वाजिपेयस्य कोटयः।
गङ्गास्नानसहस्रस्य चान्द्रायणायुतस्य च।।
तप्तकृच्छ्रैकलक्षस्य राजसूयस्य कोटयः।
सहस्रनामपाठस्य कलां नार्घन्ति षोडशीम्।।
सर्वसिद्धीश्वरं साध्यं राज्ञीनामसहस्रकम्।
मन्त्रगर्भं पठेद्यस्तु राज्यकामो महेश्वरि।।
वर्षमेकं शतावर्तं महाचीनक्रमाकुलः।
शक्तिपूजापरो रात्रौ स लभेद्राज्यमीश्वरि।।
पुत्रकामी पठेत् सायं चिताभस्मानुलेपनः।
दिगम्बरो मुक्तकेशः शतावर्तं महेश्वरि।।
श्मशाने तु लभेत् पुत्रं साक्षाद्वैश्रवणोपमम्।
परदारार्चनरतो भगबिम्बं स्मरन् सुधीः।।
पठेन्नामसहस्रं तु वसुकामी लभेद् धनम्।
रवौ वारत्रयं देवि पठेन्नामसहस्रकम्।।
मृदुविष्टरनिर्विष्टः क्षीरपानपरायणः।
स्वप्ने सिंहासनां राज्ञीं वरदां भुवि पश्यति।।
क्षीरचर्वणसन्तृप्तो वीरपानरसाकुलः।
यः पठेत् परया भक्तया राज्ञीनामसहस्रकम्।।
स सद्यो मुच्यते घोरान्महापातकजाद्भयात्।
यः पठेत् साधको भक्त्या शक्तिवक्षःकृतासनः।।
शुक्रोत्तरणकाले तु तस्य हस्तेऽष्टसिद्धयः।
यः पठेन्निशि चक्राग्रे परस्त्रीध्यानतत्परः।।
सुरासवरसानन्दी स लभेत् संयुगे जयम्।

इदं नामसहस्रं तु सर्वमन्त्रमयं शिवे।।
भूर्जत्वचि लिखेद्रात्रौ चक्रार्चनसमागमे।
अष्टगन्धेन पूतेन वेष्टयेत् स्वर्णपत्रके।।
धारयेत् कण्ठदेशे तु सर्वसिद्धिः प्रजायते।
यो धारयेन्महारक्षां सर्वदेवातिदुर्लभाम्।।
रणे राजकुले द्यूते चौररोगाद्युपद्रवे।
स प्राप्नोति जयं सद्यः साधको वीरनायकः।।
श्रीचक्रं पूजयेद्यस्तु धारयेद्वर्म मस्तके।
पठेन्नामसहस्रं तु स्तोत्रं मन्त्रात्मकं तथा।।
किं किं न लभते कामं देवानामपि दुर्लभम्।
सुरापानं ततः संविच्चर्वणं मीनमांसकम्।।
नवकन्यासमायोगो मुद्रा वीणारवः प्रिये।
सत्सङ्गो गुरुसांनिध्यं राज्ञीश्रीचक्रमग्रतः।।
यस्य देवि स एव स्याद्योगी ब्रह्मविदीश्वरः।
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम्।।
अप्रकाश्यमदातव्यं न देयं यस्य कस्याचित्।
अन्यशिष्याय दुष्टाय दुर्जनाय दुरात्मने।।
गुरुभक्तिविहीनाय सुरास्त्रीनिन्दकाय च।
नास्तिकाय कुशीलाय न देयं तत्त्वदर्शिभिः।।
देयं शिष्याय शान्ताय भक्तायाद्वैतवादिने।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च।।
दत्त्वा भोगापवर्गत्वं लभेत् साधकसत्तमः।
इति नामसहस्रं तु राज्याः शिवमुखोदितम्।
अत्यन्तदुर्लभं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।
इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये।
श्रीमहाराज्ञीसहस्रनामकम्।।

श्री महाराज्ञीसहस्त्रनामहोमः

ॐ ह्रींश्रींरांमहाराज्ञ्यै स्वाहा,
ॐ क्लींसौःपञ्चादशाक्षर्यै स्वाहा,
ॐ ह्रींस्वाहात्र्यक्षरीविद्यायै स्वाहा
ॐ पराभगवत्यै स्वाहा

1

ॐविभायै स्वाहा
ॐभास्वत्यै स्वाहा
ॐभद्रिकायै स्वाहा
ॐभीमायै स्वाहा
ॐभर्गरूपायै स्वाहा
ॐमहास्विन्यै स्वाहा
ॐमाननीयायै स्वाहा
ॐमनीषायै स्वाहा
ॐमनोजायै स्वाहा
ॐमनोजवायै स्वाहा
ॐमानदायै स्वाहा
ॐमन्त्रविद्यायै स्वाहा
ॐमहाविद्या
षडक्षर्यै स्वाहा
ॐषट्कूटायै स्वाहा
ॐत्रिकूटायै स्वाहा
ॐत्रय्यै स्वाहा
ॐवेदत्रय्यै स्वाहा
ॐशिवायै स्वाहा
ॐशिवाकारायै स्वाहा
ॐविरूपाक्ष्यै स्वाहा

2

ॐशशिखण्डावतंसिन्यैस्वाहा
ॐमहालक्ष्म्यै स्वाहा
ॐमहोरस्कायै स्वाहा
ॐमहौजस्कायै स्वाहा
ॐमहोदयायै स्वाहा
ॐमातङ्ग्यै स्वाहा
ॐमोदकाहारायै स्वाहा
ॐमदिरारुणलोचनायै स्वाहा
ॐसाध्व्यै स्वाहा
ॐशीलवत्यै स्वाहा
ॐशालायै स्वाहा
ॐसुधाकलशधारिण्यै स्वाहा
ॐखड्गिन्यै स्वाहा
ॐपद्मिन्यै स्वाहा
ॐपद्मापद्मकिञ्जल्करञ्जितायै
स्वाहा
ॐहृत्पद्मवासिन्यै स्वाहा
ॐहृद्यायै स्वाहा
ॐपानपात्रधरायै स्वाहा
ॐधरायै स्वाहा
ॐधराधरेन्द्रतनयायै स्वाहा

1	2
ॐदक्षिणायै स्वाहा	ॐशरीरमध्यस्थायै स्वाहा
ॐदक्षजायै स्वाहा	ॐवैखर्यै स्वाहा
ॐदयायै स्वाहा	ॐखेचरीश्वर्यै स्वाहा
ॐदयावत्यै स्वाहा	ॐशिवदायै स्वाहा
ॐमहामेधायै स्वाहा	ॐशिववक्षःस्थायै स्वाहा
ॐमोदिन्यै स्वाहा	ॐकालिकायै स्वाहा
ॐबोधिन्यै स्वाहा	ॐत्रिपुरा पुर्यै स्वाहा
ॐगदायै स्वाहा	ॐपुरारिकुक्षिमध्यस्थायै स्वाहा
ॐगदाधरार्चितायै स्वाहा	ॐमुरारिहृदयेश्वर्यै स्वाहा
ॐगोधायै स्वाहा	ॐबलारिराज्यदायै स्वाहा
ॐगङ्गायै स्वाहा	ॐचण्डच्चै स्वाहा
ॐगोदावर्यै स्वाहा	ॐचामुण्डायै स्वाहा
ॐगयायै स्वाहा	ॐमुण्डधारिण्यै स्वाहा
ॐमहाप्रभावसहितायै स्वाहा	ॐमुण्डमालाञ्चितायै स्वाहा
ॐमहोरगविभूषणायै स्वाहा	ॐमुद्रायै स्वाहा
ॐमहामुनिकृतातिथ्यायै स्वाहा	ॐक्षोभणायै स्वाहा
ॐमाध्व्यै स्वाहा	ॐकर्षणक्षमायै स्वाहा
ॐमानवत्यै स्वाहा	ॐब्राह्म्यै स्वाहा
ॐमघायै स्वाहा	ॐनारायणीदेव्यै स्वाहा
ॐबालायै स्वाहा	ॐकौमार्यैस्वाहा
ॐसरस्वत्यै स्वाहा	ॐअपराजितायै स्वाहा
ॐलक्ष्म्यै स्वाहा	ॐरुद्राण्यै स्वाहा
ॐदुर्गायै स्वाहा	ॐशचीन्द्राण्यै स्वाहा
ॐदुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा	ॐवाराह्यै स्वाहा
ॐशार्यै स्वाहा	ॐवीरसुन्दर्यै स्वाहा

1	2

ॐनारसिंह्यै स्वाहा
ॐभैरवेश्यै स्वाहा।।
ॐभैरवाकारभीषणायै स्वाहा
ॐनागालङ्कारशोभाढ्यायै स्वाहा
ॐनागयज्ञोपवीतिन्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनाद्दष्टं
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो
गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो
गृह्णामि।।

जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।

ॐनागकङ्कणकेयूरायै स्वाहा-१००

।। ध्यानम् ।।

उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञींभजामिविकसद्वदनारविन्दाम्।।

ॐनागहारायै स्वाहा
ॐसुरेश्वर्यै स्वाहा
ॐसुरारिघातिन्यै स्वाहा
ॐपूतायै स्वाहा

ॐपूतनायै स्वाहा
ॐडाकिनी क्रियायै स्वाहा
ॐक्रियावत्यै स्वाहा
ॐकुर्यैस्वाहा
ॐकृत्यायै स्वाहा
ॐडाकिन्यै स्वाहा
ॐलाकिन्यै स्वाहा
ॐलयायै स्वाहा
ॐलीलावत्यै स्वाहा
ॐरसाकीर्णायै स्वाहा
ॐनागकन्यायै स्वाहा
ॐमनोहरायै स्वाहा
ॐहारकङ्कणशोभाढ्यै स्वाहा
ॐसदानन्दायै स्वाहा
ॐशुभङ्कर्यै स्वाहा
ॐप्रहासिन्यै स्वाहा
ॐमधुमत्यै स्वाहा
ॐसरस्यै स्वाहा
ॐस्मरमोहिन्यै स्वाहा
ॐमहोग्रवपुष्यै स्वाहा
ॐवार्तायै स्वाहा
ॐवामाचारप्रियायै स्वाहा
ॐसिरायै स्वाहा
ॐसुधामय्यै स्वाहा
ॐवेणुकरायै स्वाहा

1	2
ॐवैरिघ्नी वीरसुन्दर्यै स्वाहा	ॐकुटच्चै स्वाहा
ॐवारिमध्यस्थितायै स्वाहा	ॐपाटीरद्रुमवल्ल्यै स्वाहा
ॐवामायै स्वाहा	ॐवटिकायै स्वाहा
ॐवामनेत्रायै स्वाहा	ॐवटुकेश्वर्यै स्वाहा
ॐशशिप्रभायै स्वाहा	ॐइष्टदायै स्वाहा
ॐशर्मदायै स्वाहा	ॐकृषिभुवे स्वाहा
ॐशङ्कर्यै स्वाहा	ॐकीर्यै स्वाहा
ॐसीतायै स्वाहा	ॐरेवतीरमणप्रियायै स्वाहा
ॐरवीन्दुशिखिलोचनायै स्वाहा	ॐरोहिण्यै स्वाहा
ॐमदिरायै स्वाहा	ॐरेवत्यै स्वाहा
ॐवारुण्यै स्वाहा	ॐरम्यायै स्वाहा
ॐवीणागीतिज्ञायै स्वाहा	ॐरमणायै स्वाहा
ॐमदिरावत्यै स्वाहा	ॐरोमहर्षिण्यै स्वाहा
ॐवटस्थायै स्वाहा	ॐरसोल्लासायै स्वाहा
ॐवारुणीशक्तये स्वाहा	ॐरसासारायै स्वाहा
ॐवटजायै स्वाहा	ॐसारिण्यै स्वाहा
ॐवटवासिन्यै स्वाहा	ॐतारिण्यै स्वाहा
ॐवटुक्यै स्वाहा	ॐतडिते स्वाहा
ॐवीरसुवे स्वाहा	ॐतरीतरित्रहस्तायै स्वाहा
ॐवन्ध्यायै स्वाहा	ॐतोतुलायै स्वाहा
ॐस्तम्भिन्यै स्वाहा	ॐतरणिप्रभायै स्वाहा
ॐमोहिन्यै स्वाहा	ॐरत्नाकरप्रियायै स्वाहा
ॐचम्वे स्वाहा	ॐरम्भायै स्वाहा
ॐमुद्गराङ्कुशहस्तायै स्वाहा	ॐरत्नालकारशोभितायै स्वाहा
ॐवराभयकरायै स्वाहा	

ॐरुक्मांगदायै स्वाहा
ॐगदाहस्तायै स्वाहा
ॐगदाधरवर प्रदायै
ॐषड्रसायै स्वाहा
ॐद्विरसायै स्वाहा
ॐमालायै स्वाहा
ॐमालाभरणभूषितायै स्वाहा
ॐमालत्यै स्वाहा
ॐमल्लिकामोदायै स्वाहा
ॐमोदका-हारवल्लभायै स्वाहा
ॐवल्लभ्यै स्वाहा
ॐमथुरायै स्वाहा
ॐकाश्यै स्वाहा
ॐकाञ्च्यै स्वाहा
ॐललन्तिकायै स्वाहा
ॐहसन्तिकायै स्वाहा
ॐहसन्त्यै स्वाहा
ॐभ्रमन्त्यै स्वाहा
ॐवसन्तिकायै
ॐक्षेमायै स्वाहा
ॐक्षामायै स्वाहा
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनादृष्टं
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा
देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा
यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणि-
विश्वानावेव सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐक्षौमवस्त्रायै स्वाहा-२००

।। ध्यानम्।।

चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्!
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्ग धारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्।।

ॐक्षणेश्वर्यै स्वाहा
ॐक्षणदायै स्वाहा
ॐक्षेमदायै स्वाहा
ॐसीरायै स्वाहा
ॐसीरपाणिसमर्चितायै स्वाहा
ॐक्रीतायै स्वाहा
ॐक्रीतातपायै स्वाहा
ॐक्रूरायै स्वाहा
ॐकमनीयायै स्वाहा
ॐकुलेश्वर्यै स्वाहा
ॐकूर्चबीजायै स्वाहा

1	2
ॐकुठाराढ्यायै स्वाहा	ॐअयोध्यायै स्वाहा
ॐकूर्मिण्यै स्वाहा	ॐयोधनीयायै स्वाहा
ॐकूर्मसुन्दर्यै स्वाहा	ॐयुगमात्रे स्वाहा
ॐकारुण्यायै स्वाहा	ॐयक्षिण्यै स्वाहा
ॐकाश्मीर्यै स्वाहा	ॐयज्ञेश्वर्यै स्वाहा
ॐदूत्यै स्वाहा	ॐयोगगम्यायै स्वाहा
ॐद्वारवत्यै स्वाहा	ॐयोगिध्येयायै स्वाहा
ॐध्रुवायै स्वाहा	ॐयशस्विन्यै स्वाहा
ॐध्रुवस्तुतायै स्वाहा	ॐयशोवत्यै स्वाहा
ॐध्रुवगतये स्वाहा	ॐचार्वङ्ग्यै स्वाहा
ॐपीठेश्यै स्वाहा	ॐचारुहासायै स्वाहा
ॐबगलामुख्यै स्वाहा	ॐचलाचलायै स्वाहा
ॐसमुख्यै स्वाहा	ॐहरीश्वर्यै स्वाहा
ॐशोभनायै स्वाहा	ॐहरेर्मायायै स्वाहा
ॐनीत्यै स्वाहा	ॐमायिन्यै स्वाहा
ॐज्वालामुख्यै स्वाहा	ॐवायुवेगिन्यै स्वाहा
ॐनतये स्वाहा	ॐअम्बालिकायै स्वाहा
ॐअलकायै स्वाहा	ॐअम्बायै स्वाहा
ॐउज्जयिन्यै स्वाहा	ॐभर्गेश्यै स्वाहा
ॐभोग्यायै स्वाहा	ॐभृगुकूटायै स्वाहा
ॐभङ्ग्यै स्वाहा	ॐमहामतये स्वाहा
ॐभोगात्यै स्वाहा	ॐकोशेश्वरीकमलायै स्वाहा
ॐबलायै स्वाहा	ॐकीर्तिदाकीर्तिवर्धिन्यै स्वाहा
ॐधर्मराजपुरीपूतायै स्वाहा	ॐकठोरवाचे स्वाहा
ॐपूर्णसत्वायै स्वाहा	ॐकुहूमूर्तये स्वाहा
ॐअमरावत्यै स्वाहा	

1	2
ॐचन्द्रबिम्बसमाननायै स्वाहा	ॐअरुणेश्यै स्वाहा
ॐचन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्ग्यै स्वाहा	ॐरतये स्वाहा
ॐकनकाचलवासिन्यै स्वाहा	ॐस्वात्यै स्वाहा।।
ॐमलयाचलसानुस्थायै स्वाहा	ॐगरिष्ठायै स्वाहा
ॐहिमाद्रितनयायै स्वाहा	ॐगरीयस्यै स्वाहा
ॐतन्वे स्वाहा	ॐमहानस्यै स्वाहा
ॐहिमाद्रिकुक्षिदेशस्थायै स्वाहा	ॐमहाकारायै स्वाहा
ॐकुब्जिकायै स्वाहा	ॐसुरासुरभयङ्कर्यै स्वाहा
ॐकोसलेश्वर्यै स्वाहा	ॐअणुरूपायै स्वाहा
ॐकारैकनिगडा गूढायै स्वाहा	ॐमहज्ज्योतिषे स्वाहा
ॐगूढगुल्फातिगोपितायै स्वाहा	ॐअनिरुद्धायै स्वाहा
ॐतनुजायै स्वाहा	ॐसरस्वत्यै स्वाहा
ॐतनुरूपायै स्वाहा	ॐश्यामायै स्वाहा
ॐचापबाणधरायै स्वाहा	ॐश्याममुख्यै स्वाहा
ॐनुतये स्वाहा	ॐशान्तायै स्वाहा
ॐधुरीणायै स्वाहा	ॐश्रान्तसन्तापहारिण्यै स्वाहा
ॐधूम्रवाराह्यै स्वाहा	ॐगोमय्यै स्वाहा
ॐधूम्रकेशायै स्वाहा	ॐगुह्यायै स्वाहा
ॐअरुणाननायै स्वाहा	

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनाद्दष्टं
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा
देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा
यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।

1	2

स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐगीतसन्तोषसंसक्तायै
स्वाहा - ३००

।। ध्यानम् ।।
दुर्गेस्मृता हरसि भीतिंअशेष जन्तोः
स्वस्थैःस्मृतामतिंअतीवशुभांददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणिकात्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय दयाद्रचित्ता।।

ॐग्राहिण्यै स्वाहा
ॐग्रहिण्यै स्वाहा
ॐग्रहायै स्वाहा
ॐगणप्रियायै स्वाहा
ॐगजगतये स्वाहा
ॐगान्धार्यै स्वाहा
ॐगन्धमोदिन्यै स्वाहा
ॐगन्धमादनसानुस्थायै
स्वाहा
ॐसह्याचलकृतालयायै
स्वाहा
ॐगजाननप्रियायै स्वाहा
ॐगव्यायै स्वाहा
ॐग्राहिकायै स्वाहा
ॐग्राहवाहनायै स्वाहा

ॐगुहप्रसुवे स्वाहा
ॐगुहावासायै स्वाहा
ॐग्रहमालाविभूषणायै
ॐकौबीर्यै स्वाहा
ॐकुहकाभ्रान्त्यै स्वाहा
ॐतर्कविद्यायै स्वाहा
ॐप्रियङ्कर्यै स्वाहा
ॐपीताम्बरायै स्वाहा
ॐपटाकारायै स्वाहा
ॐपताकायै स्वाहा
ॐसृष्टिजायै स्वाहा
ॐसुधायै स्वाहा
ॐदाक्षायणी
दक्षसुतायै स्वाहा
ॐदक्षयज्ञविनाशिन्यै
स्वाहा
ॐताराचक्रस्थिता
तारायै स्वाहा
ॐतुर्यायै स्वाहा
ॐतुटये स्वाहा
ॐतुलायै स्वाहा
ॐसन्ध्यात्रय्यै स्वाहा
ॐसन्धिजरायै स्वाहा
ॐसन्ध्यायै स्वाहा
ॐतारुण्यललितायै
स्वाहा

1

ॐललितायै स्वाहा
ॐलोहितायै स्वाहा
ॐलुम्पायै स्वाहा
ॐचम्पायै स्वाहा
ॐकम्पाकुलासृणये स्वाहा
ॐसृतये स्वाहा
ॐसत्यवत्यै स्वाहा
ॐस्वस्थायै स्वाहा
ॐसमानायै मानवर्धिन्यै स्वाहा
ॐमहोमय्यै स्वाहा
ॐमनस्तुष्ट्यै स्वाहा
ॐकामधेनुः सनातन्यै स्वाहा
ॐसूक्ष्मरूपायै स्वाहा
ॐसूक्ष्ममुख्यै स्वाहा
ॐस्थूलरूपायै स्वाहा
ॐकलावत्यै स्वाहा
ॐतलातलाश्रयायै स्वाहा
ॐसिन्धवे स्वाहा
ॐत्र्यम्बिकायै स्वाहा
ॐलम्पिकाजयायै स्वाहा
ॐसौदामिन्यै स्वाहा

2

ॐसुधादेव्यै स्वाहा
ॐसनकर्षिसमर्चितायै स्वाहा
ॐमन्दाकिन्यै स्वाहा
ॐयमुनायै स्वाहा
ॐविपाशायै स्वाहा
ॐनर्मदानद्यै स्वाहा
ॐगण्डक्यै स्वाहा
ॐइरावत्यै स्वाहा
ॐसिप्रायै स्वाहा
ॐवितस्तायै स्वाहा
ॐसरस्वत्यै स्वाहा
ॐरेवायै स्वाहा
ॐऐरावत्यै स्वाहा
ॐइक्षुमत्यै स्वाहा
ॐसागरवासिन्यै स्वाहा
ॐदेवकीदेवमात्रे स्वाहा
ॐदेवेश्यै स्वाहा
ॐदेवसुन्दर्यै स्वाहा
ॐदैत्यघ्न्यै स्वाहा
ॐदमन्यै स्वाहा
ॐदात्र्यै स्वाहा
ॐदित्यै स्वाहा
ॐदितिजसुन्दर्यै स्वाहा
ॐविद्याधर्यै स्वाहा
ॐविद्येश्यै स्वाहा

1	2
ॐविद्याधरजसुन्दर्यै स्वाहा	यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
ॐमेनकायै स्वाहा	जातवेदसे सुनवाम
ॐचित्रलेखायै स्वाहा	सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
ॐचित्रिण्यै स्वाहा	स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
ॐतिलोत्तमायै स्वाहा	सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐउर्वश्यै स्वाहा	ॐगन्धर्वतनयायै स्वाहा- ४००
ॐमोहिन्यै स्वाहा	।। ध्यानं ।।
ॐरम्भायै स्वाहा	मेधासिदेवि!विदिताखिलशास्त्रसारा
ॐअप्सरोगणसुन्दर्यै स्वाहा	दुर्गासिदुर्गभवसागरनौरसङ्गा
ॐयक्षिण्यै स्वाहा	श्रीकैटभारिहृदयैककृताधिवासा
ॐयक्षलोकेश्यै स्वाहा	गौरीत्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।
ॐनरवाहनपूजितायै स्वाहा	ॐगन्धर्वसुन्दर्यै स्वाहा
ॐयक्षेन्द्रतनयायै स्वाहा	ॐमन्दोदर्यै स्वाहा
ॐयोग्यायै स्वाहा	ॐकरालाक्ष्यै स्वाहा
ॐयक्षनायकसुन्दर्यै स्वाहा	ॐमेघनाद वरप्रदायै स्वाहा
ॐगन्धवत्यै स्वाहा	ॐमेघवाहनसन्तुष्टायै स्वाहा
ॐचितागन्धायै स्वाहा	ॐमेघमूर्ति राक्षस्यै स्वाहा
ॐसुगन्धायै स्वाहा	ॐरक्षोहन्त्र्यै स्वाहा
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि	ॐकेकस्यै स्वाहा
धामासि प्रियन्देवानामनादृष्टं	ॐरक्षोनायकसुन्दर्यै स्वाहा
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा	ॐकिन्नर्यै स्वाहा
देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा	ॐकम्बुकण्ठ्यै स्वाहा
	ॐकलकण्ठस्वनायै स्वाहा
	ॐसुधायै स्वाहा

1	2
ॐकिंमुखहयवक्त्रायै स्वाहा	ॐपार्थिवलोकेश्यै स्वाहा
ॐकेलायै स्वाहा	ॐपृथाविष्णुसमर्चितायै स्वाहा
ॐकिन्नरसुन्दर्यै स्वाहा	ॐवसुन्धरायै स्वाहा
ॐराजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थितायै स्वाहा	ॐवसुनतायै स्वाहा
ॐमहापिशाचिन्यै स्वाहा	ॐपृथिव्यै स्वाहा
ॐचान्द्र्यै स्वाहा	ॐभूमिसुन्दर्यै स्वाहा
ॐपिशाचकुलसुन्दर्यै स्वाहा	ॐअम्भोधितनयायै स्वाहा
ॐगुह्येश्वर्यै स्वाहा	ॐअलुप्तायै स्वाहा
ॐगुह्यरूपायै स्वाहा	ॐजलजाक्षी जलेश्वर्यै स्वाहा
ॐगुर्व्यै स्वाहा	ॐअमूर्तिरम्मयै स्वाहा
ॐगुह्यकसुन्दर्यै स्वाहा	ॐमार्यै स्वाहा
ॐसिद्धिप्रदासिद्धवध्व्यै स्वाहा	ॐजलस्थायै स्वाहा
ॐसिद्धेश्यै स्वाहा	ॐजलसुन्दर्यै स्वाहा
ॐसिद्धसुन्दर्यै स्वाहा	ॐतेजस्विन्यै स्वाहा
ॐभूतेश्वर्यै स्वाहा	ॐमहोधात्र्यै स्वाहा
ॐभूतलया भूतधात्र्यै स्वाहा	ॐतेजसी सूर्यबिम्बगायै स्वाहा
ॐभयापहायै स्वाहा	ॐसूर्यकांति सूर्यतेजसे स्वाहा
ॐभूतभीतिहर्यै स्वाहा	ॐतेजोरूपैकसुन्दर्यै स्वाहा
ॐभव्यायै स्वाहा	ॐवायुवाहायै स्वाहा
ॐभूतजायै स्वाहा	ॐवायुमुख्यै स्वाहा
ॐभूतसुन्दर्यै स्वाहा	

1	2
ॐवायुलोकैकसुन्दर्यै स्वाहा	ॐउदानव्यानरूपिण्यै स्वाहा
ॐगगनस्थायै स्वाहा	ॐपञ्चवातगतये स्वाहा
ॐखेचरीश्यै स्वाहा	ॐनाडीरूपिण्यै स्वाहा
ॐशून्यरूपायै स्वाहा	ॐवातसुन्दर्यै स्वाहा
ॐनिराकृतये स्वाहा	ॐअग्निरूपायै स्वाहा
ॐनिराभासायै स्वाहा	ॐवह्निशिखायै स्वाहा
ॐभासमाना द्युतये स्वाहा	ॐवडवानलसन्निभायै स्वाहा
ॐआकाशसुन्दर्यै स्वाहा	ॐहेतये स्वाहा
ॐक्षितिमूर्तिधरायै स्वाहा	ॐहविर्हुतज्योतिषे स्वाहा
ॐअनन्तायै स्वाहा	ॐवह्निसुन्दर्यै स्वाहा
ॐक्षितिभृत लोकसुन्दर्यै स्वाहा	ॐसोमेश्वर्यै स्वाहा
ॐअब्धियानायै स्वाहा	ॐसोमकलायै स्वाहा
ॐरत्नशोभायै स्वाहा	ॐसोमपानपरायणायै स्वाहा
ॐवरुणेश्यै स्वाहा	ॐसौम्याननायै स्वाहा
ॐवरायुधायै स्वाहा	ॐसौम्यरूपायै स्वाहा
ॐपाशहस्तायै स्वाहा	ॐसोमस्थायै स्वाहा
ॐपोषणायै स्वाहा	ॐसोमसुन्दर्यै स्वाहा
ॐवरुणेश्वरसुन्दर्यै स्वाहा	ॐसूर्यप्रभासूर्यमुख्यै स्वाहा
ॐअनलैकरुचये स्वाहा	ॐसूर्यजायै स्वाहा
ॐज्योतिषे स्वाहा	ॐसूर्यसुन्दर्यै स्वाहा
ॐपञ्चानिलगतिस्थितये स्वाहा	ॐयज्ञभागेच्छायै स्वाहा
ॐप्राणापानसमानेच्छायै स्वाहा	ॐयजमानवरप्रदायै स्वाहा

1	2
ॐयाजकीयज्ञ विद्यायै स्वाहा	ॐकूर्मपृष्टगताकूर्म्यै स्वाहा
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि-	ॐकूर्मरूपिण्यै स्वाहा
धामासिप्रियन्देवानामनाधृष्टं	ॐवाराह्यै स्वाहा
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो	ॐवीरसुवे स्वाहा
गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो	ॐबर्ह्यायै स्वाहा
गृह्णामि।।	ॐवरारोहायै स्वाहा
जातवेदसे सुनवाम	ॐमृगेक्षणायै स्वाहा
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।	ॐवराहमूर्तये स्वाहा
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वा-	ॐवाचालायै स्वाहा
नावेव सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।	ॐदंष्ट्रायै स्वाहा
ॐयजमानैकसुन्दर्यै स्वाहा-५००	ॐवराहसुन्दर्यै स्वाहा
	ॐनारसिंहाकृतये देव्यै स्वाहा
।। ध्यानम् ।।	ॐदुष्टदैत्यनिषूदनायै स्वाहा
हन्तुंत्वमेवभवसित्वदधीनमीशे	ॐप्रद्युम्नवरदायै स्वाहा
संसारतापमखिलंदययापशूनां।	ॐनरसिंहैकसुन्दर्यै स्वाहा
वैकर्तनीकिरण संहतिरेवशक्ता	ॐवामना कारायै स्वाहा
घर्मंनिजंशमयितुंनिजयैववृष्ट्या।।	ॐनारायणपरायणायै स्वाहा
ॐआकाशगामिन्यै स्वाहा	ॐबलिदानवदर्पघ्न्यै स्वाहा
ॐवन्ध्यायै स्वाहा	ॐवामनसुन्दर्यै स्वाहा
ॐशब्दजायै स्वाहा	ॐरामप्रियायै स्वाहा
ॐआकाशसुन्दर्यै स्वाहा	ॐरामकीलायै स्वाहा
ॐमीनप्रियायै स्वाहा	ॐक्षत्रवंशक्षयङ्कर्यै स्वाहा
ॐमीननेत्रायै स्वाहा	
ॐमीनाशायै स्वाहा	
ॐमीनसुन्दर्यै स्वाहा	

1	2
ॐदनुपुत्र्यै स्वाहा	ॐराधायै स्वाहा
ॐराजकन्यायै स्वाहा	ॐश्रीकृष्णसुन्दर्यै स्वाहा
ॐरामायै स्वाहा	ॐबुद्धप्रसूबुद्धदेव्यै स्वाहा
ॐपरशुधारिण्यै स्वाहा	ॐजिनमार्गपरायणायै स्वाहा
ॐभार्गव्यै स्वाहा	ॐजितक्रोधायै स्वाहा
ॐभार्गवेष्टायै स्वाहा	ॐजितालस्यायै स्वाहा
ॐजामदग्निवरप्रदायै स्वाहा	ॐजिनसेव्यायै स्वाहा
ॐकुठारधारण्यै स्वाहा	ॐजितेन्द्रियायै स्वाहा
ॐजामदग्न्यैकसुन्दर्यै स्वाहा	ॐजिनवंशधरोग्रायै स्वाहा
ॐसीतायै स्वाहा	ॐनीलान्तायै स्वाहा
ॐलक्ष्मणसेव्यायै स्वाहा	ॐबुद्धसुन्दर्यै स्वाहा
ॐरक्षःकुलविनाशिन्यै स्वाहा	ॐकाल्यै स्वाहा
ॐरामप्रियायै स्वाहा	ॐकोलाहलप्रीतायै स्वाहा
ॐशत्रुघ्न्यै स्वाहा	ॐप्रेतवाहायै स्वाहा
ॐशत्रुघ्नभरतेष्टदायै स्वाहा	ॐसुरीश्वर्यै स्वाहा
ॐलावण्यामृतधाराढ्यायै स्वाहा	ॐकल्किप्रियायै स्वाहा
ॐलवणासुरघातिन्यै स्वाहा	ॐकम्बुधरायै स्वाहा
ॐलोहितास्यायै स्वाहा	ॐकलिकालैकसुन्दर्यै स्वाहा
ॐप्रसन्नास्यायै स्वाहा	ॐविष्णुमायायै स्वाहा
ॐस्वारामायै स्वाहा	ॐब्रह्ममायायै
ॐरामसुन्दर्यै स्वाहा	ॐशाम्भव्यै स्वाहा
ॐकृष्णाकेशायै स्वाहा	ॐशववाहनायै स्वाहा
ॐकृष्णमुख्यै स्वाहा	ॐइन्द्रावरजवक्षःस्थायै स्वाहा
ॐयादवान्तकरीलयायै स्वाहा	ॐस्थाणुपत्न्यै स्वाहा
ॐयादोगणार्चितायै स्वाहा	

ॐपलालिन्यै स्वाहा
ॐजृम्भिनीजृम्भहर्त्र्यै
स्वाहा
ॐजृम्बमानकचालकायै
स्वाहा
ॐकुलाकुलपदेशान्यै
स्वाहा
ॐपददानफलप्रदायै
स्वाहा
ॐकुलवागीश्वर्यै स्वाहा
ॐकुल्यायै स्वाहा
ॐकुलजायै स्वाहा
ॐकुलसुन्दर्यै स्वाहा
ॐपुरन्दरेष्टायै स्वाहा
ॐतारुण्यालयायै
स्वाहा
ॐपुण्यजनेश्वर्यै स्वाहा
ॐपुण्योत्साहायै स्वाहा
ॐपापहन्त्र्यै स्वाहा
ॐपाकशासनसुन्दर्यै
स्वाहा
ॐसूर्यकोटिप्रतीकाशायै
स्वाहा
ॐसूर्यतेजोमय्यै स्वाहा
ॐमध्यै स्वाहा
ॐलीखन्यै स्वाहा

ॐभ्राजितायै स्वाहा
ॐरज्जुरूपिण्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनाहृष्टं
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा
देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा
यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।

ॐसूर्यसुन्दर्यै स्वाहा - ६००

।। ध्यानम् ।।

विद्यापरांकतिचिदम्बरमम्बकेचित्
आनन्दमेवकतिचित्कतिचित्चमायां।
त्वांविश्वंआहुःअपरेवयंआमनाम
साक्षात् अपारकरुणांशिवशक्तिमेव।।

ॐचन्द्रिकायै स्वाहा
ॐसुधाधाराज्योत्स्नायै
स्वाहा
ॐशीतांशुसुन्दर्यै स्वाहा
ॐलोलाक्ष्यै स्वाहा
ॐशताक्ष्यै स्वाहा
ॐसहस्राक्ष्यै स्वाहा

1	2
ॐसहस्त्रपदे स्वाहा	ॐबिन्दुरूपायै स्वाहा
ॐसहस्त्रशीर्षायै स्वाहा	ॐचक्रयोनये स्वाहा
ॐइन्द्राक्ष्यै स्वाहा	ॐबिन्दुनादस्वरूपिण्यै स्वाहा
ॐसहस्त्रभुजवल्लिकायै स्वाहा	ॐचक्रेश्वर्यै स्वाहा
ॐकोटिरत्नांशुभोभायै स्वाहा	ॐभैरवेश्यै स्वाहा
ॐशुभ्रवस्त्रायै स्वाहा	ॐमहाभैरववल्लभायै स्वाहा
ॐशताननायै स्वाहा	ॐकालभैरवभार्यायै स्वाहा
ॐशतानन्दायै स्वाहा	ॐकल्पान्तरङ्गनर्तक्यै स्वाहा
ॐश्रुतिधरायै स्वाहा	ॐप्रलयानलधूम्राभायै स्वाहा
ॐपिङ्गलायै स्वाहा	ॐयोनिमध्यकृतालयायै स्वाहा
ॐउग्रनादिन्यै स्वाहा	ॐभूचरीखेचरीमुद्रायै स्वाहा
ॐसुषुम्णायै स्वाहा	ॐनवमुद्राविलासिन्यै स्वाहा
ॐहारकेयूरनूपुराराव-संकुलायै स्वाहा	ॐवियोगिन्यै स्वाहा
ॐघोरनादायै स्वाहा	ॐश्मशानस्थायै स्वाहा
ॐघोरमुख्यै स्वाहा	ॐश्मशानार्चनतोषितायै स्वाहा
ॐउन्मुखीउल्मुकायुधायै स्वाहा	ॐभास्वराङ्गभर्गशिखायै स्वाहा
ॐगोपितायै स्वाहा	ॐभर्गवामाङ्गवासिन्यै स्वाहा
ॐगूर्जर्यै स्वाहा	ॐभद्रकाल्यै स्वाहा
ॐगाथायै स्वाहा	ॐविश्वकाल्यै स्वाहा
ॐगायत्र्यैवेदवल्लभायै स्वाहा	ॐश्रीकाल्यै स्वाहा
ॐवल्लकीस्वननादायै स्वाहा	ॐमेघकालिकायै स्वाहा
ॐनादविद्यायै स्वाहा	ॐनीरकाल्यै स्वाहा

1	2
ॐकालरात्र्यै स्वाहा	ॐत्र्यक्षर्यै स्वाहा
ॐकाल्यै स्वाहा	ॐत्र्यक्षरीदेव्यै स्वाहा
ॐकामेशकालिकायै स्वाहा	ॐभावनायै स्वाहा
ॐइन्द्रकाल्यै स्वाहा	ॐभुवनेश्वर्यै स्वाहा
ॐपूर्वकाल्यै स्वाहा	ॐएकाक्षर्यै स्वाहा
ॐपश्चिमाम्नायकालिकायै स्वाहा	ॐचतुष्कूटायै स्वाहा
ॐश्मशानकालिकायै स्वाहा	ॐत्रिकूटेश्यै स्वाहा
ॐभद्रकाल्यैस्वाहा	ॐलयेश्वर्यै स्वाहा
ॐश्रीकृष्णकालिकायै स्वाहा	ॐचतुर्वर्णायै स्वाहा
ॐक्रींकारोत्तरकाल्यै स्वाहा	ॐवर्णेशी वर्णाढ्यायै स्वाहा
ॐश्रीहुंह्रींदक्षिणकालिकायै स्वाहा	ॐचतुरक्षर्यै स्वाहा
ॐसुन्दरी त्रिपुरेशान्यै स्वाहा	ॐपञ्चाक्षर्यै स्वाहा
ॐत्रिकूटा त्रिपुरार्चितायै स्वाहा	ॐषडवक्त्रायै स्वाहा
ॐत्रिनेत्रायै स्वाहा	ॐषट्कूटायै स्वाहा
ॐत्रिपुराध्यक्षायै स्वाहा	ॐषडक्षर्यै स्वाहा
ॐत्रिपुटायै स्वाहा	ॐसप्ताक्षर्यै स्वाहा
ॐपुटभैरव्यै स्वाहा	ॐनवानेव्यै स्वाहा
ॐत्रिलोकजनन्यै स्वाहा	ॐपरमाष्टाक्षरीश्वर्यै स्वाहा
ॐत्रेतायै स्वाहा	ॐनवम्यै स्वाहा
ॐमहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा	ॐपञ्चम्यै स्वाहा
ॐकामेश्वरीकाम कलायै स्वाहा	ॐषष्ठ्यै स्वाहा
ॐकालकामेशसुन्दर्यै स्वाहा	ॐनागेश्यै स्वाहा
	ॐनवाक्षर्यै स्वाहा
	ॐदशाक्षर्यै स्वाहा

1	2

ॐदशास्येश्यै स्वाहा
ॐदेविकायै स्वाहा
ॐएकादशाक्षर्यै स्वाहा
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टं
देवयजनं देवताभ्यस्त्वा
देवताभ्यो गृह्णामि
देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐद्वादशादित्यसङ्काशायै
स्वाहा - ७००

।। ध्यानम्।।
निर्गुणे ! निष्कले ! नित्ये !
सच्चिदानन्द रूपिणि !
नमस्तुते महाराज्ञि !
पाहिमांशरणागतम्।।

ॐद्वादश्यै स्वाहा
ॐद्वादशाक्षर्यै स्वाहा
ॐत्रयोदश्यै स्वाहा
ॐवेदगर्भायै स्वाहा
ॐवाद्यायै स्वाहा

ॐत्रयोदशाक्षर्यै स्वाहा
ॐचतुर्दशाक्षर्यै स्वाहा
ॐविद्यायै स्वाहा
ॐपञ्चदशाक्षरीविद्यायै
स्वाहा
ॐषोडशीविद्यायै स्वाहा
ॐसर्वविद्येश्यै स्वाहा
ॐमहाश्रीषोडशाक्षर्यै
स्वाहा
ॐमहाश्रीषोडशीविद्यायै
स्वाहा
ॐचिन्तामणिमनुप्रियायै
स्वाहा
ॐद्वाविंशत्यक्षर्यै स्वाहा
ॐश्यामायै स्वाहा
ॐमहाकालकुटुम्बिन्यै
स्वाहा
ॐवज्रतारायै स्वाहा
ॐकालतारायै स्वाहा
ॐनारीतारायै स्वाहा
ॐउग्रतारिण्यै स्वाहा
ॐकामतारायै स्वाहा
ॐशब्दतारायै स्वाहा
ॐस्पर्शतारायै स्वाहा
ॐरसाश्रयायै स्वाहा
ॐरूपतारायै स्वाहा

1	2
ॐगन्धतारायै स्वाहा	ॐदीक्षितपूजितायै स्वाहा
ॐमहानीलासरस्वत्यै स्वाहा	ॐसाधकेश्यै स्वाहा
ॐकामज्वालायै स्वाहा	ॐसिद्धिदात्र्यै स्वाहा
ॐवह्निज्वालायै स्वाहा	ॐसाधकानन्दवर्धिन्यै स्वाहा
ॐब्रह्मज्वालायै स्वाहा	ॐसाधकाश्रयभूतायै स्वाहा
ॐजटाकुलायै स्वाहा	ॐसाधकेष्टफलप्रदायै स्वाहा
ॐविष्णुज्वालायै स्वाहा	ॐरजोवत्यै स्वाहा
ॐजिष्णुशिखायै	ॐराजस्यै स्वाहा
ॐभद्रज्वालायै स्वाहा	ॐरजक्यै स्वाहा
ॐकरालिन्यै स्वाहा	ॐरजस्वलायै स्वाहा
ॐविकरालमुखीदेव्यै स्वाहा	ॐपुष्पप्रियायै स्वाहा
ॐकराल्यै स्वाहा	ॐपुष्पवत्यै स्वाहा
ॐभूतिभूषणायै स्वाहा	ॐखयम्भुवे स्वाहा
ॐचिताशयासनायै स्वाहा	ॐपुष्पमालिकायै स्वाहा
ॐचिन्तायै स्वाहा	ॐखयम्भूपुष्पगन्धाढ्यायै स्वाहा
ॐचिन्तामण्डलमध्यगायै स्वाहा	ॐपुलस्त्यसुतघातिन्यै स्वाहा
ॐभूतभैरवसेव्यायै स्वाहा	ॐपात्रहस्तायै स्वाहा
ॐभूतभैरवपालिन्यै स्वाहा	ॐपीतास्यायै स्वाहा
ॐबन्धक्यै स्वाहा	ॐसुतापोत्र्यै स्वाहा
ॐबद्धसंमुद्रायै स्वाहा	ॐपीतभूषणायै स्वाहा
ॐभवबन्धविनाशिन्यै स्वाहा	ॐपिङ्गनायै स्वाहा
ॐभवान्यै स्वाहा	
ॐदेवदेवेश्यै स्वाहा	
ॐदीक्षायै स्वाहा	

ॐपिङ्गकेश्यै स्वाहा
ॐपिङ्गलायै, स्वाहा
ॐपिङ्गलेश्वर्यै स्वाहा
ॐमङ्गलायै स्वाहा
ॐमङ्गलेशान्यै स्वाहा
ॐसर्वमङ्गलमङ्गलायै
स्वाहा
ॐपुरूरवेश्वर्यै स्वाहा
ॐपाशधरायै स्वाहा
ॐचापधरायै स्वाहा
ॐअध्वरायै स्वाहा
ॐपुण्यधात्रीपुण्यमय्यै
स्वाहा
ॐपुण्यलोकनिवासिन्यै
स्वाहा
ॐहोतृसेव्यायै स्वाहा
ॐहकारस्थायै स्वाहा
ॐसकारस्थायै स्वाहा
ॐसुखावत्यै स्वाहा
ॐसख्यै स्वाहा
ॐशोभावत्यै स्वाहा
ॐसत्यायै स्वाहा
ॐसत्याचारपरायणायै
ॐसतीदेव्यै स्वाहा
ॐईशानकलेशान्यै स्वाहा

ॐवामदेवकलाश्रितायै
स्वाहा
ॐसद्योजातकलादेव्यै
स्वाहा
ॐशिवायै स्वाहा
ॐअघोरकलाकृत्यै स्वाहा
ॐशर्वर्यै स्वाहा
ॐक्षीरसदृश्यै स्वाहा
तेजोसि।।
ॐक्षीरनीरविवेकिन्यै
स्वाहा - ८००

।। ध्यानम्।।
स्तुतासुरैःपूर्वंअभीष्टसंश्रयात्
तथा सुरेन्द्रेणदिनेषुसेविता।
करोतुसानःशुभहेतुरीश्वरी
शुभानिभद्राण्यभिहन्तुचापदः।।

ॐवितर्कनिलयायै स्वाहा
ॐनित्यानित्यक्लिन्नायै स्वाहा
ॐपराम्बिकायै स्वाहा
ॐपुरारिदयितायै स्वाहा
ॐदीर्घायै स्वाहा
ॐदीर्घनासायै स्वाहा
ॐअल्पभाषिण्यै स्वाहा
ॐकाशिकायै स्वाहा

1

ॐकौशिक्यै स्वाहा
ॐकौश्याकोशदायै स्वाहा
ॐ[illegible]पवर्धिन्यै स्वाहा
ॐतुष्ट्यै स्वाहा
ॐपुष्ट्यै स्वाहा
ॐप्रजाप्रीतायै स्वाहा
ॐप्राजिकायै स्वाहा
ॐपूजकप्रियायै स्वाहा
ॐप्रजावत्यै स्वाहा
ॐगर्भवत्यै स्वाहा
ॐगर्भपोषणपोषितायै स्वाहा
ॐशुक्लवाससे स्वाहा
ॐशुक्लरूपायै स्वाहा
ॐशुचिवाससे स्वाहा
ॐजयावहायै स्वाहा
ॐजानक्यै स्वाहा
ॐजन्यजनकायै स्वाहा
ॐजनतोषणतत्परायै स्वाहा
ॐवादप्रियावाद्यरतायै स्वाहा
ॐवादितायै स्वाहा
ॐवादसुन्दर्यै स्वाहा
ॐवाक्स्तम्भिन्यै स्वाहा
ॐकीरवाण्यै स्वाहा
ॐधीराधीरायै स्वाहा
ॐधुरन्धर्यै स्वाहा
ॐस्तनन्धय्यै स्वाहा

2

ॐसामिधेन्यै स्वाहा
ॐनिरानन्दायै स्वाहा
ॐनिरालयायै स्वाहा
ॐसमस्तसुखदायै स्वाहा
ॐसारायै स्वाहा
ॐवारांनिधिवरप्रदायै स्वाहा
ॐवालुक्यै स्वाहा
ॐवीरपानेष्टायै स्वाहा
ॐवसुदात्र्यै स्वाहा
ॐवसुप्रियायै स्वाहा
ॐशुक्रनान्दायै स्वाहा
ॐशुक्ररसायै स्वाहा
ॐशुक्रपूज्यायै स्वाहा
ॐशुकप्रियायै स्वाहा
ॐशुक्यै स्वाहा
ॐशुकहस्तायै स्वाहा
ॐसमस्तनरकान्तकायै स्वाहा
ॐसमस्ततत्त्वनिलायै स्वाहा
ॐभगरूपाभगेश्वर्यै स्वाहा
ॐभगबिम्बायै स्वाहा
ॐभगायै स्वाहा
ॐहृद्यायै स्वाहा
ॐभगलिङ्गस्वरूपिण्यै स्वाहा
ॐभगलिङ्गेश्वर्यै स्वाहा

1

ॐश्रीदायै स्वाहा
ॐभगलिङ्गाऽमृतस्रवायै स्वाहा
ॐक्षीराशनायै स्वाहा
ॐक्षीररुचयै स्वाहा
ॐआज्यपानपरायणायै स्वाहा
ॐमधुपानपराप्रौढायै स्वाहा
ॐपीवरांसायै स्वाहा
ॐपरम्परायै स्वाहा
ॐपिलम्पिलायै स्वाहा
ॐपटोलेशायै स्वाहा
ॐपाटलायै स्वाहा
ॐअरुणलोचनायै स्वाहा
ॐक्षीराम्बुधिप्रियायै स्वाहा
ॐक्षीबायै स्वाहा
ॐसरलायै स्वाहा
ॐसरलायुधायै स्वाहा
ॐसंग्रामायै स्वाहा
ॐसुनयायै स्वाहा
ॐस्रस्तायै स्वाहा
ॐसंसृतये स्वाहा
ॐसनकेश्वर्यै स्वाहा

2

ॐकन्याकनकरेखायै स्वाहा
ॐकान्यकुब्जनिवासिन्यै स्वाहा
ॐकाञ्चनाभतन्व्यै स्वाहा
ॐकाष्ठायै स्वाहा
ॐकुष्ठरोगविनाशिन्यै स्वाहा
ॐकठोरमूर्धजायै स्वाहा
ॐकुन्त्यै स्वाहा
ॐकुन्तायुधधरायै स्वाहा
ॐधृत्यै स्वाहा
ॐचर्माम्बरायै स्वाहा
ॐकूरनखायै स्वाहा
ॐचकोराक्ष्यै स्वाहा
ॐचतुर्भुजायै स्वाहा
ॐचतुर्वेदप्रियायै स्वाहा
ॐचाटव्यै स्वाहा
ॐचतुर्वर्गफलप्रदायै स्वाहा
ॐब्रह्माण्डचारिण्यै स्वाहा
ॐस्फूर्तये स्वाहा
ॐब्रह्माणीब्रह्मसंमतायै स्वाहा
ॐसत्कारकारिण्यै स्वाहा
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
धामासि प्रियन्देवानामनादृष्टं

1	2

देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो
गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो
गृह्णामि।।
जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐलतिकायैलतायै स्वाहा-१००

।। ध्यानम्।।
या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरिका
सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम्।।

ॐकल्पवल्ल्यै स्वाहा
ॐकृशांग्यै स्वाहा
ॐकल्पपादपवासिन्यै
स्वाहा
ॐकल्पपाशायै स्वाहा
ॐमहाविद्यायै स्वाहा
ॐविद्याराज्ञीसुखाश्रयायै
स्वाहा
ॐभूतराज्यै स्वाहा
ॐविश्वराज्यै स्वाहा

ॐलोकराज्यै स्वाहा
ॐशिवाश्रयायै स्वाहा
ॐब्रह्मराज्यै स्वाहा
ॐविष्णुराज्यै स्वाहा
ॐरुद्रराज्यै स्वाहा
ॐजटाश्रयायै स्वाहा
ॐनागराज्यै स्वाहा
ॐवंशराज्यै स्वाहा
ॐवीरराज्यै स्वाहा
ॐरजःप्रियायै स्वाहा
ॐसत्वराज्यै स्वाहा
ॐतमोराज्यै स्वाहा
ॐगुणराज्यै स्वाहा
ॐचलाचलायै स्वाहा
ॐवसुराज्यै स्वाहा
ॐसत्यराज्यै स्वाहा
ॐतपोराज्यै स्वाहा
ॐजपप्रियायै स्वाहा
ॐमन्त्रराज्यै स्वाहा
ॐवेदराज्यै स्वाहा
ॐतन्त्रराज्यै स्वाहा
ॐश्रुतिप्रियायै स्वाहा
ॐमन्त्रिराज्यै स्वाहा
ॐदैत्यराज्ञीहराश्रयायै
स्वाहा

1	2
ॐप्रजाराज्यै स्वाहा	ॐराज्यराज्यै स्वाहा
ॐतेजोराज्ञीहराश्रयायै स्वाहा	ॐरतिप्रियायै स्वाहा
ॐपृथ्वीराज्यै स्वाहा	ॐपातालराज्यै स्वाहा
ॐपयोराज्यै स्वाहा	ॐभूराज्यै स्वाहा
ॐवायुराज्ञीमदालसायै स्वाहा	ॐविषापहायै स्वाहा
ॐसुराराज्यै स्वाहा	ॐसिद्धराज्यै स्वाहा
ॐसुधाराज्यै स्वाहा	ॐविभाराज्यै स्वाहा
ॐभीमराज्ञीभयोज्झितायै स्वाहा	ॐचन्द्रराज्यै स्वाहा
ॐतथ्यराज्यै स्वाहा	ॐताराराज्यै स्वाहा
ॐजयाराज्यै स्वाहा	ॐखवासिन्यै स्वाहा
ॐमहाराज्यै स्वाहा	ॐग्रहराज्यै स्वाहा
ॐकुलाकृतये स्वाहा	ॐलताराज्यै स्वाहा
ॐवामराज्यै स्वाहा	ॐवृक्षराज्यै स्वाहा
ॐहरिराज्ञी हलीश्वर्यै स्वाहा	ॐमतिप्रदायै स्वाहा
ॐपराराज्यै स्वाहा	ॐधीरराज्यै स्वाहा
ॐयक्षराज्यै स्वाहा	ॐमनोराज्यै स्वाहा
ॐभूतराज्ञीशिवासनायै स्वाहा	ॐमनुराज्यै स्वाहा
ॐवटुराज्यै स्वाहा	ॐकाश्यप्यै स्वाहा
ॐप्रेतराज्यै स्वाहा	ॐमुनिराज्यै स्वाहा
ॐशेषराज्यै स्वाहा	ॐरत्नराज्यै स्वाहा
ॐशमप्रदायै स्वाहा	ॐयुगराज्यै स्वाहा
ॐआकाशराज्यै स्वाहा	ॐमणिप्रभायै स्वाहा
	ॐसिन्धुराज्यै स्वाहा
	ॐनदीराज्यै स्वाहा
	ॐदरीस्थितायै स्वाहा
	ॐबिन्दुराज्यै स्वाहा

1	2
ॐनादराज्यै स्वाहा	ॐवाक्राज्यै स्वाहा
ॐआत्मराज्यै स्वाहा	ॐविश्वरूपिण्यै स्वाहा
ॐसद्गतये स्वाहा	ॐपंचदशाक्षरीराज्यै स्वाहा
ॐध्यानराज्यै स्वाहा	तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि
ॐसदीश्वर्यै स्वाहा	धामासि प्रियन्देवानामनादृष्टं
ॐईशानराज्यै स्वाहा	देवयजनं देवताभ्यस्त्वा
ॐस्वाहाराज्यै स्वाहा	देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा
ॐमहत्तराये स्वाहा	यज्ञेभ्यो गृह्णामि।।
ॐवह्निराज्यै स्वाहा	जातवेदसे सुनवाम
ॐयोगिराज्यै स्वाहा	सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
ॐयज्ञराज्यै स्वाहा	स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेव
ॐचिदाकृतये स्वाहा	सिन्धुंदुरितात्यग्निः।।
ॐजगत्राज्यै स्वाहा	ॐ भूतेश्वरीश्वर्यै स्वाहा
ॐतत्त्वराज्यै स्वाहा	

इति श्रीमहाराज्ञीसहस्त्रनामस्तुतिः

अनेन महाराज्ञी सहस्त्रनाम होमेन महाराज्ञी भगवती प्रसन्ना भवतु।

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं राज्ञीनामसहस्रकम्॥
पञ्चदशाक्षरीतत्त्वं मन्त्रसारं मनुप्रियम्।
सर्वतत्त्वमयं पुण्यं महापातकनाशनम्॥
सर्वसिद्धिप्रदं लोके सर्वरोगनिवर्हणम्।
सर्वोत्पातप्रशमनं ग्रहशान्तिकरं परम्॥
सर्वदेवप्रियं प्राज्यं सर्वशत्रुभयापहम्।
सर्वदुःखौघशमनं सर्वशोकविनाशनम्॥
पठेद्वा पाठयेन्नाम्नां सहस्रं शक्तिसंनिधौ।
दूरादेव पलायन्ते विपदः शत्रुभीतयः॥
राक्षसा भूतवेतालाः पन्नगा हरिणद्विषः।
पठनाद्विद्रवन्त्याशु महाकालादिव प्रजाः॥
श्रवणात्पातकं नश्येच्छ्रावयेद्यः स भाग्यवान्।
(नानाविधानि भोगानि संभुज्य पृथिवीवले॥)
गमिष्यति परां भूमिं त्वरितं नात्र संशयः।
अश्वमेधसहस्रस्य वाजिपेयस्य कोटयः।
गङ्गास्नानसहस्रस्य चान्द्रायणायुतस्य च॥
तप्तकृच्छ्रैकलक्षस्य राजसूयस्य कोटयः।
सहस्रनामपाठस्य कलां नार्धन्ति षोडशीम्॥
सर्वसिद्धीश्वरं साध्यं राज्ञीनामसहस्रकम्।
मन्त्रगर्भं पठेद्यस्तु राज्यकामो महेश्वरि॥
वर्षमेकं शतावर्तं महाचीनक्रमाकुलः।
शक्तिपूजापरो रात्रौ स लभेद्राज्यमीश्वरि॥
पुत्रकामी पठेत् सायं चिताभस्मानुलेपनः।
दिगम्बरो मुक्तकेशः शतावर्तं महेश्वरि॥
श्मशाने तु लभेत् पुत्रं साक्षाद्वैश्रवणोपमम्।

परदारार्चनरतो भगबिम्बं स्मरन् सुधीः।।
पठेन्नामसहस्त्रं तु वसुकामी लभेद् धनम्।
रवौ वारत्रयं देवि पठेन्नामसहस्त्रकम्।।
मृदुविष्टरनिर्विष्टः क्षीरपानपरायणः।
स्वप्ने सिंहासनां राज्ञीं वरदां भुवि पश्यति।।
क्षीरचर्वणसन्तृप्तो वीरपानरसाकुलः।
यः पठेत् परया भक्तया राज्ञीनामसहस्त्रकम्।।
स सद्यो मुच्यते घोरान्महापातकजाद्भयात्।
यः पठेत साधको भक्तया शक्तिवक्षःकृतासनः।।
शुक्रोत्तरणकाले तु तस्य हस्तेऽष्टसिद्धयः।
यः पठेन्निशि चक्राग्रे परस्त्रीध्यानतत्परः।।
सुरासवरसानन्दी स लभेत् संयुगे जयम्।
इदं नामसहस्त्रं तु सर्वमन्त्रमयं शिवे।।
भूर्जत्वचि लिखेद्रात्रौ चक्रार्चनसमागमे।
अष्टगन्धेन पूतेन वेष्टयेत् स्वर्णपत्रके।।
धारयेत् कण्ठदेशे तु सर्वासिद्धिः प्रजायते।
यो धारयेन्महारक्षां सर्वदेवातिदुर्लभाम्।।
रणे राजकुले द्यूते चौररोगाद्युपद्रवे।
स प्राप्नोति जयं सद्यः साधको वीरनायकः।।
श्रीचक्रं पूजयेद्यस्तु धारयेद्वर्म मस्तके।
पठेन्नामसहस्त्रं तु स्तोत्रं मन्त्रात्मकं तथा।।
किं किं न लभते कामं देवानामपि दुर्लभम्।
सुरापानं ततः संविच्चर्वणं मीनमांसकम्।।
नवकन्यासमायोगो मुद्रा वीणारवः प्रिये।
सत्सङ्गो गुरुसांनिध्यं राज्ञीश्रीचक्रमग्रतः।।

यस्य देवि स एव स्याद्योगी ब्रह्मविदीश्वरः।
इदं रहस्यं परमं भक्तया तव मयोदितम्॥
अप्रकाश्यमदातव्यं न देयं यस्य कस्याचित्।
अन्यशिष्याय दुष्टाय दुर्जनाय दुरात्मने॥
गुरुभक्तिविहीनाय सुरास्त्रीनिन्दकाय च।
नास्तिकाय कुशीलाय न देयं तत्त्वदर्शिभिः॥
देयं शिष्याय शान्ताय भक्तायाद्वैतवादिने।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च॥
दत्त्वा भोगापवर्गत्वं लभेत् साधकसत्तमः।
इति नामसहस्त्रं तु राज्याः शिवमुखोदितम्।
अत्यन्तदुर्लभं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥
इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये।
श्रीमहाराज्ञीसहस्त्रनामकम्॥

श्रीमहाराज्ञीस्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच।

अधुना कथयिष्यामि स्तोत्रराजं परात्मकम्।
मूलमन्त्रमयं दिव्यं तत्त्वभूतं मनोहरम्।।
राज्ञीप्रियं पापहरं लक्षपूजाफलप्रदम्।
जपलक्षसमं स्तोत्रं ध्यानकोटिसमं प्रिये।।
राज्ञीस्तोत्रस्य देवेशि ब्रह्मा ऋषिरुदाहृतः।
गायत्रं छन्द इत्युक्तं श्रीराज्ञी देवतेरिता।।
माया बीजं परा शक्तिः कामः कीलकमीश्वरि।
भोगापवर्गसिद्ध्यार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः।।

अस्य श्रीमहाराज्ञीस्तवराजमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रं छन्दः श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता ह्लींबीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं भोगापवर्गसिद्ध्ये विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, गायत्रं छन्दसे नमो मुखे, श्रीराज्ञीभूतेश्वरीदेवतायै नमो हृदि, ह्लींबीजाय नमो नाभौ, सौः शक्तये नमो गुह्ये, क्लींकीलकाय नमः पादयोः, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ध्यानम्–

उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरि गतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारबिन्दाम्।।
तारमिन्दुकलिकावतंसितं
वेदसागरमणिं मनोहरम्
यो जपेदुषसि रत्नमालया
राज्यमाशु लभते स साधकः।।

भूतिमिन्दुनवबिम्ब मण्डितां
नादबिन्दुललितां जपेत्तु यः।
वारमेकमुरुवारणस्थितो
जेष्यति स्मयमयानरीन् रणे।।
रमां जपेद्यो भुवनेशि मन्त्री
त्वन्मन्त्रमध्ये मदनोपतप्तः।
रम्भां समालिङ्ग्य विमानचारी
लीलां भजेन्नन्दनवाटिकायाम्।।
वह्निबीजमणिमादिसिद्धिदं
बिन्दुबिम्बशशिखण्डमण्डितम्।
यो जपेन्निशि धनाभिलाषवान्
स क्षणाद्भवति वित्तदोपमः।।
कामराजममराभिवन्दितो
यो जपेन्निधुवनेऽक्षमालया।
तस्य यान्ति वशतां सुराङ्गनाः
किं पुनर्जगति भूभृदङ्गनाः।।
शक्तिं भक्तया यो जपेच्छक्तिपूजा-
काले कालीपादपद्मार्पितान्तः
नक्तं तस्य स्मेरवक्त्रा घृताची
वेश्या वश्या स्वर्गता वा शची च।।
भगगवत्यै तथा राज्यै नाममन्त्रमिति स्मरेत्
यो देवि तस्य वश्याः स्युर्भैरवस्याष्टसिद्धयः।।
मायार्णमन्ते यदि साधकेन्द्रो
जपेन्महेशानि शवालयस्थः।

तत्रैव देवीं परमार्थराज्ञीं
पश्येत् स सद्यो वरसिद्धिदात्रीम्।।
ठद्वयं यदि जपेन्निशाक्षये
क्षीरभुक् सुतटिनीतटस्थितः।
जिष्णुविष्णुकमलासनेश्वरा
यान्ति देवि वशतां तदा क्षणात्।।
भूगेहवृत्तत्रयनागपत्र-
षडश्रयोन्यश्रकबिन्दुबिम्बे।
निषेदुषीं राजकुलाधिदेवीं
राज्ञीं भजे राजकुलावतंसाम्।।
देवि श्रीभूतधात्रि प्रवरगुणमये निष्कले निर्गुणो मे
माये मातः शरण्ये गिरिवरतनये चिन्मये तत्त्वरूपे।
दुर्गे चण्डि प्रमत्ते त्रिपुरविजयिनि स्मेरवक्त्रे वरेणये
कारुणयाढ्ये प्रशस्ते सुरदितिजनुते राज्ञि त्वं वै प्रसीद।।
इति स्तोत्रं मन्त्रस्फुरणकरुणानन्दनिलयं
पठेद्भक्तया प्रातस्तव गिरिसुते यो निरलसम्।
भवेत् सद्यो भूमौ नृपमुकुटनीराजितपदो
मृतो मुक्तिं मर्त्यस्तव भवनमाप्नोति वरदे।।
इति राज्याः परं तत्त्वं पञ्चाङ्गमखिलं शिवे।
सर्वस्वं च रहस्यं मे सर्वसारस्वतप्रदम।।
आनन्दवर्धनं गुह्यं परमैश्वर्यकारणम्।
भोगापवर्गदं पुण्यं दारिद्र्यभयनाशनम्।।
राज्यप्रदं भक्तिकरं सर्वशत्रुनिवर्हणाम्।
पञ्चाङ्गमखिलं देव्या न वक्तव्यं दुरात्मने।

तव भक्तया मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः।।

श्रीदेव्युवाच।

भगवान् करुणाम्भोधे कीतास्मि भवताधुना।
दास्यस्मि तव भक्तास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो।।
पञ्चाङ्गकथनेनास्या राज्ञ्या देव्या महेश्वर।
भवत्प्रसादाद् देव्यस्मि किमन्यत् कथयामि ते।।

श्रीभैरव उवाच।

इदं रहस्यं पञ्चाङ्गं राज्ञीदेव्या मयेरितम्।
कौलानां सिद्धिदं वामाद्गोपनीयं स्वयोनिवत्।।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये
श्रीमहाराज्ञीस्तोत्रम्।।

